जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 13 संख्याः 263 प्रभात चूरू, गुरुवार 20 जनवरी, 2022 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

जनवरी के महीने में दुनिया के कई भागों में बर्फ गिरती है लेकिन हाल ही में सहारा रेगिस्तान में गिरी बर्फ ने एक बार फिर लोगों को चौंका दिया है। उत्तर पश्चिम अल्जीरिया का एन सैफ्रा शहर तो सोमवार को हिमपात के कारण बर्फ से ढक गया और तापमान माइनस दो डिग्री हो गया। बियालिस सालों में यह पांचवां अवसर है जब इस शहर में बर्फ गिरी है। एन सैफ्रा, जिसे ''गेटवे टु द डैज़र्ट'' भी कहते हैं, समुद्र के स्तर से 1000 मीटर ऊपर है तथा एटलस की पहाड़ियों से घिरा है। उत्तरी अफ्रीका का अधिकांश भाग सहारा रेगिस्तान के दायरे में आता है। गत 500 वर्षों में इस क्षेत्र के तापमान और नमी के स्तर में कई बार बदलाव हुआ है और संभवतया एक बार फिर यह क्षेत्र ऐसे ही किसी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा प्रतीत होता है। इस माह के आरंभ में सऊदी अरेबिया के उत्तर पश्चिमी शहर तबुक में भी बारिश और हिमपात हुआ था तथा जबाल अल लाज़ पहाड़ी का शिखर पूरी तरह से बर्फ से ढक गया था।

ओ.बी.सी. नेताओं के पलायन का सामना करने के लिये अन्य राज्यों से ओ.बी.सी. नेता आयातित होंगे

भाजपा यू.पी. में चुनाव प्रचार के लिये मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, पूर्व मु.मंत्री उमा भारती, केन्द्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल को बुलायेगी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश में स्वामी प्रसाद मौर्य और दारा सिंह चव्हाण सहित ओ.बी.सी. वर्ग के दर्जनों मंत्रियों और विधायकों के पार्टी छोड़ने की क्षतिपूर्ति करने के लिए एक डैमेज कंट्रोल के तहत ओ.बी.सी. वर्ग के प्रमुख चेहरों को चुनाव प्रचार के लिए अन्य राज्यों से बुला रही है।

- भाजपा बिहार, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखण्ड के ओ.बी.सी. व दलित समाज के नेताओं को भी लायेगी यू.पी. में चुनाव प्रचार के लिये।
- पार्टी यू.पी. के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का सघन चुनाव प्रचार कार्यक्रम बना रही है यू.पी. में।
- अपना दल की अनुप्रिया व निषाद समाज के संजय निषाद भी चुनाव प्रचार में झोंके जायेंगे।

जिन नेताओं को उत्तर प्रदेश में चुनाव प्रचार के लिए बुलाया गया है, उनमें मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और उनकी पूर्ववर्ती उमा भारती शामिल हैं। मध्य प्रदेश से ताल्लुक रखने वाले केन्द्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल भी उत्तर प्रदेश में चुनाव प्रचार करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और झारखण्ड के प्रमुख ओ.बी.सी. व दलित नेताओं को भी उत्तर प्रदेश के चुनाव प्रचार में बुलाने जा रही है। भाजपा सूत्रों ने बताया कि पार्टी इस माह की शुरुआत से ही भाजपा छोड़कर गए कई ओ.बी.सी. नेताओं की कमी की पूर्ति करने की कोशिश कर रही है।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जो भाजपा में ओ.बी.सी. के प्रमुख नेता हैं, अपने स्वयं के चुनाव क्षेत्र पर ध्यान देने के अतिरिक्त पूरे राज्य को भी अपना समय देंगे। अन्य ओ.बी.सी. नेता जो गत वर्ष हुये विस्तार में सरकार में लिये गये थे, भी पूरे राज्य में प्रचार करेंगे। इनमें पंकज चौधरी, बी.एल. वर्मा तथा अपना दल की अनुप्रिया पटेल शामिल हैं। निषाद पार्टी के संजय निषाद भी अपने समुदाय के मतदाताओं को लामबंद करेंगे।

भाजपा की योजना रविवार से व्यापक स्तर पर प्रचार-अभियान शुरू करने की है जिसके अन्तर्गत, सभी वरिष्ठ नेतागण प्रत्येक जिले में भेजे जायेंगे। पार्टी सूत्रों ने कहा कि प्रत्येक जिले के दौरे के प्रचार अभियान को अंतिम रूप देने वालों में गृह मंत्री अमित शाह तथा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी शामिल थे।

ममता का यू.पी. अभियान फ्लॉप?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। क्या उत्तर प्रदेश की राजनीति में ममता बनर्जी की सक्रियता भारी पड़ेगी तथा क्या इससे उत्तर प्रदेश में किसी उम्मीदवार की संभावनाएं बाधित हो सकेंगी। ममता बनर्जी के धुर-विरोधी शुभेन्दु अधिकारी तो कम से कम यही सोचते हैं।

अधिकारी ने उत्तर प्रदेश के संदर्भ में एक मजबूत मुद्दा उछाला है तथा कहा है कि आम धारणा यह है कि वे ''सनातनियों'' के खिलाफ हैं तथा केवल कट्टर साम्प्रदायिकता में विश्वास रखती हैं। यह चीज अखिलेश यादव की सोच के खिलाफ पड़ती है, जो उत्तर प्रदेश में सभी लोगों को अपने साथ

- फ्लॉप होने का कारण, अखिलेश व ममता की रीति-नीतियों में सामंजस्य नहीं बैठना।

लेकर चलने की छवि को प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं।

प्रथम दृष्टया, उनके अनुभव को भी कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है। जहाँ ममता बनर्जी ने अपना रुतबा बढ़ाने के लिये अन्य पार्टियों से अलग हुये गुटों को फुसलाने तथा उन्हें प्रलोभन देने का रास्ता चुना था, जबकि अखिलेश यादव इसका ठीक उल्टा कर रहे हैं।

बाहर आ रही जानकारियों के अनुसार, दूसरी पार्टियों से सपा में शामिल होने वालों को पार्टी-टिकट देकर भी उपकृत नहीं किया जा रहा है। ममता बनर्जी ने चुनावाधीन राज्यों में अपनी हैसियत बढ़ाने के लिये, कांग्रेस

(शेष पृष्ठ 7पर)

करोना वायरस, चेचक की भांति गायब नहीं होगा

वाइट हाऊस के स्वास्थ्य सलाहकार डॉ. एंथनी फाउची ने कहा, अब तक मानव जाति केवल एक संक्रामक वायरस, चेचक को ही सदा के लिये हरा पायी है, पर करोना वायरस के साथ ऐसा होता नहीं दिखता

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। वर्ल्ड हैल्थ ऑगनाइजेशन (डब्ल्यु.एच.ओ.) महानिदेशक टैड्रॉस एदानॉम गैब्रेसस का कहना है: लगता है कि कुछ देशों में कोविड-19 के केस पीक पर पहुंच गए हैं, जिससे यह उम्मीद बंधी है कि संक्रमण की इस नवीनतम लहर का सबसे बुरा समय गुजर चुका है, लेकिन कोई भी देश अभी इसकी अनिश्चितताओं से बाहर नहीं निकला है।''

- डब्ल्यु.एच.ओ. के प्रमुख गेब्रिएसस ने भी डॉ. फाउची के विचारों का समर्थन किया कि, करोना वायरस का खतरा अभी बरकरार है, शायद कभी खत्म नहीं होगा।
- डॉ. फाउची का यह भी कहना है कि, दुनिया के वैज्ञानिक अभी कुछ नहीं कह सकते कि, करोना वायरस का भविष्य क्या होगा और हमें करोना वायरस के बारे में अज्ञानता को स्वीकार करना चाहिये।
- वैक्सिनेशन, ओमक्रॉन के इलाज के रूप में उतना सफल न हो जितना कि करोना वायरस के मामले में हुआ था, पर वैक्सिनेशन गंभीर बीमारी और अन्ततोगत्वा मृत्यु को रोकने में जरूर कामयाब होता है।

वाइट हाऊस के शीर्ष मैडिकल सलाहकार डॉ. एंटनी फाउची कहते हैं कि ''करोना वायरस की वैश्विक महामारी का खात्मा इस वायरस के उन्मूलन से नहीं होगा। इसके बजाए इस वायरस का अपेक्षाकृत एक कम विध्वंसकारी एवं खतरनाक स्ट्रेन किसी क्षेत्र विशेष को अपनी गिरफ्त में लेगा।''

टैड्रोस कहते हैं कि ''ओमक्रॉन औसतन एक कम खतरनाक वायरस है, लेकिन इसके संक्रमण से होने वाली बीमारी को साधारण मानने की धारणा भ्रामक और इसकी गंभीर प्रकृति का अंदाजा ना लगाने वाली हो सकती है तथा ऐसा मानने से और लोगों की जाने जा सकती हैं।''

फाउची कहते हैं कि ''यदि आप संक्रामक रोगों के इतिहास पर गौर करें तो हमने अब तक मनुष्य के एक ही संक्रामक रोग का खात्मा किया है और वह है स्मॉल पॉक्स। ऐसा इस वायरस के साथ नहीं होने वाला है।''

यह उन हस्तियों के विचार हैं जो वैज्ञानिक ज्ञान और विशेषज्ञता के आधार पर बात करते हैं।

अत: ऐसे अनगिनत लोग, जो यह मानते हैं कि ओमक्रॉन हमें लापरवाही बरतने की अनुमति देता है, वे सावधान हो जाएं!

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के दावोस एजेण्डा में बोलते हुए डॉ. फाउची ने इस पर जोर दिया कि वैज्ञानिक यह नहीं जानते कि वास्तव में यह वैश्विक महामारी कब समाप्त होगी और इसकी गंभीरता के प्रति सावचेत होना महत्वपूर्ण है।'' तथापि किसी क्षेत्र विशेष

(शेष पृष्ठ 7पर)

भाजपा के स्टार प्रचारक

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के प्रथम चरण के लिए यहाँ बुधवार को जारी की गई 30 स्टार प्रचारकों की सूची में विवादित केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी तथा उनके सांसद पुत्र वरूण गांधी के नाम शामिल नहीं हैं। ज्ञातव्य है कि टेनी के पुत्र ने अक्टूबर में लखीमपुर खीरी में

- पार्टी द्वारा यू.पी. चुनाव के प्रथम चरण में स्टार प्रचारकों की सूची में टेनी, मेनका व वरूण गांधी का नाम नहीं।

कथित रूप से कुछ किसानों को अपनी कार से कुचल दिया था तथा वे इस समय वह जेल में है तथा वरूण गांधी किसानों के समर्थन में मुखर रहे थे।

स्टार प्रचारकों की इस सूची में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा तथा मुख्यमंत्री योगी के अलावा केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, स्मृति ईरानी, मुख्तार अब्बास नकवी, राधा मोहन सिंह,

(शेष पृष्ठ 7पर)

राजस्थान हाई कोर्ट का फैसला: भेदभाव नहीं किया जा सकता

बेटी भी अनुकंपा नौकरी की हकदार है

जोधपुर, 19 जनवरी (कासं)। पिता की मौत के बाद शादीशुदा बेटी को नौकरी देने के मामले में राजस्थान उच्च न्यायालय ने एक बड़ा फैसला सुनाया व बेटी में भेदभाव नहीं किया जा सकता है। दरअसल, जैसलमेर निवासी शोभादेवी ने एक याचिका दायर कर कहा था कि उसके पिता गणपत सिंह

- हाई कोर्ट जज पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने कहा, अब यह सोच बदलने का समय आ गया है कि, शादीशुदा बेटी अपने पिता के बजाय पति के घर की जिम्मेदारी है। शादीशुदा बेटे व बेटी में भेदभाव नहीं किया जा सकता।
- जज भाटी ने कहा कि, बूढ़े माता-पिता की जिम्मेदारी बेटे व बेटी की एक समान ही होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वो शादीशुदा है या नहीं। ऐसे में पिता के स्थान पर मृतक का आश्रित मान नौकरी देने में भी भेदभाव नहीं किया जा सकता।

है। हाईकोर्ट जज पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने अपने फैसले में कहा कि अब यह सोच बदलने का समय आ गया है कि शादीशुदा बेटी अपने पिता के बजाय पति के घर की जिम्मेदारी है। शादीशुदा बेटे जोधपुर डिस्कॉम में लाइनमैन के पद पर कार्यरत थे। 5 नवम्बर 2016 को गणपत सिंह का निधन हो गया। उनके परिवार में पत्नी शांतिदेवी व पुत्री शोभा

(शेष पृष्ठ 7पर)

अब अखिलेश ने भी सौगातों की बारिश की

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को ट्वीट किया कि अगर उनकी पार्टी सत्ता में आती है तो उनकी पूर्ववर्ती सरकार के दौरान, गरीब और जरूरतमंद महिलाओं के लिये स्वीकृत की गई 6000 रू. प्रतिवर्ष की पेंशन को तीन गुना अर्थात 18000 रू. वार्षिक कर दिया जायेगा।

- उन्होंने ट्वीट करके पैंशन तिगुनी करने तथा 300 यूनिट बिजली ''फ्री'' देने का वादा किया।

इसका अर्थ यह हुआ कि उनकी सरकार बनने पर इन महिलाओं के बैंक खातों में 1500 रू. प्रति माह जाना शुरू हो जायेंगे।

एक दिन पूर्व, यानी मंगलवार को उन्होंने प्रत्येक परिवार को 300 यूनिट बिजली मुफ्त देने की घोषणा की थी। यादव ने ट्वीट करके सभी परिवारों से कहा था कि वे अपने नाम दर्ज करा दें।

उन्होंने सरकार बनाने के लिये सपा को खुला समर्थन देने का भी आव्हान किया था।

यू.पी. चुनाव प्रचार में पहुंचे सचिन पायलट

''किसानों को कुचलने वाले किस मुंह से समर्थन मांगेंगे,'' पायलट ने बनारस में आयोजित प्रैस कॉन्फ्रैंस में भाजपा पर कटाक्ष किया

वाराणसी, 19 जनवरी । यूपी चुनाव प्रचार में पहुंचे राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने किसानों के मुद्दों पर केंद्र और यूपी सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि बीजेपी राज में किसानों की आमदनी तो दोगुनी नहीं हुई लेकिन अन्नदाता का दर्द सौ गुना हो गया। अन्नदाता के साथ जिस तरह अत्याचार किया गया और उनके मान सम्मान को जिस तरह से ठेस पहुंचाई गई, उसका जवाब भाजपा को देना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि आशंका इस बात की है कि चुनाव जैसे ही खत्म होंगे, केंद्र सरकार बैकडोर से कृषि कानून लागू करने का प्रयास करेगी।

- पूर्व उप मुख्यमंत्री ने कहा, कि यू.पी. पुलिस और यू.पी. सरकार कानून के दायरे से बाहर जाकर काम करती है। यहां के सी.एम. हिन्दू-मुस्लिम की बात करते हैं और 80 बनाम 20 की बात कहकर लोगों को बांटने वाले बयान देते हैं।
- यू.पी. चुनाव में कांग्रेस की सीटों के सवाल पर पायलट ने कहा कि नतीजे चौंकाने वाले होंगे।

मीडिया से बात करते हुए पायलट ने कहा कि ''देश में किसान कर्ज में डूबा है।

खाद-बीज की लागत बढ़ गई है। वो लोग जो यह कहते थे कि किसान की आय दोगुनी करेंगे, उन्होंने उसका उल्टा किया।

केंद्रीय मंत्री के बेटे ने किसानों को कुचल दिया, लेकिन आज तक कार्रवाई नहीं हुई। किसानों को दबाने और उन्हें कुचलने का काम करेंगे तो किस मुंह से उनसे समर्थन की मांग करेंगे।''

उन्होंने कहा कि योगी सरकार को पांच साल और केंद्र सरकार को सात साल हो गए।

इन्होंने जिस भी तबके को विश्वास में लेकर उसके वोट लिए, वह हर तबका आज ठगा सा महसूस कर रहा है।

किसी वर्ग को राहत नहीं दी। बीजेपी सरकार ने चंद नजदीकी लोगों के लाखों करोड़ के कर्ज माफ कर दिए, लेकिन किसानों को राहत नहीं दी गई। पूर्व उप मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी पुलिस और यूपी सरकार कानून के दायरे से बाहर जाकर काम करते हैं । यहां के सीएम हिंदू-मुस्लिम की बात करते हैं और 80 बनाम 20 की बात कहकर लोगों को बांटने वाले बयान देते हैं।

यूपी चुनाव में कांग्रेस की सीटों के सवाल पर पायलट ने कहा कि नतीजे चौंकाने वाले होंगे।

'विधायकों का छः माह से ज्यादा निष्कासन उचित नहीं'

-जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 19 जनवरी। सर्वोच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र के उन एक दर्जन विधायकों के एक वर्ष के निलम्बन के प्रकरण में अपने फैसले को सुरक्षित रख लिया है, जिन पर कथित रूप से प्रीसाइडिंग ऑफिसर के साथ दुर्व्यवहार करने के आरोप हैं। अदालत ने पार्टियों से कहा है कि वे एक सप्ताह के अन्दर अपना लिखित पक्ष प्रस्तुत करें।

अधिकांश विधायकों की ओर से प्रस्तुत हुये वरिष्ठ

- सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र विधानसभा में 12 भाजपा विधायकों को साल भर के लिये निष्कासित करने पर निर्णय सुरक्षित किया, पर टिप्पणी से मानस स्पष्ट किया।

वकील मुकुल रोहतगी ने कहा कि एक वर्ष का निलम्बन घोर अतार्किक हैं, जबकि एक विधायक की ओर से प्रस्तुत वरिष्ठ वकील महेश जेठमलानी ने दलील दी कि निलम्बन तो निष्कासन से भी ज्यादा बुरा है क्योंकि इससे तो निर्वाचकों के अधिकार प्रभावित होते हैं।

मंगलवार को हुई सुनवाई में न्यायमूर्ति ए.एम.

(शेष पृष्ठ 7पर)

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

सड़क दुर्घटनाएं

यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति राजस्थान में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए परिवहन विभाग ने अपना नाम परिवहन विभाग और सड़क सुरक्षा जरूर रख लिया है मगर प्रदेश में आये दिन सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार बढ़ता ही जा रहा है। राजस्थान में प्रति वर्ष तीस हजार से अधिक सड़क दुर्घटनाएं हो रही है जिनमें युवा सर्वाधिक शिकार हो रहे हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में इन दिनों सड़क हादसों के बादल मंडरा रहे है। प्रदेश की राजधानी हादसों का मुख्य केंद्र बनी हुई है। सड़क हादसों में जयपुर पूरे भारत में अग्रणी है। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक प्रतिदिन इसकी चपेट में आ रहे हैं। यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। दो पहिया हो या चार पहिया किसी को भी जिंदगी की परवाह नहीं है। एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। यातायात नियमों की सरेआम धज्जियाँ उड़ रही है। नियमों की पालना नहीं होने से दुर्घटनाओं के अम्बार लग रहे है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं।

राजधानी के यातायात मार्ग तो जाने-अनजाने मौत के मार्ग बन गये हैं। सबसे बुरी स्थिति टोंक रोड पर बी-2 बाईपास, शिवदासपुरा, पावटा, जे.एल.एन. मार्ग पर ओ.टी.एस. चैराहा, जगतपुरा पुलिया, झालाना मार्ग, अजमेर रोड, न्यू सांगानेर रोड, सिरसी रोड, भांकरोटा, राजापार्क में गोविन्द मार्ग, अजमेरी गेट, विश्वविद्यालय मार्ग, घाट की गुणी की आदि की है।

प्रदेश में सड़कों की बदहाल स्थिति में अतिक्रमण, अवैध कब्जों और यातायात की बिगड़ी व्यवस्था ने कोढ़ में खाज का काम किया है। विशेष कर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में सड़कें अतिक्रमण के कारण सिकुड़ कर रह गई हैं। राजधानी जयपुर सहित इस समय प्रदेश के सभी मेट्रो सिटी यातायात की सुचारू व्यवस्था नहीं होने से आम आदमी परेशानी को झेल रहा है। राजधानी में परकोटे की स्थिति सबसे खराब है। परकोटे के मुख्य बाजारों किशनपोल, त्रिपोलिया, जौहरी बाजार, रामगंज बाजार, छोटी-बड़ी चैपड़ की स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

वाहनों के बढ़ जाने के कारण और सड़कों पर अतिक्रमण के फलस्वरूप यहाँ ट्रैफिक की व्यवस्था बुरी तरह बिगड़ गई है। अतिक्रमण और अवैध कब्जों ने इन बाजारों की शांति का जैसे किसी ने हरण कर लिया है। ऑपरेशन पिंक के दौरान अवैध कब्जे और अतिक्रमण को हटाकर आम नागरिक को राहत दी गई थी मगर अब फिर से अतिक्रमण की पुरानी स्थिति बहाल होने से आम आदमी आहत है। एक बार फिर राजधानी अतिक्रमणकारियों के कब्जे में है। लोग चार पहिया वाहन लेकर जाने में डरने लगे हैं।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो।

सड़क दुर्घटनाओं के ग्राफ में तेजी से वृद्धि हो रही है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं। दुर्घटनाओं में मौतें और घायल होने के समाचार प्रतिदिन पढ़ने और देखने को मिल रहे हैं। भारत में सबसे अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं। भारत में हर साल लगभग 1.4 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जबकि लाखों की संख्या में लोग घायल हो जाते हैं और हजारों जीवन भर के लिए विकलांग भी हो जाते हैं। इन दुर्घटनओं में होने वाली मौतों में 33 प्रतिशत 15 से 24 साल के आयु वर्ग के युवा हैं।

सड़क हादसों के मामलों में राजस्थान का देश में आठवां तथा इन हादसों में मरने वालों की संख्या के लिहाज से पांचवें स्थान पर है। देश में सड़क हादसों में रोजाना 415 लोगों की जान जाती है। हर साल 4.50 करोड़ सड़क हादसे होते हैं। इनमें डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है और साढ़े चार लाख लोग घायल होते हैं। जानकारों का कहना है सड़क हादसों में होने वाली मौतों की तादाद सरकारी आंकड़ों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। दूर-दराज के इलाकों में होने वाले हादसों की अक्सर खबर ही नहीं मिलती। देश में लॉकडाउन के दौरान सड़क हादसों में रिकॉर्ड कमी दर्ज की गई थी, पर अनलॉक के बाद से दोबारा सड़क हादसों में तेजी आ गई है।

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, आम जनता में खासतौर से नये आयु वर्ग के लोगों में अधिक जागरुकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरुकता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा गया है। सड़क दुर्घटना, चोट और मृत्यु आज के दिनों में बहुत आम हो चला है। सड़क पर ऐसी दुर्घटनाओं की मुख्य वजह लोगों द्वारा सड़क यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा उपायों की अनदेखी है।

गलत दिशा में गाड़ी चलाना, सड़क सुरक्षा नियमों और उपायों में कमी, तेज गति, नशे में गाड़ी चलाने आदि। सड़क हादसों की संख्या को घटाने के लिये उनकी सुरक्षा के लिये सभी सड़क का इस्तेमाल करने वालों के लिये सरकार ने विभिन्न प्रकार के सड़क यातायात और सड़क सुरक्षा नियम बनाये हैं। हमें उन सभी नियमों और नियंत्रकों का पालन करना चाहिये जैसे रक्षात्मक चालन की क्रिया, सुरक्षा उपायों का इस्तेमाल, गति सीमा को ठीक बनायें रखना, सड़क पर बने निशानों को समझना आदि।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो तथा यातायात और ट्रैफिक की वर्तमान स्थिति में जनभावनाओं के अनुरूप सुधार हो। आम आदमी को राहत प्रदान करने के लिए निर्माण कार्यों में पारदर्शिता का होना अत्यावश्यक है।

–अतिथि संपादक
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 20 जनवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, अश्लेषा नक्षत्र प्रातः 8:24 तक, आयुष्मान योग दिन 3:44 तक, गर करण प्रातः 8:05 तक, चन्द्रमा आज 8:24 पर सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा रात्रि 8:48 से शुक्रवार प्रातः 8:52 तक रहेगी। सायन कुम्भ में शनि प्रवेश प्रातः 8:09 पर करेगा। आज द्वितीया तिथि की वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:18 से 12:38 तक, लाभ-अमृत 12:38 से 3:16 तक, शुभ 4:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:55

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों के सहयोग मिल सकता है।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यक्तिगत व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

सामाजिक न्याय प्राप्ति में बाधाऐं

भारत में सामाजिक न्याय की अवधारणा पर पिछले कुछ वर्षों से मंडरा रहे खतरों ने चिन्तित कर रखा है। ये खतरे सामाजिक न्याय के विरोधियों की ओर से भी हैं और आंतरिक भी हैं। सबसे बड़ा खतरा इस अवधारणा के संकुचन का है। सामाजिक न्याय का अर्थ उन सभी व्यक्तियों को जाति, नस्ल, रंग, लिंग, धर्म आदि भिन्नताओं के कारणों से शक्ति के स्त्रोतों अर्थात आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक आदि से दूर धकेले गये तबकों को न्याय उपलब्ध करवाना है, जिन्हें किसी भी प्रकार के वर्चस्व के कारण अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। सामाजिक न्याय अपने मूल रूप में विशेषाधिकार आधारित योग्यतावाद के विरुद्ध एक निरन्तर संघर्ष है। जीवन के हर क्षेत्र में सभी को समान अवसर की उपलब्धता के लिए संघर्ष व सामाजिक विविधता का सिद्धान्त-इस संघर्ष के अस्त्र-शस्त्र हैं। सामाजिक न्याय का अर्थ आज लोग वंचित तबकों को राजनीति में आरक्षण से चुनाव जीत लेना एवं सरकारी व निजी क्षेत्रों की नौकरियों में आरक्षण से लगाते हैं। इसे ही सामाजिक न्याय की लड़ाई का अन्तिम छोर मानते हैं।

सामाजिक न्याय का सपना तो सभी प्रकार के भेदभाव से रहित समाज का सपना है। इस अर्थ में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, सन्त कबीर एवं काल-मार्क्स की भावनाओं का विस्तार है। किन्तु भारतीय समाज की वर्चस्ववादी शक्तियाँ चाहती हैं कि यह लड़ाई इसी संकुचित रूप में सिमटी रहे और उनके अधीन विभिन्न प्रकोष्टों में चलती रहे। भारत में सामाजिक न्याय का संघर्ष मुख्य रूप से द्विजों और शूद्रों-अतिशूद्रों व आदिवासियों के बीच है। जिसमें द्विज अल्पसंख्यक है, जबकि शूद्र-अतिशूद्र आदिवासी बहुसंख्यक हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपने संगठन में ओबीसी प्रकोष्ठ, दलित-प्रकोष्ठ, आदिवासी प्रकोष्ठ आदि रखती हैं। यह बहुजन तबकों के संघर्ष को प्रकोष्ठों में बन्द करने का तरीका है। जब बहुजन समुदाय उनके प्रकोष्ठों में बन्द हो जाते हैं, तो स्वतः ही अल्पसंख्यक द्विज भारतीय राजनीति की मुख्यधारा बन जाते हैं।

बहुजन शब्द 'बुद्ध' के सूत्र वाक्यक 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' से आया है। इसका अर्थ है, अधिकतम लोगों के हित के लिए हो। कोई किसी पर वर्चस्व स्थापित ना करे। जबकि बहुसंख्यकवाद का अर्थ है, बहुसंख्यक लोगों का अल्प संख्यकों पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक वर्चस्व व उनकी संस्कृति का हरण। हिन्दुत्व की राजनीति अपने मूल रूप में यही करने की कोशिश करती है। हालांकि हिन्दुस्तान में वास्तव में हिन्दुत्ववाद से अधिक मजबूत ब्राह्मणवाद की राजनीति रही है। जो कि वास्तव में अल्पसंख्यकवाद है, ना कि बहुसंख्यकवाद। सामाजिक न्याय की अवधारणा में हमें दोनों अतियों से बचना होगा। इसे उस अंतिम समुदाय और अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचाना होगा जिसे किसी कारण से वंचना झेलनी पड़ी है।

विश्व के सबसे अमीर लोगों की सूची में भारतीयों की संख्या निरन्तर बढती जा रही है जो कई वर्षों से अखबारों एवं मीडिया की सुर्खिया बन रही हैं। किन्तु भारत के अमीर लोगों की सूची में ना कोई ओबीसी है, ना कोई दलित है, ना कोई आदिवासी है और ना ही कोई मुसलमान। दलित चैम्बर ऑफ कॉमर्स (डिक्की) के उद्योगपतियों की हैसियत इनकी तुलना में कुछ भी नहीं है। वहां तो वे पहाड़ के नीचे खड़े ऊंट की तरह ही दिखेंगे। बहुजन समुदाय के पास इतनी राजनीतिक जीतों के बावजूद भी किसी व्यक्ति के पास कोई अखबार या टी.वी. चैनल नहीं है जिसे 'मुख्यधारा' कहा जा सके। इस बड़े सवाल का उत्तर है कि बहुजन समाज के किसी व्यक्ति की इतनी हैसियत नहीं है, जिससे 'मुख्यधारा' के अखबारों व टी.वी. चैनलों का मुकाबला कर सकें। फिलहाल इस मामले में हमें भारत में 'बहुजन डायवर्सिटी मिशन' के संस्थापक एच.एल. दुषाद से सहमत होना होगा कि सत्ता के सभी केन्द्रों और सभी प्रकार के संसाधनों के मालिकाना हक में सामाजिक विविधता ही सामाजिक न्याय का कारगर उपाय है। आरक्षण उस दिशा में चलने के लिये जरूरी शुरूआती कदम है। लेकिन जरूरत यह है कि हम पहली मंजिल पर ही ना रुक जावें बल्कि आगे के रास्तों पर भी नजर रखें।

सामाजिक न्याय प्राप्ति की त्रासदी के रूप में देश में वर्ण व्यवस्था द्वारा भारतीय समाज सदियों से परिचालित होता रहा है। वह व्यवस्था दुनिया की सर्वाधिक अन्यायकारी व्यवस्था है और इसी के कारण देश में सामाजिक अन्याय का सबसे शर्मनाक अध्याय लिखा गया है। शक्ति के स्त्रोंतों के असमान बंटवारे की नीति दूरगामी उद्देश्य से विदेशी मूल के मनीषियों (आर्यों) द्वारा जारी रखी। इसमें अध्ययन-अध्यापन, पौरोहित्य, राज्य संचालन, सैन्य वृत्ति, व्यवसाय एवं वाणिज्यिक इत्यादि के अधिकार सिर्फ द्विज वर्ग के अधिकार में रहे। चूंकि इसमें वर्ण एवं जाति व्यवस्था की कठोरता थी। इसीलिए सारे पेशे कर्म/जाति/वर्ण-सूत्र से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। इसी से वर्ण व्यवस्था ने एक आरक्षण व्यवस्था का

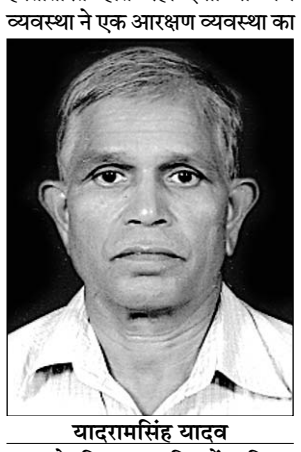

यादरामसिंह यादव

रूप ले लिया था जिसमें दलित-आदिवासी-पिछडे और महिलाओं को शक्ति के सभी स्त्रोतों से पूरी तरह बहिष्कृत करके चिरकाल के लिए पंगु बना दिया गया। जिनके लिए आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व शैक्षणिक गतिविधियाँ, धर्म आधारित विद्वानों से पूरी तरह निषिद्ध थी। यही नहीं लोग उनकी छाया तक से दूर रहते थे, ऐसी स्थिति दुनिया के किसी भी मानव समुदाय की कभी नहीं रही। बाबा साहब अम्बेड़कर द्वारा संविधान में लागू किया गया आरक्षण और कुछ नहीं बल्कि जाति, नस्ल, रंग, लिंग व धर्म आदि के भेदभाव के कारण शक्ति के स्त्रोतों से जबरन वंचित किये गये लोगों को कानून की ताकत से शक्ति के स्त्रोतों पर हक दिलाने का अचूक औजार है जो परिवर्तीकाल में दलित-पिछड़ों को सामाजिक अन्याय से उबारने में काफी कारगर सिद्ध हुआ। जिन दलितों के लिए स्कूल की पढाई करने का कल्पना करना दुष्कर था वे झुण्ड के झुण्ड विधायक, सांसद, कलेक्टर, एस.पी., एस.डी.एम., डॉक्टर, इंजीनियर व न्यायाधीश आदि बनकर देश की मुख्यधारा से जुडने लगे हैं।

अम्बेडकरी आरक्षण का प्रयोग, अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया व आयरलैण्ड ने अपने देशों के जन्मजात वंचितों को शक्ति के स्त्रोतों में उनकी वाजिब हिस्सेदारी देने के लिए किया। जिससे दुनिया के वंचितों को वाजिब हिस्सेदारी मिलने से चमत्कारिक परिवर्तन आया। इसके आधार पर डॉ. अम्बेडकर को सामाजिक न्याय का चैम्पियन कहा जाता है। बहरहाल संविधान द्वारा सामाजिक अन्याय के शिकार बनाये गये लोगों के हित में तरह-तरह के प्रावधान किये जाने से कुछ लोगों के जीवन में चमत्कारिक सुधार जरूर आया है। किन्तु शक्ति के स्त्रोतों पर उनका हक नाम मात्र का ही प्राप्त हुआ है। राजनीति में भले ही हिस्सेदारी हो, किन्तु व्यापार, उद्योग, मीडिया, उच्च शिक्षा आदि से आद भी पूरी तरह बहिष्कृत हैं। आज भी देश के 8-10 प्रतिशत उच्च वर्ण के परम्परागत, विशेषाधिकार युक्त, सुविधा सम्पन्न वर्ग का शक्ति के स्त्रोतों पर 80-85 प्रतिशत कब्जा है। इस कारण आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी जो मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या है जो भारत में अभी भी कायम है।

इस विषय में क्रेडिट सुईसे एजेन्सी की वैश्विक धन बंटवार की जारी छंटवीं रिपोर्ट में लिखा है कि सामाजिक आर्थिक न्याय के सरकारों के तमाम दावों के बावजूद भारत में आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक 2000-2015 के बीच पन्द्रह वर्षों में जो कुल राष्ट्रीय धन पैदा हुआ उसका 81 प्रतिशत शीर्ष की दस फीसदी आबादी विशेषाधिकार युक्त वर्ग के पास गया, शेष 19 प्रतिशत धन 90 फीसदी जनता के पास आया। जिसमें नीचे की आधी 50 प्रतिशत आबादी के पास 4.1 प्रतिशत ही धन आया है। गैर बराबरी अक्सर समाज में राजनीतिक उथल-पुथल की वजह से बनती है। सरकार एवं राजनीतिक पार्टियों को इस समस्या को गंभीरता से लेना चाहिए। यह सवाल सर्वाधिक महत्व का हो गया है कि स्वाधीन भारत में आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक न्याय के विविध उपायों के बावजूद भी सामाजिक अन्याय की धारा आज भी पूर्ववत जारी है। समाज में असहिष्णुता तथा दलित वंचितों, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं आत्महत्या करने के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। बेरोजगारी सिरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है।

इसके लिए बेहतर होगा कि आर्थिक, सामाजिक गैर बराबरी को सबसे गम्भीर समस्या मानते हुए हम सारी ताकत, शक्ति के स्त्रोतों के पुनर्वितरण पर लगायें। दुनिया के अनेक महापुरूषों ने इसी को इंसानियत की सबसे बड़ी समस्या बताया है। बाबा साहब अम्बेडकर ने भी संविधान सभा द्वारा स्वीकार करते समय 25 नवम्बर, 1949 को आर्थिक और सामाजिक विषमता को राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या बताते हुए उसे शीघ्र से शीघ्र समाप्त करने का आह्वान किया था। सामाजिक न्याय प्राप्ति के रास्ते पर आर्थिक व सामाजिक विषमता को समाप्त करने में परम्परागत व्यवस्थाऐं सबसे बड़ी बाधा हैं, उनको समाप्त किये बिना सामाजिक न्याय प्राप्ति का सपना अधूरा रहेगा। दुनिया के तमाम शासक शक्ति के स्त्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का असमान वितरण कराके मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या को जन्म देते रहे हैं। ऐसे में यदि सामाजिक अन्याय को खत्म कर सामाजिक समूहों सवर्णों, ओबीसी/ एससी/एसटी और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लोगों की जनसंख्या के अनुपात में बंटवारा करना चाहिए।

यदि सरकारें इसे नहीं माने एवं लागू नहीं करें तब पूना पैक्ट में 24 सितम्बर, 1932 के दिन दलित-वंचितों से छीने गये पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया जावे तभी हम वैधानिक रूप से अपनी जनसंख्या के अनुपात में आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक क्षेत्रों में संसाधनों का बंटवारा हासिल कर सकते हैं। अन्यथा तो देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को शक्ति के स्त्रोतों से वंचित वर्ग मजबूर होकर धराशाही कर सकते हैं।

–यादरामसिंह यादव,
अधिवक्ता एवं लेखक

सवाई माधोपुर शहर का 259वां स्थापना दिवस करोना गाइडलाइन की पालना करते हुए मनाया

सवाई माधोपुर, (निसं)। सवाई माधोपुर शहर का 259वां स्थापना दिवस कोरोना गाइडलाइन की पूर्ण पालना करते हुए उल्लास के साथ मनाया। स्थापना दिवस के तहत सवाई माधोपुर उत्सव के रूप में दो दिवसीय कार्यक्रमों का आगाज बुधवार को हुआ। उल्लेखनीय है कि 19 जनवरी, 1763 को सवाई माधोपुर शहर का निर्माण शुरू किया गया था।

सवाई माधोपुर उत्सव के तहत रणथंभौर किला स्थित त्रिनेत्र गणेश मंदिर में नगर परिषद सभापति विमलचन्द महावर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी, एसडीएम कपिल शर्मा, सहायक निदेशक पर्यटन मधुसूदन सिंह सहित अन्य अधिकारियों ने त्रिनेत्र गणेश की महाआरती कर सवाई माधोपुर एवं प्रदेश की जनता की खुशहाली की प्रार्थना की।

इसके बाद सुबह 11 बजे नगर परिषद परिसर में सवाई माधोपुर के संस्थापक महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा पर जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला, नगर परिषद सभापति विमलचन्द महावर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. सूरज सिंह नेगी, सवाई माधोपुर एसडीएम कपिल शर्मा, नगर परिषद आयुक्त नवीन भारद्वाज सहित अन्य अधिकारियों एवं जन प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि कर सवाई माधोपुर के संस्थापक को नमन किया।

इस मौके पर जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला ने सवाई माधोपुर को और अधिक स्वच्छ एवं सुंदर शहर बनाने के लिये मिलकर काम करने की बात कही। उन्होंने कहा कि सभी मिलकर सवाई माधोपुर के विकास के लिए कार्य करेंगे।

- **सवाई माधोपुर संस्थापक सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा का माल्यार्पण किया, त्रिनेत्र गणेश की हुई महाआरती**
- **अधिकारियों ने त्रिनेत्र गणेश की आरती कर सवाई माधोपुर एवं प्रदेश व जनता की खुशहाली की प्रार्थना की**

उन्होंने कहा कि कोरोना गाइडलाइन के चलते इस बार सवाई माधोपुर उत्सव को सादगी से मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में जिला कलेक्टर सुरेश कुमार ओला ने सवाई माधोपुर के विकास के लिए उनके मन में चल रहे प्लान को साझा करते हुए सुंदर एवं स्वच्छ शहर की परिकल्पना को सबके सहयोग से मिलकर साकार करने की बात कही।

नगर परिषद परिसर में सवाई माधोपुर के संस्थापक महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम की प्रतिमा पर नमन किया।

इस मौके पर विभिन्न विभागों के अधिकारी, पार्षदगण एवं आमजन मौजूद रहे। सभी वक्ताओं ने मिलकर सवाई माधोपुर को आदर्श, स्वच्छ एवं हरित शहर बनाने की दिशा में कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। अगले सवाईमाधोपुर महोत्सव की कडी में 20 जनवरी, गुरूवार को सुबह 11 बजे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाई माधोपुर में सवाई माधोपुर अतीत से वर्तमान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन होगा।

अलवर के रियासतकालीन राज.मुद्रणालय को बंद करने के आदेश जारी

अलवर, (निसं)। कर्मचारियों के व्यापक विरोध के बावजूद अलवर का रियासतकालीन राजकीय मुद्रणालय आखिर बंद हो रहा है।

राजकीय मुद्रणालय को बंद करने के आदेश 17 जनवरी को मुद्रण एवं लेखन सामग्री निदेशक असलम शेर खान ने जारी किए।

आदेश में लिखा है कि 20 जनवरी को अलवर मुद्रणालय में अंतिम कार्य दिवस होगा।

ये आदेश आने के बाद मुद्रणालय के कर्मचारियों में निराशा एवं आक्रोश का माहौल है। राजकीय मुद्रणालय में वर्तमान में 21 कर्मचारियों का स्टाफ है। विभाग ने उनसे प्रतिनियुक्ति के विकल्प मांगे हैं। अधिकांश कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति में 2 से 3 वर्ष बाकी हैं।

इंटरनेशनल पैरा कबड्डी में दमखम दिखाएगा फिजिकल डिसएबल्ड भगवानाराम

श्रीगंगानगर, (नि.सं.) जिले के रायसिंहनगर इलाके के गांव दस टीके के भगवानाराम मेघवाल ने हिम्मत और हौसले के दम पर फिजिकल डिसएबिलिटी को हराकर कामयाबी की मिसाल कायम की है। भगवानाराम का एक हाथ कटा हुआ है, इसके बावजूद वह बेहद तेजी से कबडडी में सामने वालों के छक्के छुड़ा देता है। कई खिलाड़ियों को आउट करता है और विरोधी रेड डालने आएं तो उन्हें टैकल भी शानदार तरीके से करता है।

भगवानाराम जन्मजात हैंडीकैप नहीं था। करीब सात साल पहले 2015 में गांव की गौशाला में चारा काटने के दौरान वह मशीन की चपेट आया और उसका एक हाथ कट गया। तब वह सातवीं क्लास का स्टूडेंट था। उसने हिम्मत नहीं हारी। दायां हाथ कटा तो बाएं हाथ से लिखने का अभ्यास शुरू कर दिया और लिखकर सातवीं कक्षा पास की। इसके बाद वह लगातार आगे की कक्षाओं में पास होता चला गया। हादसे के बाद भगवानाराम की हिम्मत और हौसला देखकर उसके टीचर्स ने उसे मोटिवेट किया और उसे खेल की तरफ बढ़ ने की राह दिखाई। पीटीआई लक्ष्मण ने उसे आगे बढ़ ने का तरीका बताया और पैरा गेम्स के लिए तैयार करने को कहा। अब भगवानाराम के सामने दो विकल्प थे। भगवानाराम कबड्डी का अच्छा खिलाड़ी तो था ही वह दौड़ने में भी तेज था। दोनों खेलों में अभ्यास करता और अंततः उसने पैरा खेलों के लिए कबड्डी को चुना।

श्रीगंगानगर में पैरा कबडडी के लिए चयन ट्रायल हुआ तो भगवानाराम उत्साह से खेला। वह शुरुआत से ही समान्य स्टूडेंट्स के साथ खेलता था। ऐसे में पैरा मुकाबले में अन्य खिलाड़ियों से ज्यादा दिव्यांग होने के बावजूद उसका प्रदर्शन शानदार रहा और स्टेट टीम में चयन हुआ। हाल ही पुष्कर में स्पोर्ट्स बोर्ड ऑफ इंडिया फॉर द डिसएबल्ड की ओर से हुई राष्ट्रीय दिव्यांग कबड्डी प्रतियोगिता में राजस्थान स्टेट की टीम को सर्वाधिक अंक दिलाकर विजेता बनाया। इसी के आधार पर भगवानाराम का सलेक्शन थाइलैंड में होने वाली इंटरनेशनल पैरा कबड्डी प्रतियोगिता के लिए हुआ है। यह इंटरनेशनल कबड्डी मुकाबला अगले साल होगा। भगवानाराम ने बताया कि उसे अभी बारह सदस्यों वाली टीम में चुने जाने और तैयारी जारी रखने की सूचना दी गई है। उसने बताया कि साल 2015 में हादसे के बाद तो उसकी हिम्मत ही टूट गई थी। टीचर्स की मोटिवेशन का ही नतीजा था कि वह कबड्डी में लगातर प्रयास करते हुए इंटरनेशनल पैरा कबड्डी प्रतियोगिता तक पहुंच पाया।

सार-समाचार

भारी ब्लास्टिंग से मकान हिले

पाटन, (नि.स) कस्बे के कर्जो रोड पर स्थित खदान में आज भारी ब्लास्टिंग हुई जिसके चलते कर्जो रोड, कोटपुतली रोड के मकानों में भी कंपन हुई। कंपन होने से लोगों में दहशत का माहौल देखने को मिला। सेवानिवृत्त अध्यापक फतेह चंद मीणा जिनके मकान मदन मोहन मैरिज गार्डन के पास तथा खनन एरिया से महज 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। आज दोपहर में खनन करने वाले लोगों ने इतनी भारी ब्लास्टिंग की जिससे मकानों में भी कंपन होने लगा। इस बारे में पूर्व में भी लोगों ने स्थानीय प्रशासन को अवगत करवाया था कि खनन करने वाले लोग 60 से 70 फुट के होल बना कर उसमें विस्फोट सामग्री डालते हैं उसके बाद ब्लास्टिंग करते हैं। ऐसे में जमीन में भी कंपन आने लगता है तथा कई मकानों में दरारे भी आ चुकी है। प्रशासन ने समय रहते अगर कोई कार्यवाही नहीं की तो बहुत बड़ा हादसा घटने का अंदेशा हो सकता है। इससे पहले भी अध्यापक जे पी यादव ने पाटन पुलिस एवं स्थानीय प्रशासन को अवगत करवाया की खनन करने वाले लोग भारी ब्लास्टिंग कर रहे हैं तथा एलानिया धमकी भी दे रहे हैं कि हमारा आप कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। उसके बावजूद भारी धमाकों के साथ ब्लास्टिंग की जा रही है जिस कारण परिवार में दहशत का माहौल बना हुआ है, एवं भारी ब्लास्टिंग के चलते कर्जो रोड, कोटपुतली रोड के लोगों में भी दहशत का माहौल देखने को मिला है।

साण्डवा में 18 नये संक्रमित मिले

बीदासर,(निसं।) । कोरोना वायरस अब बच्चों को संक्रमित करने लगा है। उपखण्ड के ग्राम साण्डवा में एक साथ 8 बच्चों की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई जिसने स्वास्थ्य विभाग की चिन्ता बढा दी। बुधवार को उपखण्ड क्षेत्र में कोरोना के 18 नए पॉजिटिव केस मिले। ग्राम साण्डवा में एक साथ 14 व्यक्तियों की रिपोर्ट पॉजिटिव आने से ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। वहीं बीदासर सीएचसी के एक स्वास्थ्यकर्मी की भी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। बीसीएमएचओ डॉ. ओमप्रकाष धानिया व बीदासर कोविड जांच प्रभारी मनमोहन षर्मा ने बताया कि बुधवार को आई कोरोना जांच रिपोर्ट में बीदासर कस्बे में 4 पॉजिटिव तथा ग्राम साण्डवा में 14 पॉजिटिव केस आए हैं। इनमें बीदासर कस्बे के वार्ड 1 का 45 वर्शिय व्यक्ति, वार्ड 4 की 45 वर्शिय महिला, वार्ड 12 में 64 वर्शिय बुजुर्ग, वार्ड 23 में एक 65 वर्शिय बुजुर्ग की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। वहीं ग्राम साण्डवा की सीएचसी में लिए गए सैम्पल में से साण्डवा निवासी वार्ड 1 के 15 वर्शिय बालक, वार्ड 6 के 13 वर्शिय बालक वार्ड 8 की एक 8 वर्शिय तथा एक 15 वर्शिय बालिका, वार्ड 14 की 16 वर्शिय बालिका व 11 वर्शिय बालक सहित 10 व्यक्तियों तथा ग्राम भोमपुरा निवासी 10 वर्शिय बालक, इंदपालसर डूंगरगढ़ निवासी 13 वर्शिय बालक, सोनियासर डूंगरगढ़ निवासी 63 वर्शिय बुजुर्ग, बैरासर निवासी 50 वर्शिय पुरुश की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। इन सभी व्यक्तियों को मेडिकल टीम की निगरानी में होम आइसोलेट किया गया है।

विकास जाखड़ का अनशन जारी

झुंझुनूं,(निसं)। प्रदेश में हुई रीट समेत विभिन्न भर्तियों में भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए सरकार के खिलाफ अनशन पर बैठे सीआरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट शौर्य चक्र प्राप्त विकास जाखड़ अपनी मांगों पर अड़े हुए है। बुधवार को तीसरे दिन भी वो अपने गांव जाखड़ों का बास दोरासर में अनशन पर बैठे रहे। कलेक्टर के निर्देश एसडीएम झुंझुनूं शैलेश खैरवा तथा सिटी डीएसपी शंकरलाल छाबा अनशन स्थल पर पहुंचे और विकास जाखड़ से अनशन तोड़कर किसी और शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन की गुजारिश की। लेकिन विकास जाखड़ ने इस गुजारिश को नहीं माना। उन्होंने कहा कि जब वे जयपुर में आंदोलन के लिए कोशिश कर रहे थे तो सरकार ने वहां पर धारा 144 लगाकर आंदोलन को कुचलने का प्रयास किया। वे झुंझुनूं में धरने पर बैठते तो उन्हें कोरोना का हवाला देकर उठा दिया जाता। इसलिए उन्होंने अपने गांव में ही अनशन करने का फैसले लिया है। जहां पर किसी भी कारण को थोपकर उनका आंदोलन नहीं कुचला जा सकता। उन्होंने कहा कि वे अपनी मांगों को लेकर अड़े हुए है। जब तक उनकी मांग नहीं मानी जाएगी। वे ना तो अनशन स्थल से कहीं जाएंगे और ना ही अनशन तोड़ेंगे। आपको बता दें कि झुंझुनूं प्रशासन ने विकास जाखड़ की चिकित्सकीय जांच के लिए भी टीमें लगा रखी है। दिन में दो बार उनके स्वास्थ्य की जांच हो रही है।

पाँच सूत्री माँगों का विरोध-प्रदर्शन

सादुलपुर, (निसं)। तहसील के गाँव भोजाण में मुख्य सडक मार्ग पर पानी की निकासी नहीं होने के कारण भोजाण गाँव के ग्रामीण नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो रहे हैं। वहीं बुधवार को युवाओं ने गाँव के मुख्य सडक मार्ग पर एकत्रित होने वाले पानी की निकासी सहित पाँच सूत्री माँगों को लेकर श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना तहसील के तहसील अध्यक्ष नवीन सिंह राठौड के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया। वहीं इसी दौरान ग्रामीणों ने आक्रोश में आकर मेघवाल धर्मशाला से लेकर सार्वजनिक कुएं से होते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिव मंदिर, बाबा राम गिरी महाराज से आश्रम होते हुए मुख्य सडक हरपालु से रामपुरा भोजान रोड पर सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। वहीं युवाओं ने नारेबाजी करते हुए प्रशासन से माँग की है कि सरकार का अभी तक भोजाण की तरफ कोई ध्यान नहीं गया है, जबकि 11 जनवरी से लगातार ग्रामीण विरोध प्रदर्शन करते आ रहे है। इसी दौरान श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना तहसील अध्यक्ष राजगढ नवीन सिंह राठौड, बाबा राम गिरी ग्राम संगठन भोजाण अध्यक्ष नवीन सिंह राठौड के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया।

गरीबों को कंबल व कोट बांटे

चूरू, (कासं)। पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट व सारा पायलट की शादी की 18वीं सालगिरह पर आयोजित समारोह में चूरू नगर परिषद के पूर्व सभापति गोविंद महनसरिया ने गरीबों को कंबल एवं गरम कोट वितरित कर उनकी लंबी आयु एवं स्वस्थ रहने व हर इच्छा पूरी करने की कामना की। यहां महनसरिया ने समारोह में कहा कि पायलट प्रदेश में आमजन के जनप्रिय नेता हैं, जिनके नाम से कार्य करने से सुखद आनंद आता है। महनसरिया ने कहा कि पायलट प्रदेश का नाम रोशन करने वाले नेता हैं। इस अवसर पर पार्षद विजय जालान, पंचायत समिति सदस्य प्रत्याशी आसाराम बसेर, मोहन ट्रेलर, किशन लाल मेघवाल, नवाब खां दौलतखानी, ईद खां, रामचंद्र सुंडा, जंग शेर खान, लक्ष्मण सिंह, अमर सिंह आदि थे।

रेपिड एंटीजन टेस्ट की दर निर्धारित

चूरू, (का.सं.)। आमजन को कम कीमतों पर सहज एवं सुलभ जांच उपलब्ध कराने के राज्य सरकार के संकल्प के दृष्टिगत सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय द्वारा गठित कमेटी के प्रस्तावानुसार राजस्थान महामारी अधिनियम 2020 की धारा 4 में प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए राज्य सरकार ने राज्य में निजी जांच प्रयोगशाला में कोविड.19 की रेपिड एंटीजन जांच की अधिकतम दर 50 रुपए प्रति जांच जीएसटी एवं सभी कर सहित निर्धारित की है। एडीएम लोकेश गौतम ने बताया कि जिले में इस आदेश की कड़ाई से पालना के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। इसकी अवहेलना पर राजस्थान महामारी अधिनियम 2020 की धारा 5 के अंतर्गत नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि मनाई

चूरू, (का.सं.)। जिला कार्यालय श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना चूरू में महाराणा प्रताप की 425 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। महाराणा प्रताप के संघर्षों व जीवन पर चर्चा की गई। इस अवसर पर राजवीर सिंह चारण के द्वारा महाराणा प्रताप और अनेक महापुरुष के जीवन बलिदान के बारे में बताया हमे इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर राजपूत युवा शामिल हुए जिला अध्यक्ष प्रदीप सिंह ढाढर, जिला संयोजक पूर्ण सिंह चलकोई, जिला संरक्षक आलोक सिंह टकनेत, जिला उपाध्यक्ष छत्रपाल सिंह टकनेत, उत्तम सिंह भालेरी, आदित्य सिंह लाददीया, सहित युवा कार्यकर्ता मौजूद रहे । कार्यक्रम का संचालन आलोक सिंह टकनेत ने किया।

भाजपा नेता गुर्जर का धरना जारी

सुजानगढ़, (का.स)। बेसहार पशुओं को संरक्षण, अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई व पट्टा वितरण में बरती जा रही लापरवाही के खिलाफ नगरपरिषद के बाहर धरने पर बैठे भाजपा नेता नरेन्द्र गुर्जर का धरना बुधवार को पांचवे दिन जारी रहा। गुर्जर ने बताया कि शहर में सिर्फ दो ही कॉम्पलेक्सों पर कार्रवाई हुई है। जबकि बिना स्वीकृति के बहुत से अवैध व्यवसायिक कॉम्पलेक्सों का निर्माण हुआ है। जिनके खिलाफ भी नगरपरिषद को कार्रवाई करनी चाहिए। वंही गुर्जर ने कहा कि शहर में आवारा पशुओं के संरक्षण के लिए नगरपरिषद द्वारा कोई ठोस कदम नही उठाया गया है। गुर्जर ने कहा कि जब तक पशुओं के संरक्षण के लिए नगरपरिषद द्वारा ठोस कदम नही उठाए जायेंगे तब तक धरना अनवरत जारी रहेगा।

चूरू के दवा प्रतिनिधि हड़ताल पर रहे, विरोध-प्रदर्शन किया

चूरू में दवा प्रतिनिधियों ने सोलह सूत्री मांगों को लेकर प्रदर्शन किया।

चूरू, (कासं)। अखिल भारतीय संगठन के आव्हान पर फेडरेशन ऑफ मेडिकल एंड सेल्स रिप्रेजेंटेटिव के तहत बुधवार को दवा प्रतिनिधि चूरू जिला मुख्यालय पर हड़ताल पर रहे।

इस दौरान संगठन के मीडिया प्रभारी अरुण शर्मा ने बताया कि सोलह सूत्री मांगों को लेकर राष्ट्रव्यापी हड़ताल के तहत सभी दवा प्रतिनिधि आज हड़ताल पर है। उन्होंने बताया कि उनकी मांगों को लेकर शिक्षक भवन के आगे प्रदर्शन किया गया है दवा व सेल्स के प्रतिनिधि के चूरु यूनिट सचिव ईश्वर सिंह नीमराणा ने बताया हम सोहल सूत्री मांगों को लेकर एक दिन की हड़ताल पर है आपको बता दें कि राजस्थान के दस हजार से ज्यादा दवा सेल्स प्रतिनिधि अपनी मांगों को लेकर आज हड़ताल पर रहे। उन्होंने बताया कि हमारी मुख्य मांगे इस प्रकार है कि अखिल भारतीय आव्हान के तहत दवाइयों पर जीएसटी को बंद किया जाए, ऑनलाइन दवाइयों की बिक्री बंद करने, एमआर की प्राइवेसी को मध्य नजर रखते हुए नियमों में बदलाव करने, जीडीपी का 5 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च किया जाए, नए बनाए गए 4 कोड को खत्म किया जाए, एसपीई एक्ट 1976 और अन्य 44 लेबर श्रम कानूनों को पहले की तरह बहाल किया जाने की मांग को लेकर आज समस्त दवा प्रतिनिधि हड़ताल पर रहे। उन्होंने बताया कि हड़ताल के माध्यम से केंद्र और राज्य सरकारों तक अपनी मांगे पहुंचा रहे हैं। इस दौरान काफी संख्या में दवा प्रतिनिधि शिक्षक भवन के आगे मौजूद थे।

सभी ने नारेबाजी कर सरकार के खिलाफ अपना आक्रोश जताया इस अवसर पर अजय पालसिंह, सुरजीत सहारण, राकेश जाट, सुरेश प्रजापत, अनिल सैनी, सतीश सिंह, एमडी मनियार, देवाराम, इंतकाब आलम, मनोज रक्षक, अभिषेक अग्रवाल, राजेश सांखला, मोहम्मद आरिफ, विकास निंबीवाल, नरेंद्र सुरोलिया, दुर्गेश निर्माण आदि ने आक्रोश व्यक्त कर विरोध प्रदर्शन किया।

2022 की पहली राष्ट्रीय लोक अदालत मार्च में

झुंझुनूं,(निसं)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार झुंझुनूं न्यायक्षेत्र में माह मार्च 2022 में वर्ष की प्रथम राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इस राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन कोविड-19 को दृष्टिगत रखते हुए ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों माध्यमों से किया जाएगा।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झुंझुनूं की सचिव दीक्षा सूद ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत की सफलता में मीडिया का एक बड़ा अहम किरदार है। मीडिया की पहुंच आमजन में अखबार, टीवी व मोबाइल सभी माध्यमों से है। जिससे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जुड़कर आमजन को विधिक सहायता के प्रत्येक आयामों से रूबरू करवा सकता है। इसके आगे सूद ने बताया कि झुंझुनूं न्यायक्षेत्र में राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए न्यायिक अधिकारियों की बैंचों का गठन किया जाएगा। जो कि प्रकरणों को सुनकर फैसले करेंगी।

कार्यालय ग्राम पंचायत हरपालू कुशाला पंचायत समिति राजगढ़ (चूरू)

क्रमांकः- ग्राप/हरपालू कुशाला/ई-निविदा/2021-22/13-14 दिनांक 18.01.2022

ई-निविदा सूचना 02/2021-22

वर्ष 2021-22 के लिए निर्माण कार्य हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से राजकीय विभागों में पंजीकृत संवेदकों से वेवसाईड www.eproc.raj.gov.in पर दिनांक 19.01.2022 सांय 5 पी.एम. से ग्राम पंचायत मुख्यालय पर निर्माण कार्य करवाने हेतु कार्यवार निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण तथा शर्ते www.sppp.raj.nic.in तथा www.eproc.raj.gov.in पर देखा एवं डाउनलोड किया जा सकता है।

NIB No. ZCR2122A0517
यू.बी.एन. नं. ZCR2122WSOB01071

(सुनिल कुमार)
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत हरपालू कुशाला
पंचायत समिति राजगढ़ (चूरू)

(निर्मला)
सरपंच
ग्राम पंचायत हरपालू कुशाला
पंचायत समिति राजगढ़ (चूरू)

सबकुछ समेटकर भागी लुटेरी दुल्हन

सिंघाना, (निसं)। झुंझुनूं के सिंघाना थानान्तर्गत पुहानिया गांव का है। जहां आठ फरवरी को पैसे लेकर युवक एक दुल्हन लेकर आया था। जो पांच दिन बाद ही परिवार के सभी सदस्यों को नींद की गोलियां खिलाकर ना केवल खुद, बल्कि घर से जेवरात और नगदी लेकर फरार हो गई।

जानकारी के अनुसार इस वारदात का मामला सिंघाना थाने में दर्ज करवाया गया है। आरोप लगाया है कि यूपी निवासी युवती अपने दलालों के साथ मिलकर इस परिवार को बेवकूफ बनाया। थानाधिकारी भजनाराम ने बताया कि पुहानियां निवासी 33 साल के बहादुरसिंह यादव ने रिपोर्ट दी है। उसने रिपोर्ट में बताया है कि वह अविवाहित था। घसेड़ा हाल सिरसला निवासी दिलीप कुमावत व उसके रिश्तेदार सिहोड़ियों की ढाणी निवासी कैलाश कुमावत, यूपी निवासी मुकेश व भूपेंद्र ने उसकी शादी करवाने की बात कही। आरोपियों ने शादी के नाम रुपयों की मांग की। इसके बाद इन लोगों ने यूपी निवासी कथित रानी पुत्री राज जायसवाल से रिश्ता करवाया।

संयुक्त राज्य कर्मचारी महासंघ ने जिला कलेक्टर का अभिन्दन किया

संयुक्त कर्मचारी महासंघ ने जिला कलेक्टर सांवर मल वर्मा के स्थानांतरण पर उनका अभिनंदन किया।

चूरू, (का.सं.)। जिला कलेक्टर सांवरमल वर्मा का स्थानान्तरण होने पर अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ ने जिला कलेक्टर निवास पर अभिन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

जिसमें महासंघ के जिलाध्यक्ष रिछपाल सिंह चारण ने बताया की कलेक्टर के एक साल के कार्यकाल चूरू जिले के कर्मचारियों के लिए ऐतिहासिक रहा।

जिला लेवल की जो भी समस्या कलेक्टर के समक्ष रखी गई । उसका तुरन्त समाधान कर कर्मचारियों को राहत दिलाई गई। जिसको चूरू जिले के कर्मचारी हमेशा के लिए याद रखेंगे। अभिन्दन समारोह में महासंघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबू खां, कमल वर्मा, महासंघ के उपाध्यक्ष विजेन्द्र सिंह राठौड, सहायक कर्मचारी संघ के निवास माली, नल मजदूर संघ प्रमोद कुमार शर्मा, कैलाश वर्मा, वाहन चालक संघ के छगनलाल सैन, स्टेनोग्राफर संघ से भूपेन्द्र सिंह, रामचन्द्र, राजेन्द्र सोनी उपस्थित थे। कलेक्टर सांवरमल वर्मा ने महासंघ के सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

कार्यालय नगरपालिका केसरीसिंहपुर, जिला श्रीगंगानगर (राज.)

Email Address:-eonpkesrisinghpur@yahoo.in phone&Fax No. 01501-233028
क्रमांक नपाके/भूमि/2021-22/6106-6108 दिनांक 18.01.2022

आपत्ति सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भूखण्ड संख्या 28, साईज 50 गुणा 200 वर्गफुट डी ब्लॉक केसरीसिंहपुर दिनांक 29.07.1960 में ग्राम पंचायत सरपंच द्वारा श्री छोटू राम पुत्र श्री माई धन, निवासी केसरीसिंहपुर को अलाटमेंट किया गया था। उसके उपरान्त श्री छोटू राम पुत्र श्री माई धन द्वारा अपने जीवन काल में दिनांक 02.07.1992 को उक्त प्लाट को डा. राम मनोहर लोहिया एवं बी.आर. अम्बेडकर हरीजन प्रशिक्षण केन्द्र केसरीसिंहपुर मार्फत मैनेजिंग डायरेक्टर श्री महादेव प्रसाद गुप्ता को दिये जाने पर नगरपालिका रिकार्ड में दिनांक 08.10.2003 को डा. राम मनोहर लोहिया एवं बी.आर. अम्बेडकर हरीजन प्रशिक्षण केन्द्र केसरीसिंहपुर मार्फत मैनेजिंग डायरेक्टर श्री महादेव प्रसाद गुप्ता के नाम से दर्ज रिकॉर्ड करवाया गया था। इसके उपरान्त डॉ. राम मनोहर लोहिया एवं बी.आर. अम्बेडकर हरीजन प्रशिक्षण केन्द्र केसरीसिंहपुर वर्तमान अध्यक्ष श्री आशुतोष गुप्ता व सचिव श्री सुनील कुमार द्वारा पूर्व में माननीय मुख्यमंत्री महोदया की बजट घोषणा हेतु अम्बेडकर भवन निर्माण हेतु भूखण्ड संख्या 28, का आधा भाग साईज 50 गुणा 100 वर्गफुट दक्षिणी दिशा का हिस्सा, डी ब्लॉक केसरीसिंहपुर को नगरपालिका को जरिये इकरारनामा दान दिया गया था। जिस पर वर्तमान में अम्बेडकर भवन निर्मित है।

डा.राम मनोहर लोहिया एवं बी.आर. अम्बेडकर हरीजन प्रशिक्षण केन्द्र केसरीसिंहपुर वर्तमान अध्यक्ष श्री आशुतोष गुप्ता व सचिव श्री सुनील कुमार द्वारा भूखण्ड संख्या 28, साईज 50 गुणा 100 वर्गफुट उत्तर दिशा का हिस्सा, डी ब्लॉक केसरीसिंहपुर को श्री छोटू राम के वारिसान श्री राम कुमार व श्री रमेश कुमार पिसरान श्री छोटू राम, जाति मेघवाल, निवासी केसरीसिंहपुर को जरिये 500/- इकरारनामा के वापिस दे दिया गया है। श्री राम कुमार व श्री रमेश कुमार पिसरान श्री छोटू राम द्वारा भूखण्ड संख्या 28, साईज 50 गुणा 100 वर्गफुट उत्तर दिशा का हिस्सा, डी ब्लॉक केसरीसिंहपुर नगरपालिका में इकरारनामा प्रस्तुत कर अपने नाम से बराबर-बराबर हिस्सा इन्तकाल दर्ज करवाने हेतु आवेदन किया है।

अतः इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो निम्न हस्ताक्षरकर्ता को प्रकाशन के 07 दिवसीयके अन्दर-अन्दर मय सबूत के अपनी आपत्ति मय रिकॉर्ड प्रस्तुत कर सकता है। अन्यथा बाद में मियाद गुजरने पर उक्त सभी सदस्यों के नाम नगरपालिका रजिस्टर में विरास्तन इन्तकाल दर्ज कर दिया जावेगा। सूचित रहे।

(दिनेश कुमार शर्मा)
अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका, केसरीसिंहपुर

'स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर धन की कमी नहीं आने देंगे'

- सीएम के बाद परिवहन मंत्री बृजेंद्र ओला ने पेश की मिसाल
- तीन स्वास्थ्य केंद्रों का वर्चुअली शिलान्यास किया

झुंझुनूं,(निसं)। प्रदेश में कोरोना के बढ़ते मामलों के बाद एक ओर जहां प्रदेश के मुख्यमंत्री शिलान्यास और लोकार्पण कार्यक्रमों में वर्चुअली शामिल हो रहे है। वहीं प्रदेश के मंत्री अपने अपने क्षेत्रों के कार्यक्रमों में जाकर हिस्सा ले रहे है। इन सबके बीच प्रदेश के परिवहन मंत्री बृजेंद्र ओला ने मिसाल पेश की है। सीएम के बाद वे ही प्रदेश के एकमात्र ऐसे मंत्री है। जो अपने इलाके के कार्यक्रम में खुद शामिल होने की बजाय कोरोना को देखते हुए वर्चुअली कार्यक्रम कर रहे है।

बुधवार को परिवहन मंत्री बृजेंद्र ओला ने वर्चुअली कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए अपने झुंझुनूं विधानसभा को दो पीएचसी तथा एक सब सेंटर भवन की सौगात दी है। आज उन्होंने बुडाना में 2 करोड़ 11 लाख रूपए की लागत से तथा गिडानिया में एक करोड़ 85 लाख रूपए की लागत से बनने वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के भवन का शिलान्यास किया है। इसके अलावा उन्होंने बीबासर पंचायत के फतेहसरा गांव में भी 38 लाख रूपए की लागत से सब सेंटर की नींव वर्चुअली रखी। तीनों ही कार्यक्रम में ठामीण और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने लैपटॉप के जरिए वीडियो कांफ्रेंस से ना केवल ओला को सुना। बल्कि उनका आभार भी जताया। ब्लॉक सीएमओ डॉ. मनोज डूडी ने बताया कि कार्यक्रम में प्रधान पुष्पा चाहर व स्थानीय जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। उक्त तीनों भवन करीब साढ़े चार करोड़ रूपये की लागत से बनाए जाएंगे। जो कि परिवहन मंत्री के प्रयासों से स्वीकृत हुआ है। बुडाना के कार्यक्रम में पूर्व सरपंच विजेंद्र कुमार भी मौजूद रहे।

समाज कल्याण अधिकारी को ज्ञापन दिया

चूरू, (का.सं.)। रॉयल विकलांग विकास संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष अख्तर खान ने मोटराइज्ड ट्राई साइकिल वितरण करवाने व पालनहार योजना की राशि का भुगतान जल्द से जल्द करने व यूडीआईडी कार्ड का कैंप लगवाने की मांग को लेकर बुधवार को समाज कल्याण अधिकारी अरविंद कुमार ओला को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया कि 9 सितंबर व 10 सितंबर को द न्यू दिल्ली, लिम्को द्वारा विशेष योग्यजन मोटराइज्ड कैंप का आयोजन किया गया था। वितरण का सामान संबंधित विभाग के पास पहुंच गया था लेकिन अभी तक उसका वितरण नहीं हुआ है वही पालनहार की राशि सितंबर 2021 के बाद की राशि का भुगतान जल्द से जल्द करवाने, विशेष योग्यजन की पेंशन हेतु यूडीआईडी कार्ड अनिवार्य कर दिया है लेकिन चार वर्ष बीत जाने के बाद भी आज तक के विशेष योग्यजन के यूडीआईडी कार्ड बन कर नहीं आए हैं इसलिए यूडी आईडी कैंप लगाकर विशेष योग्यजनों को अधिक से अधिक लाभ देने की मांग की।

कार्यालय विकास अधिकारी, पंचायत समिति, पूगल (बीकानेर)

क्रमांक:-पंसपू/निविदा/2021/3443-54 दिनांक:-19-.01.22

अल्पकालीन निविदा सूचना

संख्या 2021/22..........

नवसृजित पंचायत समिति पूगल में वित्त आयोग पंचम पंचायत समिति मद में स्वीकृत कार्य नवसृजित पंचायत समिति पूगल कार्यालय अग्र भाग निर्माण कार्य लागत राशि 50.00 लाख रूपये पंचायत समिति पूगल व सम्पादन हेतु केन्द्रीय/ राज्य स्तरीय विभागों में पंजीकृत सक्षम फर्मो/व्यक्तियों/संवेदकों से ऑनलाईन पोर्टल http//eproc.rajasthan.gov.in के माध्यम से निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य विस्तृत विवरण विभागीय वेबसाईट http//sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदा http//eproc.rajasthan.gov.in कार्य का विस्तृत विवरण विभागीय वेबसाईट http//sppp.rajasthan.gov.in http//eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा आवेदन/डाउनलोर्ड करने की दिनांक	:	20.01.2022से 02.02.2022 दोपहर 12.00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा जमा/अपलोड कराने की दिनांक	:	20.01.2022 से 02.02.2022 दोपहर 12.00 बजे तक
निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि प्रोसेसिंग शुल्क भौतिक रूप से जमा कराने की दिनांक	:	03.02.2022 को समय दोपहर 4.00PMतक
निविदा खोलने की दिनांक	:	04.02.2022 को समय दोपहर 1.00PM से लगातार

NIB-ZBK2122A0008
UBN-ZBK2122WSOBO0008

विकास अधिकारी पंचायत समिति पूगल

सर्किट हाउस में चिकित्सकों ने कलेक्टर का स्वागत किया

नवागंतुक कलेक्टर लक्ष्मण सिंह कूड़ी का चिकित्सकों की ओर से सर्किट हाउस में स्वागत किया गया।

झुंझुनूं,(निसं)। नवागंतुक कलेक्टर लक्ष्मण सिंह कूडी का चिकित्सकों की ओर से सर्किट हाउस में स्वागत किया गया। आईएमए के सचिव डॉ. लालचंद ढाका के नेतृत्व में फिजिशियन डॉ. अनिल महलावत, आरिस्दा महासचिव डॉ. राजेंद्र ढाका, प्रवक्ता डॉ. कैलाश राहड़, प्राइवेट डॉक्टर एसोसिएशन के डॉ. कमलचंद सैनी आदि ने कूडी का स्वागत किया।

वही दूसरी ओर आदर्श जाट महासभा झुंझुनूं द्वारा नवागंतुक जिला कलेक्टर लक्ष्मण सिंह कुडी का सर्किट हाउस झुंझुनू में जिलाध्यक्ष कृष्ण श्योराण के नेतृत्व में पुष्प भेंटकर स्वागत और अभिनंदन किया गया। जिला कलेक्टर लक्ष्मणसिंह कुडी ने कहा कि जिले में किसी भी विकास कार्य में कमी नहीं आने देंगे। सबके साथ न्याय और पारदर्शिता से काम करूंगा। स्वागत समारोह में मंजीत चौधरी जिलाध्यक्ष राजस्थान शिक्षक संघ एकीकृत, राजपाल फोगाट प्रदेशध्यक्ष गौरव सेनानी शिक्षक संघ, सुरेश तेतरवाल उपाध्यक्ष आदर्श जाट महासभा, नरेंद्र झाझड़िया, डॉ. कैलाश राहड़, कैलाश सुरा उपाध्यक्ष लीग, राहुल आबूसर, डॉ. केएल गोदारा, प्रशांत बुडानिया, विजयहिंद जालिमपुरा, राकेश भगासरा, डॉ. ताराचंद ओला, राजेंद्र मिल, अरुण श्योराण, राजेश जानूं, भगतसिंह समोता, डॉ. महेश बिसु, गणमान्य जाट महानुभाव उपस्थित रहे।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

(पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)
CIN : L65110TN2014PLC097792
पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंगटन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031
फोन- +91 44 4564 4000 | फैक्स- +91 44 4564 4022

वित्तीय अस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण एवं ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के सैक्शन 13 (2) के तहत नोटिस

निम्न ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं ने नीचे वर्णित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड का सिक्योर्ड ऋण (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जान जाता है) से लिया था। निम्नलिखित ऋणग्रहितओं एवं सहऋणग्रहिताओं के ऋण उनकी अपनी-अपनी सम्पत्तियों के गिरवी रखने से सुरक्षित है। क्योंकि उन्होंने अपने-अपने ऋण एग्रीमेन्टस के नियम व शर्तों की पालना नहीं की है और अनियिमित हो गये है, उनके ऋणों को आरबीआई की गाइडलाइन्स के अनुसार एनपीए वग्रीकृत कर दिया गया है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जान जाता है) को देय राशियाँ उनके पृथक नोटिस में लिखी गयी है तथा और विशेष रूप से निम्न सूचि में वर्णित है और उक्त राशियों पर आगे का ब्याज भी लागू होगा तथा वह उनकी अलग-अलग तिथियों से समझौते की प्रभावी दर से वसूला जायेगा।

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि	सम्पत्ति का पता
1	27271085	सम्पत्ति पर ऋण	1. राज कुमार 2. ग्यारसी मदन 3. ग्यारसी	05.01.2022	3,07,354.25/-	रिहायशी प्लाट, पट्टा नं. 34, खसरा नं. 640, ग्राम, पोस्ट एवं जी पी-भीमसर, तहसील व जिला झुंझुंनू, राजस्थान का पूरा व प्रत्येक भाग, क्षेत्रफल 570 वर्गगज और सीमायें है- पूर्व-रास्ता, पश्चिम-रामजी लाल का मकान, उत्तर-दुलीचन्द का मकान, दक्षिण-ओंकार मल मीणा का मकान
2	32181693	सम्पत्ति पर ऋण	1. रनदीप कुमार 2. भोलू मूंगा 3. प्रतिभा देवी	05.01.2022	5,19,369.64/-	रिहायशी प्लाट, पट्टा नं. 38, बुक नं. 31, ग्राम पंचायत बस नानग, तहसील व जिला झुंझुंनू (राजस्थान) का पूरा व प्रत्येक भाग, क्षेत्रफल 179.61 वर्गगज, और सीमायें है- पूर्व-आम चौक, पश्चिम-आम रास्ता, उत्तर-आम रास्ता, दक्षिण-सुरेश और शिशपाल मेघवाल

आपको एतद्द्वारा, इस प्रकाशन के 60 दिन के अन्दर, ऊपर सूचि में दर्शायी राशियों को उनकी प्रथम तिथि से, उस पर लगे आगे के समझौते में ब्याज दर तथा अन्य खर्चों, चार्ज आदि सहित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लि. (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, जो आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ एकीकृत हुआ हो वर्तमान में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को भुगतान करने को कहा जा रहा है, यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को, एसएआरएफएइएसआई एक्ट के सैक्शन 13(4) तथा सैक्शन 14 के तहत, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, जो आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ एकीकृत हुआ हो वर्तमान में आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशि वसूल करने के लिये, गिरवी रखी सम्पत्तियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने के लिये बाध्य होना पडेगा/इसके अलावा उक्त एक्ट के सैक्शन 13 (13) के तहत आप उक्त सम्पत्तियों को बिक्री/लीज अथवा किसी अन्य प्रकार से ट्रांसफर नहीं करने के लिये प्रतिबंधित है।

ह./-
प्राधिकृत अधिकारी
आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

दिनांक- 20.01.2022
स्थान- झुंझुनू

(पूर्व में कैपीटल फर्स्ट लिमिटेड, जो आईडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

जोधपुर में करोना का विस्फोट, 1212 संक्रमित मिले, दो जनों की मौत

जिले में एक्टिव केस भी बढ़कर 5284 पर जा पहुंचे है

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में बुधवार को हुए कोरोना के विस्फोट ने शहर और गांवों के लोगों को दहला कर रख दिया। कोरोना संक्रमण के आंकड़े बारह शतक को पार कर गए। यहां पर कोरोना तेजी से पैर पसारने लगा है। बुधवार को 4515 जनों की जांच की गई, उसमें से 1212 संक्रमित पाए गए। डराने वाली बात यह है कि आज भी दो जनों की मौत हो गई। कल भी दो संक्रमितों ने दम तोड़ा था। एक्टिव केस भी बढ़ कर 5284पर जा पहुंचे है। वहीं स्वस्थ हो चुके 777 जनो को डिस्चार्ज भी किया गया।

इस सब के बावजूद लोग पूरी तरह लापरवाही बरत रहे हैं। हर रोज होने वाली जांच में कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ती जा रही थी। सरकार ने हांलांकि कुछ पाबंदियां भी लगाई,मगर लोग बेपरवाह बने फिर रहे हैं। मास्क लगाना तो कईयों ने शान के खिलाफ समझ रखा है। कुछ लोग वाहन लेकर घर से निकलते तो मास्क कोट की जेब में डाल देते हैं। गलियों में बिना मास्क राजा भोज की तरह शान से निकलते हैं ।मगर मुख्य सड़क पर पुलिस नजर आती है तो तुरंत गंगू तेली भी बन जाते हैं। वाहन एक तरफ रोक कर मास्क पहनते हैं, ताकि दण्ड से बचे रहें।

यही हाल बाजार में साफ़ नज़र आता है। भीड़भाड़ में लोग एक दूसरे से धकियाते चलते हैं। दूसरी तरफ सरकार और जिला प्रशासन लोगों की बेहतरी को लेकर चिंतित है। चिकित्सा संबंधी व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। सोशल डिस्टेंडिंग रखने और मास्क पहनने की अपील की जा रही है। भीड़ में ना जाने और भीड़ ना जुटाने की सलाह दी जा रही है। मगर कुछ लोगों ने तो जैसे हम नही सुधरेंगे का संकल्प लें रखा है। अगर लोगों का यही बर्ताव रहा तो फुल लोकडाऊन लगाने के अतिरिक्त सरकार के पास कोई विकल्प नहीं रह जाएगा।

भीलवाड़ा जिले में बुधवार को 277 कोरोना पॉजिटिव सामने आये

भीलवाडा, (निसं)। जिले में कोरोना संक्रमण से मंगलवार को मिली थोड़ी राहत के बाद फिर से बुधवार को विस्फोट हुआ है। मंगलवार को जिले में सात दिन बाद 100 से कम मरीज सामने आए थे। वहीं बुधवार को एक बार फिर से जिले में यह संख्या 200 के पार पहुंच चुकी है। जिले में जिस गति से यह संक्रमण फैल रहा है। वह प्रशासन के सामने एक चिंता का विषय भी बना हुआ है।

डिप्टी सीएमएचओ डॉ. घनश्याम चावला ने बताया कि जिले में बुधवार को 277 संक्रमित मरीज सामने आए हैं। इस बार शहर में सुभाष नगर के बाद जहाजपुर व शाहपुरा में सबसे ज्यादा संक्रमित मरीज सामने आए हैं। उन्होंने बताया कि मरीजों की संख्या में प्रतिदिन बढोतरी हो रही है। जो आंकड़ों में साफ नजर आ रहा है। लोगों को इस संक्रमण को रोकने के लिए कोरोना गाइड लाइन की पालना करनी चाहिए। साथ ही वैक्सीन के जोड लगवाने में कोई कोताही नहीं करनी चाहिए। उन्होंने बताया की बुधवार को 1605 लोगों की जांच में 277 पॉजीटिव सामने आए है।

उदयपुर में 876 पॉजीटिव मिले, 423 रिकवर हुए, 74 भर्ती

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर जिले में बुधवार को 876 पॉजीटिव मिले है। एक्टिव केस 4518 में से केवल 74 अस्पताल में भर्ती है वहीं जिले में आज 423 रिकवर भी हुए है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश खराड़ी ने बताया कि जिले में आज प्राप्त 3782 सैम्पल जांच रिपोर्ट में से 2906 नेगेटिव व 876 पॉजीटिव मिले

- कोरोना संक्रमितों में 117 वॉरियर्स भी शामिल है

है। शहरी क्षेत्र में मिले 664 संक्रमितों में 91 कोरोना वॉरियर्स, 414 नए संक्रमित, 155 क्लॉज कांटेक्ट व 04 माइग्रेंट है। ग्रामीण क्षेत्र में मिल 212 संक्रमितों में 26 कोरोना वॉरियर्स, 41 क्लॉज कांटेक्ट व 145 नए संक्रमित है। संक्रमितों का कुल आंकड़ा 63330 हो गया है। इनमें से 58055 रिकवर हो चुके है। जिले में आज 423 संक्रमित रिकवर हुए। एक्टिव केसेस की संख्या 4518 है इनमें से अधिकांश 4444 होम आइसोलेटेड है वहीं 74 चिकित्सालय में भर्ती है। आज मिले संक्रमितों में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में मिलाकर 117 कोरोना वॉरियर्स शामिल है।

चाण्डपुरा के विद्यार्थियों की शिकायत पर वार्डन ए.पी.ओ.

हॉस्टल में रसोईया नही होने से तीन माह से विद्यार्थी स्वयं खाना बनाने को मजबूर है

जालोर के पास चाण्डपुरा देवनारायण आवासीय विद्यालय के विद्यार्थी हॉस्टल वार्डन पर ज्यादती का आरोप लगाते हुए जिला कलैक्टर को ज्ञापन देने कलैक्ट्रेट पहुंचे।

जालोर, (कासं)। जालोर जिले के एक मात्र देवनारायण राजकीय उच्च माध्यमिक आवासीय विद्यालय चाण्डपुरा के विद्यार्थी बुधवार को कलैक्ट्रेट पहुंचकर हॉस्टल वार्डन व प्रधानाचार्य के खिलाफ अनियमितता को लेकर शिकायत करने पर जिला कलैक्टर जालोर नम्रता वृष्णि ने तुरंत बच्चो की बात सुनते हुए वार्डन के खिलाफ कार्यवाही करते हुए बच्चों को बाल कल्याण समिति की टीम के साथ छात्रावास के लिए रवाना किया।

जालोर के देवनारायण आवासीय विद्यालय के हॉस्टल विद्यार्थियो को समय पर खाना नही देने तथा प्रधानाचार्य द्वारा बिना किसी बात को लेकर प्रताड़ित करने पर हॉस्टल से कुछ छात्र बुधवार सुबह कलैक्ट्रेट गेट के आगे आकर बैठ गये। जिला कलैक्टर के पहुंचने पर उन्होने अपनी पीड़ा बताते हुए शिकायत पत्र देते हुए बताया कि हॉस्टल में रसोईया नही होने से तीन माह से विद्यार्थी स्वयं खाना बनाने को मजबूर है।

बर्तन आदि सभी कार्य बच्चों से करवाया जाता है। विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा प्रवेश के दौरान प्रवेश शुल्क के रूप में प्रति विद्यार्थी पांच हजार रूपये वसूल किये जाते हैं। बार बार रूपये देने का बेजा दबाव बनाया जाता है। वही घर जाने के दौरान मिलने वाले दो सौ भी नही देकर वार्डन स्वयं बिल बनाकर उठा लेता है। रात्रि के समय हॉस्टल वार्डन प्रत्येक विद्यार्थी के कमरे की जांच कर उसके बक्से में परिवारजनो द्वारा दी गई पैकेट मनी भी वार्डन लेकर चला जाता है। पैसे मांगने पर वार्डन द्वारा मारपीट की जाती है।

हॉस्टल का अधिकतर सामान भी वार्डन अपने घर लेकर जाता रहता हैं। हॉस्टल वार्डन फर्जी बिल बनाकर राजस्व हानि पहुंचा रहा है। बीमारी आदि में भी वार्डन द्वारा कोई ध्यान नही दिया जाता है। वार्डन ने राजस्व हानि पहुंचकर लाखों रूपये की सम्पति प्राप्त कर ली है। जिला कलैक्टर ने बच्चों की समस्या सुनकर तुरंत एक्शन लेते हुए वार्डन को ए.पी.ओ. कर दिया। बाल कल्याण समिति की टीम बच्चों के साथ पहुंचकर उनके सुविधाओं की जानकारी ली।

अलवर के राज ऋषि कॉलेज में सैंकड़ों की भीड़ में करोना पॉजिटिव परीक्षा देने पहुंचा

अलवर, (निसं)। राज ऋषि कॉलेज में बुधवार को सैकड़ों की भीड़ में कोरोना पॉजिटिव भी परीक्षा देने पहुंच गया। प्रशासन की अव्यवस्था पर स्टूडेंट्स ने रोष जताया तथा प्रशासन की ओर से परीक्षा का अधूरा इंतजाम रहा। कोरोना पॉजिटिव के आने का पता लगा तो प्रशासन के होश उड़ गए। इसके बाद कॉलेज प्रशासन ने यूजी की परीक्षाएं 23 जनवरी तक स्थगित कर दी। लेकिन पीजी की परीक्षाएं यथावत जारी रखी हैं।

कॉलेज के स्टूडेंट्स ने विरोध जताया कि प्रशासन की ओर से टर्म टेस्ट का टाइम टेबल प्रॉपर जारी नहीं किया। स्टूडेंट्स को पता ही नहीं चला कि किस विषय का पेपर कितने बजे किस रूम में होगा। इस कारण सैकडों

- राज ऋषि कॉलेज प्रशासन ने 23 तक परीक्षा स्थगित की
- स्टूडेंट्स का आरोप कॉलेज प्रशासन की लापरवाही

स्टूडेंट्स कॉलेज के एकत्रित हो गए। कॉलेज में परीक्षा के लिए स्टूडेंट्स को बाहर खुले में जमीन पर ही बैठा दिया। कोहरे के बीच में कडाके ठंड में पेपर लेने की तैयारी की गई लेकिन व्यवस्था अधूरी रही। इस बीच स्टूडेंट्स ने हंगामा कर दिया। परीक्षाएं बीच में ही छोड़ दी गई। इसके बाद प्राचार्य हुकम सिंह ने यूजी की परीक्षाओं को 23 तक स्थगित कर दिया। प्राचार्य ने कहा कि हमनें कोरोना गाइडलाइन को देखते हुए 50 प्रतिशत स्टूडेंट्स को ही बुलाया था। लेकिन ज्यादा आ गए। इस कारण सबकी परीक्षा लेने की तैयारी तुरंत की गई। कोरोना संक्रमित के आने की सूचना हमें नहीं थी।

यहां कई छात्रों ने कोरोना संक्रमित आए स्टूडेंट का नाम लेकर बताया कि वह परीक्षा देने आया है। जबकि कोरोना पॉजिटिव हैं यह जानने के बाद प्रशासन के होश उड गए। तुरंत परीक्षा को स्थगित किया गया। अब यूजी की परीक्षा 23 के बाद में होगी। जबकि पीजी की परीक्षाएं यथावत रहेंगी। कॉलेज प्रशासन का कहना है कि इस बार परीक्षा का पैटर्न भी बदला गया है। जिससे थोड़ा असमंजस रहा है।

अलवर जिले में 1244 रिकॉर्ड पॉजिटिव मिले

अलवर, (निसं)। बुधवार को 1244 कोरोना पॉजिटिव आए हैं जो तीसरी लहर में अब तक सबसे अधिक हैं। पहली व दूसरी लहर की तुलना में दोगुना से ज्यादा हैं। अब जिले में 6 हजार 656 कोरोना के एक्टिव केस हैं। खास बात यह है कि अलवर में अब भी नए मरीजों की तुलना में रिकवर होने वालों की संख्या कम है। बुधवार 1 हजार 244 नए पॉजिटिव आए। जबकि रिकवर केवल 750 हुए हैं। जिलेभर में पिछले 14 दिनों में 9 हजार 96 संक्रमित आ चुके हैं। हर दिन रफ्तार के पुराने रिकॉर्ड टूटते गए हैं। अलवर शहर ही नहीं गांवों में भी संक्रमण बेकाबू हो चुका है तभी तो गांवों से भी संक्रमित खूब आ रहे हैं। अकेले अलवर शहर से 9 दिन में 3 हजार 250 कोरोना संक्रमित आ चुके हैं। बुधवार को 401 कोरोना संक्रमित आए हैं। इससे पहले भी लगातार 300 से अधिक पॉजिटिव आने का क्रम जारी है। अब जिले में 6 हजार 656 कोरोना के एक्टिव केस हो चुके हैं।

छप्पर में आग लगी

बौंली, (निसं)। क्षेत्र के मलारना डूंगर उपखंड के डूंगरी गांव में बीती रात छप्पर बाड़े में लगी आग के कारण उसमें बधीं 38 बकरियों की जलकर मौत हो गई एवं 22 बकरियां बुरी तरह झुलस गई जिनका उपचार जारी है। इस मामले को लेकर डूंगरी निवासी कन्हैया लाल बैरवा ने मलारना डूंगर थाने में रिपोर्ट पेश कर अवगत कराया है। बीती रात 60 बकरियों को पास में बने छप्पर पोस बाड़े में बांध रखा था रात्रि को अचानक अज्ञात कारण से आग लग गई एवं जब आग तेज हुई तो पास में रह रहे पीड़ित कन्हैयालाल ने शोर मचाकर ग्रामीणों को एकत्रित किया एवं आगजनी पर काबू पाने की कोशिश किया।

रिश्वत का आरोपी सीआई पुलिस के हाथ नहीं लगा

बीकानेर, (कासं)। चप्पल से नकल के मामले में अभियुक्त से ही रिश्वत मांगने के मामले में गंगाशहर थाने का तत्कालीन थानेदार राणीदान अब तक पुलिस के हाथ नहीं लगा है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की जयपुर ब्रांच ने राणीदान पर शिकंजा कसने के लिए अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। वहीं माना जा रहा है कि राणीदान अग्रिम जमानत के लिए पूरी तैयारी कर रहा है। इस पूरे मामले में आला अधिकारी मौन रखे हुए हैं।

राणीदान पर राजकार्य में बाधा डालने का एक मामला गंगाशहर थाने में ही दर्ज हुआ है जबकि एक अन्य मामला भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के पास विचाराधीन है। मामला दर्ज करने के बारे में भी अधिकृत स्तर पर कुछ स्पष्ट नहीं किया गया है। एसीबी के एडीजी दिनेश एमएन स्वयं इस मामले को देख रहे हैं। अगर समय रहते राणीदान ने पुलिस के समक्ष पेशी नहीं दी तो शिकंजा कसा जा सकता है। बुधवार शाम तक पुलिस ने ऐसी कोई कार्रवाई नहीं की।

हादसे में पिता-पुत्र की मौत

पाली, (नि.सं.)। पाली जिले के सबलपुरा के पास बुधवार शाम करीब चार बजे किसी वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार पिता व पुत्र हवा में करीब 18 फीट उछलकर सिर के बल नीचे गिरे। दोनों की मौत हो गई। सूचना पर सेंदड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची तथा मृतक पिता-पुत्र के शव हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाए। पुलिस के अनुसार पाली जिले के जेतपुरा (रायपुर) निवासी 38 वर्षीय बलदेव पुत्र देवीसिंह रावत अपने 58 वर्षीय अपने पिता देवीसिंह पुत्र सदासिंह रावत के साथ बाइक से ब्यावर से जेतपुरा की तरफ आ रहा था।

इस दौरान बुधवार शाम करीब चार बजे हाइवे पर सबलपुरा के निकट उनकी बाइक को किसी वाहन ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों पिता-पुत्र हवा में करीब 18 फीट उछलकर नीचे गिरे। हादसे में पिता-पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार हादसे के बाद 58 साल का देवीसिंह करीब 35 मिनट तक दर्द से तड़पता रहा।

रिटायर्ड आईआरएस अधिकारी ने की आत्महत्या

जयपुर/बस्सी। जिंदगी में बच्चों की परवरिश सही नहीं कर पाया, मेरी पत्नी ने ही उनका ध्यान रखा। इस तरह का सुसाइड नोट लिखकर रिटायर्ड आईआरएस अधिकारी ने बस्सी इलाके स्थित उसकी नमकीन फैक्ट्री में सेल्फॉस की गोलियां खाकर सुसाइड कर लिया। बुधवार सुबह घटना का पता चलने पर फैक्ट्री के मैनेजर ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के हवाले कर दिया। वहीं मर्ग दर्ज कर मामले की जांच में जुटी है।

थानाधिकारी भूपेंद्र सिंह ने बताया मृतक शंकर लाल चंदेल (65) बी-507, महेश नगर का रहने वाला था। वह भारतीय राजस्व सेवा से सेवानिवृत अधिकारी था। बस्सी में रीको एरिया में उसकी श्री श्याम ट्रेडर्स के नाम से नमकीन की फैक्ट्री है। पहले इस फैक्ट्री में गुटखे का उत्पादन किया जाता था। मंगलवार रात को शंकर लाल खाना

- सुसाइड नोट में लिखा : बच्चों की परवरिश सही नहीं कर पाया, पत्नी ने रखा ध्यान, मैनेजर वफादार

खाकर फैक्ट्री में ऊपर बने कमरे में सोने चले गए थे। नीचे केबिन में मैनेजर राहुल खत्री सोया था। सुबह करीब आठ बजे तक भी शंकर लाल नीचे नहीं आए तो मैनेजर राहुल खत्री उनके कमरे पर गया, जहां कमरे का अंदर से लॉक लगा हुआ था। खिडकी में कांच से अंदर झांककर अंदर देखा तो शंकर लाल बैड पर पडे हुए थे और मुंह से उलटी निकली हुई थी। इस पर पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट, सेल्फॉस की शीशी, कुछ धार्मिक किताबें बरामद हुई है।

पुलिस के अनुसार मृतक के कमरे में मिली रामायण, श्रीमद्भागवत गीता इत्यादि पुस्तकें, सुसाइड नोट इस बात की तरफ इशारा करते हैं कि मरने से पहले शंकर काफी उधेडबुन में थे। तीन-चार भावुक सुसाइड लेटर लिखे फिर आत्महत्या की। सुसाइड नोट में लिखा कि मैं जिंदगीभर बच्चों की परवरिश सही नहीं कर पाया, मेरी पत्नी ने ही उनका ध्यान रखा। मेरा मैनेजर राहुल खत्री अच्छा और वफादार है। आत्महत्या के लिए खुद जिम्मेदार हूं। मृतक के परिवार में पत्नी, दो बेटियां और एक बेटा है।

पुलिस के अनुसार शंकर लाल परिवार सहित महेश नगर में रहते है। वह दो दिन पहले ही फैक्ट्री पर आए थे और यहां ठहर गए। घटना वाली रात मैनेजर से बातचीत कर खाना खाकर अपने कमरे में सोने चले गए थे, लेकिन सुबह उनका शव बैड पर पडा मिला। सेल्फॉस खाकर उन्होंने आत्महत्या कर ली थी।

रिश्वतखोरों को रिमांड पर भेजा

भीलवाड़ा, (निसं)। करीब 18 लाख रुपए की राशि के साथ एसीबी की गिरफ्त में आये आरोपी तहसीलदार लालाराम यादव सहित सभी पांच आरोपितों को बुधवार को एसीबी ने एसीबी कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें 15 दिन के लिए जेसी रिमांड पर भेज दिया गया। एसीबी मुख्यालय, जयपुर के एएसपी राजेंद्र सिंह नैन ने बताया कि शिकायत के बाद निगरानी के दौरान एसीबी को पता चला कि भीलवाड़ा तहसीलदार लालाराम यादव ने अपने भाई पूरणमल यादव निवासी सेवापुरा, चाकसू के बैंक खाते में एक पक्षकार से 3 लाख रुपये खाते में डलवाये। सूचना को डवलप कर सूत्र एकत्रित किये गए। इसके बाद पीसी एक्ट के तहत एसीबी मुख्यालय ने सोमवार को मामला दर्ज किया। इस मामले में एसीबी ने तहसीलदार यादव, उसके भाई सहित पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर आज भीलवाड़ा एसीबी कोर्ट में पेश किया, जहां से इन सभी को 15 दिन जेसी रिमांड पर भेज दिया गया।

लूट का फरार चल रहा आरोपी बीकानेर से गिरफ्तार

भीलवाडा, (निसं)। जिले के जहाजपुर कस्बे में 2012 में एक सर्राफा व्यापारी पर हमला कर दो लाख रुपये की नकदी लूट के मामले में जमानत मिलने के बाद से फरार आरोपित प्रदीप उर्फ लंगडा को पुलिस ने बीकानेर से दोबारा गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। यह आरोपित नाम बदल कर नोखा में रह रहा था, जो पुलिस के आने की भनक लगने पर बीकानेर में खुली जेल में रह रहे परिचित बंदी के पास जाकर छिप गया था।

जहाजपुर पुलिस के अनुसार छीपो का मोहल्ला जहाजपुर निवासी श्यामलाल पुत्र भैंरूलाल सोनी ने 9 जनवरी 2012 को जहाजपुर सीएचसी में इलाज के दौरान जहाजपुर पुलिस को बयान दिये कि रोजना की भांति घटना के दिन भी वह रात करीब 8.30 बजे गीताजंली ज्वैलर्स शॉप को बंद कर घर रवाना हो रहा था। दुकान के जेवरात दो बैगों में भरे थे। इनमें साढे बारह सौ ग्राम सोने व 20 से 25 किलो चांदी के जेवरात और 2 लाख रुपये की नगदी थी। इस दौरान अचानक दो मोटरसाइकिल वाले रोड से गुजरे, जिन्होंने उसकी दुकान के आगे दिल्ली गेट की तरफ मोटरसाइकिल खडी कर दी और नीचे उतर कर उसके पास आये। आते ही इन लोगों ने उसके सिर में पीछे से डंडे से वार किया, जिससे वह नीचे गिर पड़ा। दोनों बदमाश परिवादी के नकदी व गहने रखे दोनों बैग लूटकर मोटरसाइकिल से भाग निकले। पडौसियों ने उसे अस्पताल पहुंचाया। इसे लेकर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। पुलिस ने मामले में शास्त्रीनगर गुलाबपुरा निवासी प्रदीप उर्फ लंगडा व उसके साथियों को गिरफ्तार किया। आरोपित प्रदीप उर्फ लंगड़ा को बाद में जमानत मिल गई। जमानत पर रिहा होने के बाद वह एक महिला को फरार कर भाग गया था। इसके बाद वह पेशी पर कोर्ट में उपस्थित नहीं हो रहा था। इस दौरान आरोपित के बीकानेर के नोखा में होने की भनक पुलिस को लगी।

इस पर एक टीम नोखा भेजी गई। इसकी भनक प्रदीप को लग गई। वह, नोखा से भी फरार हो गया। करीब पांच दिन के प्रयास के बाद आरोपित के बीकानेर खुली जेल में एक बंदी के पास छिपा होने का पता चला। इस पर टीम आरोपित प्रदीप को दबोच कर जहाजपुर ले आई, जहां उसे न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस ने बताया की प्रदीप उर्फ लंगड़ा फरारी काटने के लिए नोखा पहुंच गया। जहां उसने अपना नाम प्रदीप से बदल कर शेखर पंडित रख लिया। इतना ही नहीं, इस नाम का उसने आधार कार्ड भी बना लिया था। वह एक पार्ट्स की दुकान पर काम कर रहा था। आरोपित प्रदीप पर रायला में भी वर्ष 2015 में ट्रक लूटने का आरोप है।

माइनिंग टूल्स के गोदाम से चोरी के आरोप में एक और गिरफ्तार

मामले में पुलिस ने पूर्व दो आरोपियों को किया गया था गिरफ्तार

राजसमंद, (निसं)। जिले के राजनगर थाना क्षेत्र के सनवाड चौराहे पर स्थित एक माईनिंग टूल्स गोदाम व दूकान से नकदी सहित दूकाने में लगे छोटे मंदिर से चांदी की मूर्तियां, सिक्का व सामान चुराने के मामले में राजनगर थाना पुलिस ने एक ओर आरोपी को गिरफ्तार किया है। इससे पूर्व पुलिस ने मामले में दो आरोपियों पंकज उर्फ पवन पुत्र सुरेशचन्द्र गर्ग निवासी आसावरा थाना भदेसर एवं गोवर्धन पुत्र रतनलाल प्रजापत निवासी रूद थाना राशमी जिला चित्तौडगढ़ को गिरफ्तार किया जा चुका है।

थानाधिकारी डॉ. हनवंतसिंह राजपुरोहित ने बताया कि गत 6 नवम्बर को प्राथी अमित बडोला पुत्र बसंत कुमार बडोला निवासी नायकवाडी राजनगर ने थाने में गोदाम व दूकान से अज्ञात बदमाशों द्वारा चोरी रिपोर्ट दर्ज करवाई। जिसमें बताया कि सनवाड चौराहा पर स्थित माईनिंग टूल्स का गोदाम व दूकान से रात्रि को अज्ञात बदमाशा ताला

राजसमंद के सनवाड चौराहा स्थित गोदाम व दूकान से हुई चोरी के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

तोड़कर दूकान में घुसकर टेबल की ड्रोवर में रखे करीब 1000-1500 रुपए नकद, दूकाने में लगे छोटे मंदिर में रखे चांदी के गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्ति, चांदी का सिक्का एवं गोदाम से सामान चुरा करा कर ले गए। पुलिस ने रिपोर्ट पर चोरी का मामला दर्ज कर छानबीन प्रारंभ कर दी। आरोपियों की धरपकड के लिए एसपी सुधीर चौधरी, एएसपी शिवलाल बैरवा, डीएसपी बेनीप्रसाद मीणा के निर्देशन एवं थानाधिकारी डॉ. राजपुरोहित के नेतृत्व में टीम का गठन करते हुए सउनि सुखलाल, कोंस्टेबल सुभाष, दिनेश, राजेश को शामिल कर तलाश प्रारंभ की गई। पुलिस ने संभावित जगहों पर दबिश देते हुए मुखबीर की सूचना पर पूर्व में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

इसके बाद तलाश जारी रखते हुए विनोद पुत्र भगवानलाल भाट निवासी गणेशपुरा थाना सदर जिला चित्तौडगढ को गिरफ्तार किया गया। पुलिस द्वारा आरोपी से पूछताछ किए जाने पर माईनिंग टूल्स का गोदाम व दूकान से चोरी किया जाना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी का माल भी बरामद किया गया। मामले को लेकर पुलिस द्वारा अनुसंधान जारी है।

फर्जी शादी कराने वाले गिरोह की दो महिला गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। सलूम्बर थाना पुलिस ने फर्जी शादी करा पीड़ित के साथ धोखाधड़ी करने के मामले में गिरोह की दो महिलाओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार 7 जनवरी 2022 को रून्देला निवासी दुर्जनसिंह ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि मेरी शादी नहीं हो रही थी इसपर मेरे भाई फतहसिंह ने सनसिटी निवासी हेमराज सिंह से बात की।

15 जुलाई 2021 को हेमराज सिंह टोड़ा स्थित राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय में बातचीत करने गए। शादी तय होने पर 16 जुलाई को मैं व भाई फतहसिंह, हेमराजसिंह, देवीसिंह निवासी डाल के साा भोपाल में वेरागढ़ गए। जहां लड़की पसंद की। 17 जुलाई को ढाई लाख रूपये देने पर आरोपी लड़की लेकर सलूम्बर आए मेरी शादी कराई जिसे जेवरात व नकदी दी दस दिन रहने के बाद काका की तबीतयत खराब होने का झांसा देकर मेरी पत्नी रेखा चली गई। इस मामले में बैरछा दातार कालीपीपली शाजापुर एमपी निवासी रजनी पत्नी गुलाबसिंह, रेखा पत्नी शिवलाल उर्फ शिब्बु निवासी रायसेन हॉल खेड़ा रोड़ आनन्द नगर पीपलानी भोपाल को प्रोडक्शन वारंट जरिये गिरफ्तार किया।

'पुलिस ने रेप को एक्सीडेंट बताने की कोशिश की तो पूरे प्रदेश में आंदोलन करेंगे'

अलवर, (निसं)। अलवर में मूकबधिर नाबालिग के साथ हुई दरिंदगी की घटना का पुलिस खुलासा नहीं कर सकी है। लेकिन प्रदेश भर में विरोध थम नहीं रहा। बुधवार को भी भाजपा ने मण्डल स्तर पर सरकार को घेरा। अलवर शहर में भी मुख्यमंत्री का पुतला जलाया। सरकार पर मामले को दबाने का आरोप लगाया।

अलवर शहर विधायक संजय शर्मा ने कहा कि अलवर एसपी तेजस्वनी गौतम ने घटना के दिन रेप होने का बयान दिया था। लेकिन बाद में मेडिकल रिपोर्ट का हवाला देते हुए रेप होने से मना कर दिया। फिर समाज के लोगों का और आमजन का विरोध बढ़ा तो एसपी ने कहा कि हर एंगल से जांच कर रहे हैं। रेप की आशंका से भी मना नहीं किया। लेकिन अब पुलिस इसे एक्सीडेंट मान चुकी है। इस तरह की बातें सामने आ रही हैं। इस कारण भाजपा ने प्रदेश भर में सरकार के खिलाफ विरोध किया है। अधिकारी सरकार के दबाव में आकर मामले को दबाने में लगे हैं। लेकिन एसपी के बयान से राज्य सरकार

- भाजपा विधायक ने कहा एसपी बार-बार बयान बदल रहीं हैं, पहले रेप माना, फिर मना किया, अब बोल रहीं हैं रेप से इंकार नहीं

घिरती नजर आ रही है आमजन इसे बर्दाश्त नहीं करेगा।

भाजपा के पदाधिकारियों ने कहा कि पुलिस ने रेप को एक्सीडेंट बताने की कोशिश की तो पूरे प्रदेश में आंदोलन करेंगे। सरकार को हर जगह घेरा जाएगा। अभी मण्डल स्तर पर विरोध हुआ है। आगे जयपुर भी जनता कूच कर आंदोलन कर सकती है।

अब लोगों का कहना है कि पुलिस के खुलासे का इंतजार है। जैसा खुलासा होगा उसके अनुसार विरोध होगा। पुलिस की जांच में सही तथ्य नहीं आने तक विरोध होगा। बेटी के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। दिल्ली गुरुद्वारा कमेटी के प्रतिनिधिमण्डल भी अलवर आकर अपना विरोध दर्ज करा चुके हैं।

प्रदेश में मंगलवार की तुलना में साढ़े तीन हजार नए करोना संक्रमित अधिक मिले बुधवार को

राज्य में बुधवार को 13 हजार 398 नए संक्रमित सामने आए, इससे पहले मंगलवार को 9711 रोगी पाए गए थे

-कार्यालय संवाददाता-

- पिछले चौबीस घंटों में सर्वाधिक 3310 नए मरीज जयपुर में जबकि अलवर में 1244 और जोधपुर में 1212 नए संक्रमित मिले हैं।
- प्रदेश में बुधवार को करोना से 12 और संक्रमितों की मौत हो गई है।
- इस बीच, राज्य में 8213 मरीज ठीक हुए, वहीं एक्टिव केस बढ़कर 73 हजार से अधिक हो गए हैं।

जयपुर। प्रदेश में करोना संक्रमण बेकाबू होता जा रहा है। इसके चलते बुधवार को मंगलवार की तुलना में साढ़े तीन हजार से ज्यादा मामले बढ़ने के साथ ही 13 हजार 398 नए संक्रमित मिले हैं। इनमें जयपुर, अलवर और जोधपुर में सर्वाधिक नए रोगी पाए गए हैं। इधर पिछले चौबीस घंटों में राज्य में करोना से 12 और संक्रमितों की मौत हो गई है। हालाकि 8 हजार से ज्यादा मरीज ठीक भी हुए हैं।

प्रदेश में करीब एक सप्ताह तक करोना संक्रमितों का आंकड़ा नौ हजार पर रहने के बाद बुधवार को इसमें काफी वृद्धि हुई है। इस दौरान राज्य में 13 हजार 398 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले मंगलवार को 9711 रोगी पाए गए थे। इधर राजधानी जयपुर में भी नए संक्रमितों की संख्या में भारी इजाफा हुआ है। जिले में पिछले चौबीस घंटों में 3310 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा अलवर में 1244, जोधपुर में 1212, उदयपुर में 876, अजमेर में 587 और चित्तौड़गढ़ में 568 नए मरीज पाए गए हैं। वहीं कोटा में 429, भरतपुर में 421, सीकर में 382, पाली में 380, बीकानेर में 368, गंगानगर में 310, बाड़मेर में 294, सवाई माधोपुर में 291, डूंगरपुर में 281, भीलवाड़ा में 277, झुंझुनूं में 258, चूरू में 203, टोंक में 192, प्रतापगढ़ में 181, झालावाड़ में 150, सिरोही में 147, राजसमंद में 145, दौसा में 140, धौलपुर में 139, नागौर में 125, करौली में 106, बारां में 93, हनुमानगढ़ में 85, जैसलमेर में 69, बांसवाड़ा व बूंदी में 59-59 और जालौर में 17 नए संक्रमित मिले हैं। इसके साथ ही राज्य में संक्रमण दर बढ़कर 18.23 फीसदी हो गई है।

इधर राज्य में बुधवार को रिकवरी में और सुधार हुआ है। इस दौरान 8 हजार 213 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ ही प्रदेश में अब तक इस बीमारी से 9 लाख 86 हजार 412 लोग स्वस्थ हो चुके हैं। हालाकि प्रदेश में नए संक्रमितों में लगातार वृद्धि होने से एक्टिव केस बढ़कर 74 हजार 561 हो गए हैं। इनमें सबसे ज्यादा 20829 मरीज जयपुर जिले में है। इसके अलावा अलवर में 6657, जोधपुर में 5284, उदयपुर में 4518, कोटा में 3145, भरतपुर में 3181, बीकानेर में 3016, पाली में 2552, अजमेर में 2500, बाड़मेर में 2316, भीलवाड़ा में 1924, चित्तौड़गढ़ में 1878, हनुमानगढ़ में 1730, सीकर 1552, सवाईमाधोपुर में 1489 और गंगानगर में 1121 तथा शेष जिलों में इससे कम मामले हैं।

वहीं दूसरी ओर प्रदेश में करोना से होने वाली मौतें के आंकड़े में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। राज्य में बुधवार को भी करोना से 12 और संक्रमितों की मौत हुई है। इनमें जयपुर में 3, जोधपुर और बीकानेर में 2-2 तथा अजमेर, अलवर, दौसा, कोटा और सीकर में 1-1 मरीज की मौत हुई है। प्रदेश में पिछले 19 दिनों में करोना से 67 लोगों की जान जा चुकी है। हालाकि राज्य में अब तक इस बीमारी से 9031 लोगों की मौत हो चुकी है।

प्रदेश में कोविड संक्रमण की दर एक सप्ताह में दुगुनी, 7.61 प्रतिशत से बढ़कर 15.52 तक पहुंची

- सर्दी-खांसी के मरीजों की प्राथमिकता से जांच की जाये
- केंद्र से 12 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों का टीकाकरण शुरू करने की मांग

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में बुधवार को हुई राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक में कोविड के बढ़ते संक्रमण पर चिंता जताई गई। कैबिनेट ने संक्रमण की रोकथाम के लिए कोविड प्रोटोकॉल की प्रभावी पालना और शत-प्रतिशत टीकाकरण पर जोर दिया।

बैठक में बताया गया कि पिछले कुछ सप्ताह से पॉजिटिविटी दर लगातार बढ़ रही है। मात्र एक सप्ताह में यह दर 7.61 प्रतिशत से बढ़कर 15.52 प्रतिशत तक अर्थात् दोगुनी हो चुकी है। संक्रमण की इस गति को रोकने के लिए जरूरी है कि आमजन के द्वारा कोविड प्रोटोकॉल की निरंतर पालना की जाए। साथ ही संक्रमण को रोकने के लिए फोकस्ड सैम्पलिंग की जाए। जिन लोगों में सर्दी, खांसी, जुकाम के लक्षण हैं, उनकी प्राथमिकता से जांच हो।

यह भी बताया गया कि इस वायरस से छोटी आयु के बच्चे भी संक्रमित हो रहे हैं। देश की भावी पीढ़ी का जीवन सुरक्षित करना बेहद जरूरी है। दुनिया के कई देशों में 2 साल की आयु तक के छोटे बच्चों को वैक्सीन लग रही है, लेकिन भारत में फिलहाल 15 से 18 साल तक के किशोर वर्ग का वैक्सीनेशन हो रहा है। चूंकि हमारे देश के बच्चों में पोषण से संबंधित समस्याएं पहले से ही हैं। ऐसे में 12 साल से अधिक आयु के बच्चों का वैक्सीनेशन जल्द शुरू होना चाहिए। केन्द्र सरकार इस सम्बन्ध में जल्द निर्णय ले। बैठक में कहा गया कि केन्द्र सरकार ने प्रिकॉशन डोज 60 वर्ष से अधिक के को-मोर्बिड व्यक्तियों के लिए अनुमत की है, जबकि चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार को-मोर्बिड की स्थिति हर आयुवर्ग में हो सकती है। इसे देखते हुए बूस्टर डोज हर वर्ग के लिए अनुमत की जानी चाहिए। साथ ही प्रिकॉशन डोज के लिए 9 माह के अन्तराल को कम कर इसे 3 से 6 माह किया जाना आवश्यक है।

चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा ने कहा कि प्रदेश में तीसरी लहर से मुकाबले के लिए पूरी तैयारी है। 18 वर्ष से अधिक आयु के 94.4 प्रतिशत लोगों को पहली तथा 78 प्रतिशत लोगों को दूसरी डोज लगा दी गई है। साथ ही 56.5 प्रतिशत किशोर-किशोरियों को पहली डोज लगाई जा चुकी है। इन सभी में राजस्थान का प्रदर्शन राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। दिसम्बर माह में 1 करोड़ 31 लाख लोगों को वैक्सीन की डोज लगाई गई थी। जनवरी माह में भी इसी भावना के साथ वैक्सीनेशन किया जा रहा है। शासन सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य आशुतोष एटी पेंडनेकर ने कोविड संक्रमण की स्थिति, तीसरी लहर से मुकाबले के लिए विकसित की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं एवं वैक्सीनेशन के संबंध में विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया कि बीते सप्ताह में एक्टिव केसेज की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई और वर्तमान में 69 हजार से अधिक एक्टिव केसेज हैं।

भाजपा के "आजीवन समर्पण निधि" अभियान में होगा डिजिटल ट्रांजेक्शन

- भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने की अभियान की शुरूआत
- अब यूपीआई के ज़रिये भी कार्यकर्ता दे सकेंगे अपना सहयोग, 100 करोड़ रु. जुटाने का लक्ष्य
- प्रधानमंत्री मोदी के आव्हान पर चल रहा है अभियान

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतीश पूनियां, उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ और संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर ने बुधवार को "आजीवन समर्पण निधि" अभियान के डिजिटल ट्रांजेक्शन प्रक्रिया की शुरुआत की।

जयपुर (कासं)। प्रदेश भाजपा की ओर से "आजीवन समर्पण निधि" अभियान के तहत पार्टी के कार्यकर्ताओं और आमजन से निधि संग्रहण का सिलसिला जारी है। पार्टी कार्यकर्ता घर-घर जाकर पार्टी फंड के लिए निधि संग्रहित कर रहे हैं। हालांकि कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए पार्टी ने अब इस अभियान का डिजिटल फॉर्मेट शुरू किया है, जिसके तहत ऑनलाइन माध्यम से निधि संग्रहण का भी विकल्प रहेगा। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतीश पूनियां, उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ और संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर ने बुधवार को इस डिजिटल ट्रांजेक्शन प्रक्रिया की शुरुआत की। पूनिया ने डिजिटल माध्यम से एक हजार रुपए निधि में दिए। इस प्रक्रिया में यूपीआई के माध्यम से भी कार्यकर्ता और आमजन पार्टी फंड में अपना आर्थिक सहयोग दे सकेगा।

गौतलब है कि भाजपा का निधि संग्रहण अभियान पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती 25 दिसंबर से शुरू हुआ है, जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि 11 फरवरी तक जारी रहेगा। इस दौरान ना सिर्फ कार्यकर्ता ही पार्टी फंड में योगदान दे रहे हैं, बल्कि घर-घर दस्तक देकर आमजन से भी निधि सहयोग की भी अपील कर रहे हैं। प्रदेश भाजपा ने आजीवन सहयोग निधि अभियान के तहत विशेष सूक्ष्मदान अभियान भी शुरू किया है।

बताया जा रहा है कि अभियान के तहत भाजपा ने एक करोड़ लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है। हर किसी से 100 रुपए के हिसाब से निधि ली जा रही है। इस हिसाब से राजस्थान में 100 करोड़ जुटाने का लक्ष्य रखा गया है। अभियान के तहत जिला स्तर पर निधि जुटाने का काम तेज़ हो गया है।

समर्थन मूल्य पर मूंग और मूंगफली खरीद की पंजीयन सीमा को 20 प्रतिशत बढ़ाया

जयपुर, (का.सं.)। सहकारिता मंत्री उदयलाल आंजना ने बुधवार को बताया कि राज्य में समर्थन मूल्य पर मूंगफली के 7 जिलों (बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, सीकर एवं टोंक) के 24 तथा मूंग के 11 जिलों (अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, झुंझुनू, जोधपुर, नागौर, सीकर एवं टोंक) के 48 खरीद केन्द्रों पर पंजीयन सीमा को 20 प्रतिशत बढ़ाया है। मूंग के लिए 23 जनवरी तक मूंगफली के लिए 5 फरवरी तक किसान क्रय केन्द्र या ई-मित्र केन्द्रों पर पंजीयन करा सकते है।

आंजना ने बताया कि खरीफ 2021 में समर्थन मूल्य पर मूंग, उड़द एवं मूंगफली की अब तक 489 करोड़ रुपये की खरीद कर ली गयी है। भारत सरकार द्वारा स्वीकृत 90 दिवस की खरीद अवधि के तहत 29 जनवरी तक मूंग, उड़द एवं सोयाबीन की खरीद होगी तथा मूंगफली की खरीद 15 फरवरी तक होगी। अब तक कुल पंजीकृत 98 हजार 149 किसानों में से 93 हजार 475 किसानों को जिन्स तुलाई की दिनांक राजफैड़ द्वारा आवंटित कर दी गयी है। सोयाबीन के बाजार भाव समर्थन मूल्य दर से अधिक होने के कारण किसानों द्वारा समर्थन मूल्य योजना में सोयाबीन का बेचान नहीं किया गया है

सहकारिता मंत्री ने बताया कि इस वर्ष असमय वर्षा होने के कारण मूंग की गुणवत्ता प्रभावित हुई है जिससे कई मण्डियों में बदरंग व क्षतिग्रस्त मूंग की मात्रा अधिक है। इस पर भारत सरकार को मूंग के गुणवत्ता मापदण्डों में क्षतिग्रस्त दानों की स्वीकार्य मात्रा 3 प्रतिशत के स्थान पर 10 प्रतिशत मात्रा तक खरीद करने की अनुमति प्रदान करने हेतु अनुरोध किया गया था। भारत सरकार द्वारा इस अनुरोध को स्वीकार न कर मूंग की निर्धारित गुणवत्ता मापदण्डों के अनुरूप ही खरीद करने के निर्देश दिये गये है।

प्रबंध निदेशक राजफैड सुषमा अरोड़ा ने बताया कि 21 हजार 900 किसानों से 41 हजार 561 मीट्रिक टन मूंग खरीदा गया है। जिसकी राशि लगभग 302 करोड़ रूपये है। 14 हजार 814 किसानों से 33 हजार 647 मीट्रिक टन मूंगफली की खरीद की गई है। जिसकी राशि 187 करोड़ रूपये है।

एसओजी ऑफिस पर सांसद किरोड़ी का धरना

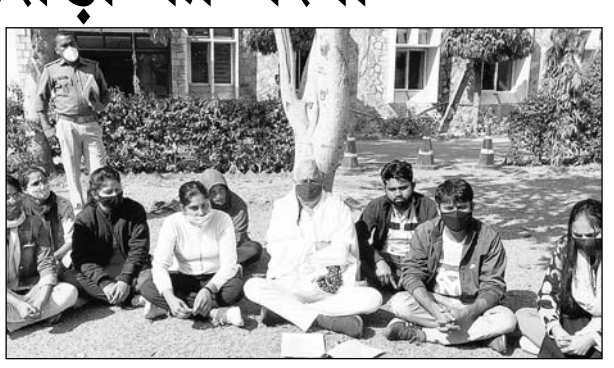

रीट, एसआई और जेईएन भर्ती परीक्षा में धांधली करने वाले मुख्य आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर बुधवार को सांसद किरोड़ीलाल मीणा ने एसओजी के ऑफिस पर धरना दिया।

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । प्रदेश के करीब 26 लाख अभ्यर्थियों की रीट, एसआई एवं जेईएन भर्ती परीक्षा में एक के बाद एक हुई धांधली में अब तक कोई कार्रवाई ना होने का आरोप लगाते हुए सांसद डॉ. किरोड़ीलाल मीणा बुधवार को एसओजी दफ्तर के बाहर धरने पर बैठ गए। मीणा ने आरोप लगाया कि अब तक "मगरमच्छों" की गिरफ्तारी नहीं होने से सवाल खड़े हो रहे हैं। रीट मामले में अब तक सीबीआई जांच के आदेश क्यों नहीं हुए?

डॉक्टर किरोड़ीलाल ने छात्रों के साथ एसओजी दफ्तर के बाहर धरना देते हुए कहा कि रीट भर्ती परीक्षा में धांधली को लेकर वे कई बार मय दस्तावेजों के सबूत दे चुके हैं। छोटी मछलियों को तो पकड लिया, लेकिन मगरमच्छ बैखोफ घूम रहे हैं। उन पर अभी तक हाथ नही डाला गया जो शक पैदा करता है। रीट पेपर लीक बहुत बड़ा स्कैम है, जिसकी जांच सीबीआई से होनी चाहिए थी, किन्तु सरकार के परोक्ष एवं अपरोक्ष लिप्त होने के कारण यह मामला सीबीआई को नहीं दिया जा रहा है। दोबारा परीक्षा आयोजन को लेकर भी कोई फैसला नहीं किया गया। मीणा ने चेतावनी दी कि इस मामले में ठोस कार्रवाई नहीं की गई तो वे सत्याग्रह करने को मजबूर होंगे।

किरोड़ीलाल मीणा ने कहा कि एसओजी को सौंपे ज्ञापन के बिंदुओं में उठाए सवालो में प्रमुख हैं उनमें मास्टर माइंड भजनलाल विश्नोई को अभी तक क्यों नहीं पकड़ा गया? उसे गिरफ्तार कर पूछताछ की जाये। बाड़मेर के हिस्ट्री शीटर तथा मास्टर माइंड भंवरलाल से अभी तक पूछताछ क्यों नहीं की गई।

श्री अग्रसेन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय हिण्डौनसिटी के केन्द्राधीक्षक तथा शिकायतकर्ता परीक्षार्थियों से अब तक पूछताछ नहीं किया जाना समझ से बाहर है ? उनसे पूछताछ की जाये।

बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. डी.पी. जारोली की सरपरस्ती में पेपर लीक का काण्ड हुआ, जिनसे आज तक पूछताछ नही की गई। डॉ. जारोली व प्रदीप पाराशर से पूछताछ किया जाना नितान्त आवश्यक है। रीट परीक्षा के लिए जयपुर का समन्वयक एक गैर सरकारी व्यक्ति प्रदीप पाराशर को बनाया गया, जो डा. डी.पी. जारोली का घनिष्ठ मित्र है, उसे ये जिम्मेदारी क्यो दी गई ?

जयपुर के समन्वयक खुद तो गैर सरकारी व्यक्ति है, उन्होने अपने नीचे चार और गैर सरकारी व्यक्तियों को लगाया, ये चारों व्यक्ति 22 से 25 सितम्बर के बीच पेपर वितरण जैसे अति गोपनीय कार्य में शामिल थे। शिक्षा संकुल में जहां पेपर रखे गये, वहां ये चारों व्यक्ति मौजूद रहे। परीक्षा केन्द्रों तक भी गये थे। क्या इस तरह की जानकारी एसओजी ने ली है। यदि नहीं तो इस सम्बन्ध में जांच की जाये। 24 सितम्बर 2021 को डॉ. डी.पी. जारोली ने शिक्षा संकुल में जो बैठक ली, उसमें ये चारों व्यक्ति भी मौजूद थे। इन चारों व्यक्तियों ने ही पेपर निकाला और उसे आगे पहुंचाया इस प्रकरण पर पूछताछ क्यों नही की ? इन चारों लोगों के नाम डॉ. डी.पी. जारोली व प्रदीप पाराशर को पता है, एसओजी इनका नाम उजागर क्यों नही कर रही है ?

पेपर लीक प्रकरण में एकत्रित की गई 90 लाख रु. की राशि को लेकर कैलाश चन्द मीना पुत्र सेवाराम मीना थाना बालघाट (जिला करौली) उसके दो साथी रूपेश कुमार एवं विष्णु जाट ने मिलकर हत्या कर 90 लाख रू को डकार गये, जिसकी एफआईआर 298/2021 थाना बालघाट में दर्ज हुई, इन दोनों से भी आजक पूछताछ नहीं की।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के गोपनीय शाखा के अधिकारी जी.के. माथुर एक अन्य प्रकरण में एसीबी की जांच में संदिग्ध पाये गये, इसके बाद भी इन्हें वापस बोर्ड में रिटायर्ड होने के बाद गोपनीय शाखा में लगा दिया। अब तक इनसे पूछताछ नहीं की। इसलिए माथुर से पूछताछ की जाये।

इन बिन्दुओं के अलावा एसओजी के समक्ष कई प्रमाण प्रस्तुत किये गये है, जिससे रीट पेपर का बडे पैमाने पर लीक होनो प्रमाणित है, किन्तु लम्बे समय से एसओजी की चुप्पी शक पैदा करती है। राज्य के बेरोजगारों का भरोसा एसओजी से उठता जा रहा है।

रोड़वेज में वैवाहिक पुत्री को अनुकम्पा नियुक्ति जल्द

जयपुर। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम संचालन मण्डल ने वैवाहिक पुत्री को अनुकम्पा नियुक्ति देने के लिए निगम संचालक मण्डल में प्रस्ताव पास कर राज्य सरकार कोअनुमोदन के लिए भेजा गया हैं। राज्य सरकार द्वारा चाहे गये संशोधन कर प्रस्ताव पुन: राज्य सरकार को भेजा गया हैं, जिस पर जल्द अनुमति मिलने की संभावना है।

राजस्थान रोडवेज प्रबन्धन ने 25 से ज्यादा मृत कर्मचारी के आश्रित के तौर पर उनकी विवाहित पुत्रियों द्वारा अनुकम्पा नियुक्ति के लिए आवेदन किया हुआ था। अनुकम्पा नियुक्ति विनियमों में वैवाहिक पुत्री को अनुकम्पा नियुक्ति का प्रावधान नहीं होने पर सितम्बर माह में वैवाहिक पुत्री को अनुकम्पा नियुक्ति देने के लिए निगम संचालक मण्डल में प्रस्ताव प्रस्तुत कर अनुमोदन करवाया।

रोडवेज प्रबन्धन ने अनुकम्पा नियुक्ति के विनियमों में वैवाहिक पुत्री को नियुक्ति देने का प्रावधान करने के लिए राज्य सरकार से अनुमति चाही गई जिस पर राज्य सरकार द्वारा कुछ संशोधन प्रस्तावित किये गये। प्रस्तावित संशोधनों को करते हुये अनुमोदन के लिये राज्य सरकार को पुन: भिजवाया गया है, जिस पर जल्द ही अनुमति मिलने की संभावना हैं।

गहलोत सरकार किसानों की कर्जमाफी के बजाय उनकी जमीनें नीलाम कर रही : राजेन्द्र राठौड़

जयपुर (कासं)। राष्ट्रीयकृत और ग्रामीण विकास बैंकों से कर्जा लेने वाले किसानों की जमीनों की नीलामी शुरू हो गई है। इसे लेकर राज्य सरकार विपक्ष के निशाने पर है। भाजपा नेताओं ने कहा है कि सरकार की इस करतूत से उनका किसान विरोधी चेहरा बेनकाब हुआ है।

उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि राजस्थान सरकार का असली चेहरा सामाने आ गया है। किसानों की जमीनें बिकना शुरू हो गई है। ग्रामीण व राष्ट्रीयकृत बैंकों से जिन 16 लाख किसानों ने कर्जा लिया, उन पर ब्याज लगता गया। किसान गुमराह होता गया। अब किसानों की जमीनों की नीलामी का सिलसिला शुरू हो गया है। मजबूर होकर किसान को आत्महत्या करनी पडेगी। राज्यसभा सांसद किरोडी लाल मीणा ने कहा कि दौसा और लालसोट में राज्य सरकार द्वारा एक किसान की जमीन कुर्की की गई थी, और सदमे में आकर किसान ने आत्महत्या कर ली है। कांग्रेस के राजकुमार राहुल बाबा आपने तो राजस्थान में पूर्ण कर्ज माफ़ी के लिए 10 तक गिनती गिनी थी। आपको यह कर्ज माफ़ी का वादा याद है या वीडियो भेज कर याद दिलाएं। इस प्रकरण को लेकर राज्यसभा सांसद किरोडी मीणा लालसोट में पीड़ित परिवार से मिले।

भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री अलका गुर्जर ने कहा कि किसान कर्जामाफी के नाम पर सत्ता में आई सरकार ने किसानों को परेशान करना शुरू कर दिया है। इनके युवराज ने 10 तक गिनती की थी वो कर्जामाफी तो हुई नहीं, लेकिन निवाला छीनने का काम किया जा रह है। अलवर, चौमूं सहित कई जगहों पर किसानों की जमीन नीलामी के नोटिस आने लगे हैं। इनका नारा था अब होगा न्याय.. क्या इस तरह किसानों की जमीन छीनकर सरकार न्याय देगी।

प्रदेश मुख्य प्रवक्ता रामलाल शर्मा ने कहा कि किसान कर्जामाफी छोड़ सरकार के इशारे पर किसानों को नीलामी के नोटिस दिए जा रह हैं। मेरी विधानसभा चौमूं में 53 लोगों की जमीन नीलाम करने की उपखंड अधिकारी ने संबंधित पटवारी को निर्देशित किया है। रामलाल ने कहा कि चौमूं में अगर किसी ने बोली लगाई या खरीदने की कोशिश की तो उचित नहीं होगा। गरीब किसान की जमीन को ओने-पौने दामों में नीलाम कर उसे घर से बेघर करने की साजिश रची जा रही है, जो अनुचित है और गलत है।

पत्रकार, कवि और लेखक मेघराज श्रीमाली का निधन

जयपुर (कासं)। पत्रकार, कवि, लेखक और राजस्थान के पांच मुख्यमंत्रियों के प्रेस अटैची रहे मेघराज श्रीमाली का मंगलवार रात सवा 11 बजे निधन हो गया। वह 91 साल के थे। उन्होंने आखिरी सांस अपने वैशाली नगर स्थित निवास स्थान पर ली। वह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। दो माह पूर्व ही उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हुआ था। वे अपने पीछे प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना प्रेरणा श्रीमाली, कॉरपोरेट प्रबंधक मनोज श्रीमाली और 'बालिका वधु' धारावाहिक के लेखक के रूप में ख्याति अर्जित करने वाले लेखक पूर्णेन्दु शेखर को छोड़ कर गए हैं।

बावुमा और डेर के शतकों से जीता द.अफ्रीका

भारत को 31 रनों से हराया

पार्ल, 19 जनवरी। कप्तान तेम्बा बावुमा (110) और रैसी वान डेर डुसेन (नाबाद 129) के शानदार शतकों तथा उनके बीच चौथे विकेट के लिए 204 रन की जबरदस्त साझेदारी की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने भारत को पहले वनडे में बुधवार को 31 रनों से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली।

दक्षिण अफ्रीका ने 50 ओवर में चार विकेट पर 296 रन का मजबूत स्कोर बनाया जबकि लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम 50 ओवर में आठ विकेट पर 265 रन ही बना पायी। भारत एक समय दो विकेट पर 152 रन बनाकर जीत की तरफ बढ रहा था लेकिन इसके बाद भारत ने 62 रन जोडकर अपने छह विकेट गंवा दिए। भारत का स्कोर आठ विकेट पर 214 रन हो गया और उसकी हार तय हो गयी।

भारत ने 46 रन की ठोस शुरुआत की लेकिन कप्तान लोकेश राहुल 12 रन बनाकर एडन मारक्रम की गेंद पर विकेटकीपर के हाथों लपके गए। शिखर धवन ने विराट कोहली के साथ दूसरे विकेट के लिए 92 रन की साझेदारी की। शिखर ने 84 गेंदों में 10 चौकों की मदद से 79 रन बना लिए थे लेकिन लेफ्ट आर्म स्पिनर केशव महराज ने उन्हें बोल्ड कर दिया।

कप्तानी से मुक्त होने के बाद खेल रहे विराट ने अपना अर्धशतक पूरा कर लिया लेकिन इसके बाद वह चाइनामैन गेंदबाज तबरेज शम्सी की गेंद पर बावुमा के हाथों लपके गए। विराट ने 63 गेंदों पर 51 रन में तीन चौके लगाए। विराट का विकेट गिरते ही भारत का संघर्ष भी समाप्त हो गया। ऋषभ पंत 16 और श्रेयस अय्यर 17 रन बनाकर आउट हुए। पदार्पण मैच खेल रहे वेंकटेश अय्यर दो रन बनाकर पवेलियन लौट गए। शार्दुल ठाकुर ने एकतरफा संघर्ष करते हुए हार का अंतर कम किया। ठाकुर ने आखिरी गेंद पर अपना अर्धशतक पूरा किया। ठाकुर 43 गेंदों में 50 और जसप्रीत बुमराह 23 गेंदों में 14 रन बनाकर नाबाद लौटे। दक्षिण अफ्रीका की तरफ से लुंगिसानी एनगिडी, तबरेज शम्सी और एंडिले फेहुक्वायो ने दो-दो विकेट हासिल किये। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। दक्षिण अफ्रीका ने खराब शुरुआत की और 68 रन तक तीन विकेट गंवा दिए। यानेमन मलान छह रन बनाने के बाद जसप्रीत बुमराह की गेंद विकेटकीपर ऋषभ पंत के हाथों लपके गए। क्विंटन डी कॉक 27 रन बनाकर ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन की गेंद पर बोल्ड हो गए जबकि एडन मारक्रम चार रन बनाकर रन आउट हो गए। इस नाजुक हालत में बावुमा और वान डेर ने समझदारी के साथ बल्लेबाजी की और भारतीय गेंदबाजों को संभल कर खेला। दोनों बल्लेबाजों ने अपने शतक पूरे किये। बावुमा ने अपना दूसरा शतक बनाया जबकि वान डेर ने भी दूसरा शतक बनाया। वान डेर ने अपना सर्वश्रेष्ठ स्कोर भी बनाया। बावुमा को बुमराह ने आउट किया।

स्कोर बोर्ड

दक्षिण अफ्रीका	रन	गेंद	4	6
क्विंटन डी कॉक बो अश्विन	27	72	2	0
यानेमन मलान का पंत बो बुमराह	06	21	1	0
तेम्बा बावुमा का राहुल बो बुमराह	110	200	8	0
एडन मार्क्रम रन आउट	04	10	0	0
वैन डर डुसेन अविजित	129	150	9	4
डेविड मिलर अविजित	02	12	0	0
अतिरिक्त :	18			

कुल: 50 ओवर में चार विकेट पर 296 रन

विकेट पतन: 1-19, 2-58, 3-68, 4-272

गेंदबाजी:-जसप्रीत बुमराह 10-0-48-2, भुवनेश्वर कुमार 10-0-64-0, शार्दुल ठाकुर 10-1-72-0, रविचंद्रन अश्विन 10-0-53-1, युजवेंद्र चहल 10-0-53-0

भारत				
लोकेश का डी कॉक बो मारक्रम	12	17	0	0
शिखर धवन बो महाराज	79	84	10	0
विराट कोहली का बावुमा बो शम्सी	51	63	3	0
ऋषभ स्टं डी कॉक बो फेहलुकवायो	16	22	1	0
श्रेयस का डी कॉक बो एनगिदी	17	17	1	0
वेंकटेश का वान डर डुसेन बो एनगिदा	02	7	0	0
रविचंद्रन अश्विन बो फेहलुकवायो	07	13	0	0
शार्दुल ठाकुर अविजित	50	43	5	1
भुवनेश्वर कुमार का बावुमा बो शम्सी	04	11	0	0
जसप्रीत बुमराह अविजित	14	23	1	1
अतिरिक्त:	10			

कुल: 50 ओवर में आठ विकेट पर 265

विकेट पतन: 1-46, 2-138, 3-152, 4-181, 5-182, 6-188, 7-199, 8-214

गेंदबाजी:एडन मार्क्रम 6-0-30-1, मार्क्र यानसन 9-0-49-0, केशव महराज 10-0-42-1, लुंगी एनगिदी 10-0-64-2, तबरेज शम्सी10-1-52-2, एनडिले फेहलुकवायो 5-0-26-2

बावुमा ने 143 गेंदों पर आठ चौकों की मदद से 110 रन बनाये जबकि वान डेर ने 96 गेंदों पर नाबाद 129 रन में नौ चौके और चार छक्के लगाए। डेविड मिलर ने दो गेंदों पर नाबाद दो रन बनाये।

इंग्लैंड और द.अफ्रीका की जीत में चमके कप्तान

त्रिनिदाद और टोबैगो, 19 जनवरा। दक्षिण अफ्रीका के डेवाल्ड ब्रेविस और इंग्लैंड के टॉम प्रेस्ट ने मंगलवार को यहां आईसीसी अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप में अपनी-अपनी टीम के लिए मैच विजयी कप्तानी पारी खेली।

बेबी एबी के नाम से मशहूर ब्रेविस ने 108 रन बनाए और एक विकेट भी हासिल किया। उनके शानदार प्रदर्शन के कारण दक्षिण अफ्रीका ने त्रिनिदाद में खेले गए युगांडा को 121 रनों से हरा दिया। वहीं, इंग्लैंड के कप्तान प्रेस्ट ने कनाडा के खिलाफ 93 रन की पारी खेली और दो विकेट चटकाए. उमके इस शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड ने कनाडा पर 106 रनों की जीत दर्ज की।

क्वींस पार्क ओवल में पहले बल्लेबाजी करने उतरे युवा दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों ने पावरप्ले में सलामी बल्लेबाज एथन-जॉन कनिंघम (1) और वेलेंटाइन किटाइम (12) का विकेट खो दिया।इसके बाद बल्लबाजी करने उतरे बेबी एबी ने दूसरी और तीसरी गेंद पर बैक-फुट पर शानदार शॉट खेलकर बाउंड्री बटोरी। ब्रेविस ने तेजी से बल्लेबाजी कर गेंदबाजों पर दबाव डाला। उन्होंने काडेन सोलोमन के साथ अर्धशतकीय साझेदारी की। इस बीच दूसरी ओर से विकेट नियमित रूप से गिरते रहे, लेकिन ब्रेविस दूसरे छोर पर जमे रहे और 41 वें ओवर में 108 गेंदों पर शतक पूरा किया और अपनी टीम का स्कोर 200 के पार पहुंचाया। दक्षिण अफ्रीका ने अपने अंतिम पांच विकेट 24 रन के भीतर खो दिए। युगांडा की ओर से जुमा मियागी ने (3-33) और पास्कल मुरुंगी ने (3-58) तीन-तीन विकेट हासिल किए।

लक्ष्य का पीछे करने उतरी युगांडा की टीम ने जल्द ही विकेट खो दिया। बाएं हाथ के एफिवे म्न्यांडा ने दूसरे ओवर में रोनाल्ड ओमारा को पवेलियन भेज दिया। इसके बाद मुतगाना और इसहाक अटेगेका ने पारी को संभाला और स्कोर 33 रन पहुंचाया। म्न्यांडा ने सुलेमान को अपना दूसरा शिकार बनाया। यह पारी की सबसे बडी साझेदारी साबित हुई। युगांडा ने अपने आखिरी पांच विकेट 24 रन पर गंवा दिए। इसके चलते पूरी टीम 110 रनों पर आल आउट हो गई। ग्रुप बी में दक्षिण अफ्रीका का अभियान शुक्रवार को आयरलैंड के खिलाफ समाप्त होगा जबकि युगांडा का सामना शनिवार का ग्रुप लीडर्स भारत से होगा। इस बीच इंग्लैंड जिसे बंगलादेश ने पिछले मैच में केवल 98 रन का लक्ष्य दिया था।

ताला तोड़कर बिलौता मंदिर से चोरी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश

चोरी के मामले में देलवाडा थाना पुलिस ने 5 को किया गिरफ्तार

राजसमंद, (निसं)। जिले के देलवाडा थाना क्षेत्र के बिलौता गांव स्थित लिम्बडिया बावजी मंदिर से चोरी के मामले में देलवाडा थाना पुलिस ने चोरी के गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

साथ ही पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से तीन तलवारें एवं एक बोलेरो गाडी को भी बरामद किया गया। थानाधिकारी उदयलाल ने बताया कि क्षेत्र में लगातार बढ ती चोरियों की वारदातों को लेकर चोरियों पर अंकुश लगाए जाने के लिए एसपी सुधीर चौधरी, एएसपी शिवलाल बैरवा एवं डीएसपी छगन पुरोहित द्वारा बदमाशों की धरपकड के निर्देश प्राप्त हुए।

निर्देशानुसार थानाधिकारी उदयलाल के नेतृत्व में सउनि बरकत खान, हेडकोंस्टेबल लूम्बसिंह, रोशनलाल, ओमसिंह, कोंस्टेबल रिपुदमनसिंह, लक्ष्मीनारायण, ओमाराम, दिनेशचन्द्र, मोतीराम, कैलाशचन्द्र, नानालाल व राजेन्द्र की टीम का गठन किया गया। टीम ने क्षेत्र में कार्यवाही करते हुए संदिग्धों प्रभुलाल कटारा एवं नारायणलाल पारगी को डिटेन कर पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपियों ने मामले में अन्य साथी प्रेमलाल उर्फ नानालाल पारगी, सुरेश कटारा, कालूलाल पारगी के बारे में बताया। इस पर पुलिस ने आरोपियों की गहनता से तलाश करते हुए 5 आरोपी प्रभुलाल पुत्र देवीलाल कटारा (भील) निवासी नया रेहट गोदाना थाना झाडोल, सुरेश पुत्र थाबरचंद कटारा (भील) निवासी लवारखेडी आरवाडा थाना झाडोल, नारायण पुत्र बाबूलाल पारगी (भील), प्रेमलाल उर्फ नानालाल पुत्र बाबूलाल पारगी (भील), कालू पुत्र मोहनलाल पारगी (भील) निवासी आरवाडा थाना झाडोल को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने आरोपियों के चोरी का माल सहित तीन तलवारें एवं एक गाडी को भी बरामद किया गया है। मामले को लेकर पुलिस द्वारा अनुसंधान जारी है।

बिलौता मंदिर से चोरी के आरोप में देलवाडा पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से तीन तलवारें एवं एक बोलेरो गाडी को भी बरामद किया

बैंक खाते से 32 हजार रुपये की नगदी पार

पीड़ित खाताधारक ने नई मंडी पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई

हिण्डौन सिटी, (का.सं.)। शहर के स्टेशन रोड स्थित बैंक ऑफ इंडिया के एक खाताधारक के खाते से 32 हजार रूपये की नगदी पार हो गई। इस मामले को लेकर पीड़ित खाताधारक ने नई मंडी पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है।

समीप के गांव एकोराशी निवासी चरण सिंह सोलंकी ने नई मंडी पुलिस थाने में दर्ज कराई। प्राथमिकी में लिखा है कि उसका शहर के स्टेशन रोड स्थित बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में बचत खाता है। इस बचत खाते से गत ग्यारह जनवरी को दोपहर 1 बजकर 50 मिनट पर 32 हजार रूपये किसी ने निकाल लिये। जबकि उसके द्वारा इस अवधि में कोई ट्रांसजेक्शन नहीं किया गया और ना ही किसी को ओटीपी शेयर किया गया। इसके बावजूद खाते से अवैध रूप से राशि की निकासी हुई है। इस मामले में आवश्यक कानूनी कार्रवाही करने की मांग की है। इधर मामले को लेकर नई मंडी थानाधिकारी गिर्राज प्रसाद ने बताया कि पीड़ित खाताधारक की ओर से रिपोर्ट दर्ज कर ली है और कार्रवाही की जा रही है।

पीड़ित खाताधारक ने नई मंडी पुलिस थाने में रिपोर्ट दी।

स्कूल बस व बुलेट बाइक की टक्कर में शिक्षक की मौत

बयाना, (निसं)। बयाना उपखंड के गांव गुर्धानदी में बुधवार को सुबह घने कोहरे के चलते बेकाबू स्कूली बस व बुलेट मोटरसाइकिल की टक्कर में बुलेट मोटरसाइकिल सवार शिक्षक की दर्दनाक मौत हो गई। जबकि उसके साथ बाइक पर बैठी कॉलेज छात्रा गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे भरतपुर के ट्रोमा सेंटर में भर्ती कराया है। छात्रा की हालत भी गंभीर बताई है। मृतक शिक्षक गांव खेडलीगडासिया निवासी 28 वर्षीय धीरज सिंह पुत्र हरवीर सिंह व उसके साथ बैठी छात्रा अन्नू पुत्री खेम सिंह बताई है। यह हादसा तब हुआ बताया जब यह शिक्षक बयाना के डांग क्षेत्र के गांव जैसोरा के हाईस्कूल में अपनी ड्यूटी पर मोटरसाइकिल से जा रहा था और उसके साथ बैठी छात्रा बयाना कॉलेज में पढ़ने आ रही थी। तभी यह हादसा हो गया। हादसे के बाद बस व चालक मौके से भागने में सफल रहे।

- बाइक पर बैठी कॉलेज छात्रा गंभीर रूप से घायल, भरतपुर के ट्रोमा सेंटर में भर्ती कराया

इस हादसे में दोनों परिवारों में कोहराम मचा है। पुलिस ने मृतक का पंचनामा व पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया। ग्रामीणों ने बताया है कि गुर्धानदी से मूंडिया वाले रोड पर व गुर्धानदी से खोहरा वाले रोड पर कोफी लोगों ने सड़क किनारे अपने पत्थर व पशुचारे की करब के पूंज रख रखे है। जिससे इन दोनों सड़क मार्गों पर दूर से आने जाने वाले लोगों व वाहनों का पता नही लग पाता है और आए दिन हादसे होते रहते है।

ताला तोड़ चोरी

उदयपुर, (कासं)। सूने मकान का ताला तोड़ कर जेवरात चोरी करने का पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी केअनुसार पीड़ित पाठों की मगरी एकता नागदापत्नी नवीनीत नागदा ने भुपालपुरा पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। कि 17 जनवरी सवेरे नौकरी पर गई तथा सांय वापस लौटी तो मकान का ताला टूटा हुआ एवं कमरों में सामना बिखरा पड़ा था। तलाशी ली तो एक सोने का मंगलसूत्र नहीं मिला।

अपहरण का मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। खेरोदा थाना पुलिस ने महिला व बच्ची का अपहरण कर ले जाने वाले के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित रानी डूगरी निवासी गोविन्दा रावत ने रावछ कुराबड़ निवासी नाना पुत्र धर्मा रावत के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। कि 21 अगस्त 2021 को मेरी पुत्र वधु गेन्दगी पुत्री लोगर अपने पुत्र व पुत्री को लेकर पीहर धावड़िया गई थी।

वीडियो वायरल करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। गोगुन्दा कस्बे में महिला को बंधक बना उसके साथ मारपीट करने का वीड़ियों तैयार कर वायरल करने के मामले में तीन आरोपी को गिरफ्तार किया।

प्रकरण के अनुसार 18 जनवरी को महिला केा बंधक बना वीड़ियों वायरल करने को लेकर किए गए अनुसंधान में मारूवास निवासी तुलसीराम ने एक माह पूर्व माचडा केलवाड़ा निवासी पुष्पा पत्नी तुलसीराम के साथ नाता हुआ था। जिसे पति ने छोड़ रखा था। मामला पुलिस तक पहुंचने पर उसके बयानों के आधार पर पुष्पा को मारूवास मेरे गांव छोड़ दिया। 11 जनवरी रात में पीकअप मे आए 15 व्यक्ति जिसमें पुष्पा का पति तुलसीराम, वजेराम पुत्र तुलसीराम, फतेहपुर निवासी पुनाराम पुत्र उदा व समाज के पच थे। मेरे घर मारूवास पर आए तथा तोड़फोड़ कर मेरी पत्नी पुष्पा के साथ मारपीट की तथा हम दोनों को बंधक बना कर पिकअप में डाल कर आरोपी माचड़ा निवासी तुलसीराम के घर ले गए। जहां बंधक बना कर मारपीट करने का वीड़ियों तैयार कर वायर कर दिया। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कुंदन कंवरिया, पुलिस उप अधीक्षक डुगरसिंह के सुपरविजन में गोगुन्दा थानाधिकारी कमलेन्द्रसिंह के नेतृत्व में गठित दल ने माचड़ा केलवाड़ा निवासी तुलसीराम पुत्र स्वरूपजी, मचिन्द खमनौर राजसमन्द निवासी गोपीलाल पुत्र भंवर, गुलाबकी पत्नी गोपीलाल को डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया।

- गोगुन्दा कस्बे का 18 जनवरी का मामला

श्रमिक से नकदी छीनने वाला गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। शहर के हाथीपोल क्षैत्र में श्रमिक को धमका कर उससे नकदी से भरा पर्स छिनने वालो को पुलिस ने गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार पीड़ित बोर खेड़ा नाई निवासी भेरूलाल पुत्र लक्ष्मण गमेती ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि मैं 17 जनवरी को झरियामार्ग पर स्थित कमठाणे पर काम कर रहा था।जहां जहां अचानक आए बदमाश धमकाते हुए मुझसे पर्स छिन ले गया। जिसमें 2500 रूपये नकदी व दस्तावेज थे। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर हाथीपोल थानाधिकरी गोपाल चंदेल के नेतृत्व में एएसआई हिम्मतसिंह मय टीम ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर आरोपी कोमी एकता नगर मल्लातलाई निवासी फरहान उर्फ बबलु व टीचर्स कॉलोनी निवासी करण को गिरफ्तार किया।

कोहरे में रोडवेज ने टेंपो को टक्कर मारी, पिता-पुत्र सहित तीन की मौत

धौलपुर, (निस)। जिले के सदर थाना क्षेत्र के चांदपुर गांव के पास घने कोहरे की वजह से हुए सड़क हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई। जबकि तीन लोग हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें इलाज के लिए जिला चिकित्सालय के ट्रोमा वार्ड में भर्ती कराया गया है।

सदर थाना प्रभारी दीपक बंजारा ने बताया कि हुसैनपुर गांव का रहने वाला टेंपो ड्राइवर राजेंद्र 25 वर्ष अपने पिता रतन सिंह 50 वर्ष के साथ टेंपो को लेकर धौलपुर आ रहा था। जिसने हुसैनपुर गांव के रहने वाले बनवारी और राजकुमार को रास्ते में बैठा लिया।

थाना प्रभारी ने बताया कि चांदपुर गांव के पास घने कोहरे में बाड़ी से धौलपुर की ओर जा रहे टेंपो में धौलपुर से बाड़ी की तरफ जा रही रोडवेज बस ने टक्कर मार दी। जिस हादसे में टेंपो में सवार ड्राइवर राजेंद्र और उसके पिता रतन सिंह के साथ रास्ते में बैठे बालो निवासी नयापुरा की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि टेंपो में बैठे गांव के दोनों युवक बनवारी और राजकुमार के साथ बंटी पुत्र भभूति उम्र 30 वर्ष निवासी नयापुरा गंभीर रूप से घायल हो गए।

थाना प्रभारी ने बताया कि हादसे की खबर मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को एंबुलेंस की मदद से अस्पताल पहुंचाते हुए मृतकों के शव को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी में रखवा दिये है। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान होने के बाद परिजनों को सूचना दे दी गई है।

जांच दल ने निरीक्षण किया

कोटा, (निसं)। शुद्ध के लिए अभियान के तहत उपखण्ड क्षेत्र इटावा में जांच दल ने निरीक्षण कर प्रतिष्ठानों पर खाद्य पदार्थों के अवधिपार पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही की और प्रतिष्ठान में साफ-सफाई रखने तथा कोविड गाइडलाईन का पालन करने के निर्देश दिए।

उपखण्ड अधिकारी इटावा संतोष कुमार मीणा ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे शुद्ध के लिए युद्ध अभियान के तहत बुधवार को इटावा क्षेत्र के खाद्य प्रतिष्ठानों पर गठित जांच दल द्वारा निरीक्षण किया गया। उन्होंने बताया कि निरीक्षण के दौरान एमएस चक्रधारी मिष्ठान भण्डार बस स्टैण्ड एवं अग्रवाल मिष्ठान भंडार से नुक्ती के लड्डू, बर्फी, खोया एवं रसगुल्ले के नमूने लिए जिन्हें जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला में भिजवाया गया। उन्होंने बताया कि प्रतिष्ठानों से मौके पर 16 किलो मिल्क कैक, 20 किलो अवधिवार चिली सॉस, 100 लीटर अवधिवार कोल्डड्रींक नष्ट करवाई गई। रिपोर्ट प्राप्त होने पर प्रतिष्ठान वालों पर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

मेधावी विद्यार्थियों की लैपटॉप योजना तीन साल से ठंडे बस्ते में पड़ी

बीकानेर, (कासं)। राज्य में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले मेधावी विद्यार्थियों को राज्य सरकार की मेधावी विद्यार्थी लैपटॉप वितरण योजना में राजकीय स्कूलों की कक्षा 8 के 6 हजार, 10वीं के 6 हजार 300 व 12 वीं के 9 हजार विद्यार्थियों को प्रति सत्र लैपटॉप वितरण किया जाना था। लेकिन वर्तमान में ये योजना पिछले तीन वर्ष से ठंडे बस्ते में पड़ी है।

शिक्षक नेता मोहर सिंह सलावद ने बताया कि वर्तमान में करोना के बढ़ ते प्रभाव के कारण शहर की स्कूल बंद है ओर ऑनलाइन शिक्षण करवाया जा रहा है। ऐसे में जो मेधावी विद्यार्थी निर्धनता के कारण लैपटॉप नहीं खरीद सकते हैं। उन्हें अब उनके हक का लैपटॉप मिल जाएं तो वो अच्छी तरह से शिक्षण कर सकते हैं।

एक लाख से कम आय वाले अभिभावकों के पात्र मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप मिलते हैं। प्रति सत्र लगभग 21 हजार 300 मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप मिलते है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर ने सत्र 2018-19 के पात्र मेधावी विद्यार्थियों की सूची जारी कर दी थी। लेकिन आज तक इन विद्यार्थियों को लैपटॉप नहीं मिले। इनका वितरण मार्च 20 में होना था लेकिन अभी तक नहीं हो पाया। मेधावी विद्यार्थी लैपटॉप वितरण योजना में तीन सत्र 2018-19, 2019-20, 2020-21 के लैपटॉप नहीं मिले है। अगर वितरण किए जाएं तो राज्य के लगभग 60 हजार विद्यार्थियों को लैपटॉप मिलेंगे। राज्य में अधिकांश निर्धन परिवार के छात्र सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हैं। जिनके माता-पिता लैपटॉप, स्मार्ट फोन, टेबलेट की व्यवस्था करने में असमर्थ है।

शिक्षक संघ एलीमेंट्री सैकण्डरी टीचर एसोसिएशन प्रदेशाध्यक्ष मोहर सिंह सलावद का कहना है कि करोना संक्रमण काल में अब जब ऑनलाइन शिक्षण में लैपटाप व टेबलेट का महत्व बढ़ गया है। ऐसे में राज्य सरकार व विभाग तत्परता दिखाते हुए मेधावी विद्यार्थी लैपटॉप वितरण योजना में बकाया पिछले तीन सत्रों के लैपटॉप इसी माह में वितरण कर दें तो ऑनलाइन शिक्षण में निर्धन मेधावी विद्यार्थियों के लिए लैपटॉप बहुत लाभदायक सिद्ध होंगे। जो शिक्षा और शिक्षार्थी के लिए सरकार व विभाग का हितकारी फैसला साबित होगा।

- बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले मेधावी विद्यार्थी कर रहे हैं लैपटॉप मिलने का इंतजार

करंट लगने से इकलौते बेटे की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाडा थाना अन्तर्गत एक युवक की करन्ट लग जानें से मौत हो गई। मृतक युवक माता पिता का इकलौता बेटा था तथा गुजरात में ट्रक चलाकर परिवार का गुजारा करता था। पुलिस सूत्रों के अनुसार करौली गांव का रहने वाला विक्रम पुत्र जयशंकर ननोमा गुजरात में ट्रक ड्राइवर है। मकर संक्रांति पर वह घर आया था। मंगलवार रात को खाना खाने के बाद टीवी देख रहा था। उसकी पत्नी सुनीता, मां रूपली, पिता जयशंकर ननोमा और उसके 2 बच्चे दूसरे कमरे में सो रहे थे।

रात को विक्रम का हाथ बिजली के प्लग पर लगने से करंट लग गया। सुबह देर तक नहीं उठने पर मां चाय लेकर जगाने गई। आवाज लगाने पर भी नहीं उठा। हाथ लगाया तो मरा मिला। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अस्पताल लेकर गए। पोस्टमार्टम करवाकर शव परिवार को सौंपा। मृतक के एक 4 साल का बेटा अंशुल और 1 साल की बेटी आशा है।

खबर का असर

158 परिवारों में 68 परिवारों को पात्र किया

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर पंचायत समिति की भोपाखेडा ग्राम पंचायत में कर्मचारियों की लापरवाही से प्रधानमंत्री आवास योजना से 158 परिवारों को विभिन्न कारणों से किये गये अपात्र में से 68 परिवारों को पुन: पात्र मानते हुए आवास योजना में शामिल कर दिया है।

17 जनवरी के अंक में स्मार्ट फोन के जमाने में लैंडलाइन फोन की वजह से अपात्र हुए सैकडों परिवार के शीर्षक से समाचार प्रकाशित करके मामला उजागर किया था। जिसके बाद भीण्डर पंचायत समिति से एक जांच टीम गठित करके भेजी गई और टीम की रिपोर्ट के आधार पर 158 में से 68 परिवारों को पात्र मानते हुए पुन: सूची में शामिल किया गया।

भोपाखेडा ग्राम पंचायत मिले अपात्र किये गये 158 परिवारों की जांच के लिए जिला परिषद उदयपुर के निर्देश पर पंचायत समिति भीण्डर के विकास अधिकारी विशाल सीपा ने जांच टीम गठित करके भेजी। टीम ने भोपाखेडा पहुंच करके समाचार में दिये गये 4 परिवारों के उदाहरण को मौका स्थिति पर जाकर देखा और सभी मकान मौके पर कच्चे मिले। टीम ने भोपाखेडा के पप्पूलाल पिता टीला मीणा, नाथु लाल पिता उदा गायरी, रतनलाल पिता चुनालाल मीणा, लाला गायरी पिता उदा गायरी के मकानों का निरीक्षण किया। जिसमें पाया गया कि इन परिवारों ने आज दिन तक किसी भी प्रकार की सरकार की आवास योजना का लाभ नहीं उठाया और ना ही इनका पक्का मकान है। इसलिए चारों परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए पात्र माना जाता है।

- भीण्डर पंचायत समिति के भोपाखेडा ग्राम पंचायत का मामला

धोखाधड़ी से जमीन हड़पने का प्रयास

उदयपुर, (कासं)। अम्बामाता थाना पुलिस ने वृद्ध की रिपोर्ट पर आरोपी रिश्तेदार व साथी के खिलाफ जमीन हड़पने की नियत से दस्तावेज तैयारकरने का मामला दर्ज किया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित लोयरा निवासी कालु पुत्र नन्दा गमेती ने सब्बलपुरा बेदला निवासी पुष्करलाल पुत्र जानकीलाल, शेलू बड़गांव निवासी वेटनरी कम्पाउण्डर बाबुलाल, निकोल दियाणा निवासी किशनसिंह पुत्र भंवरसिंह के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। कि 25 दिसंबर को आरोपियों ने खेत पर गए मेरे पुत्र कूका के साथ मारपीट की। जिसे घायल होने पर उपचार के लिए ले गए। उसके बाद आए आरोपी मुझे पुत्र के उपचार के लिए मुख्यमंत्री योजना से लोन लेने के बहाने रजिस्ट्रार कार्यालय ले गए। जहां पर मुझे काली चाय पिलाई तथा उसके बाद दस्तावेजों पर मेरे अंगुठे के निशान लगवा दिए। उक्त दस्तावेज में जमीन 10 वर्ष के लिए अनुबंधीत करने तथा बदले में 10 लाख रूपये नकद भुगतान करना उल्लेख किया था। इसकी जानकारी अधिवक्ता के नोटिस से मिली।

लार्वा मिलने पर दो मकान मालिकों को नोटिस दिया

कोटा, (निसं)। मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए जिले में चिकित्सा विभाग का डोर टू डोर सर्वे अभियान जारी है। बुधवार को विभाग की 621 टीमों ने 15760 घरों का सर्वे किया। इस दौरान घरों में लार्वा मिलने पर 2 मकान मालिकों को नोटिस दिए।

सीएमएचओ डॉ भूपेंद्र सिंह तंवर ने बताया कि टीमों ने घरों में 27459 पानी के जल पात्रों जैसे पानी की टंकियां, कूलर, ड्रम, परिण्डे, गमले, फ्रीज की ट्रे और छतों पर रखे पानी जमा होने वाले टायर, कबाड़ आदि की जांच की गई तो 45 जल पात्रों/कंटेनरों में लार्वा मिला जिन्हें उपचारित किया। टीमों ने 1188 कंटेनरों को खाली कराया, 575 में टेमीफास की दवा डाली तथा 894 स्थानों पर एमएलओ डाला गया। इसके अलावा 457 कमरों में मच्छर रोधी पायरेथ्रम स्प्रे का छिड़काव भी किया।

सर्वे में आईएलआई या कोरोना जैसे लक्षण वाले 185 व्यक्ति भी मिले जिन्हें दवाईयां दी गई। हाई रिस्क ग्रुप के 65 लोगों को अस्पताल जाकर दिखाने की सलाह दी गई। इस दौरान लोगों को बीमारियों से बचाव रोकथाम संबधी जागरूकता के पम्पलेट भी बांटे व पोस्टर, स्टीकर चस्पा किए गए।

बांसवाड़ा में 188 संक्रमित मिले

बांसवाड़ा, (निसं)। कोरोना एक बार फिर अपने पैर पसारता नजर आ रहा है महात्मा गांधी चिकित्सालय से मिली जानकारी के अनुसार बुधवार को 188 संक्रमित पाये गये। कोरोना पर नियंत्रण के लिए गाईडलाईन की सख्ती से पालना कराई जा रही है वहीं आमजन भी सावचेत नजर आ रहे हैं।

- मास्क लगाने का अभियान चलाया

रात्रि आठ बजे बाजार पूरी तरह से बंद हो जाते है। इधर मास्क लगाने के लिए भी पुलिसकर्मी अभियान चलाये हुए है वे आते-जाते लोगों को मास्क पहनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

उदयपुर में धोखे से नकदी हड़पी, मामला दर्ज

उदयपुर, (कासं)। वाटर शेट निर्माण कर धोखे से नकदी हड़पने वाली कंपनी के प्रोपराईटर के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित कंस्ट्रक्शन कंपनी के प्रोपराईटर बानसूर अलवर निवासी भवानीसिंह पुत्र विशालसिंह ने वाटरशेट प्रा. लिमिटेड के प्रोपराईटर फतहपुरा निवासी मोहित मेहता के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। कि मैं ठेका लेने का काम करता हूं।

आरोपी भी पीएचईडी में ठेका लेता है। मुझसे संपर्क किया तो दोनो के बीच हुई बातचीत में मुझे एक लाख रूपये प्रत्येक वाटर शेड व जीएसटी देना तय कर दौसा में 7, पोकरण में 13, गड़रा में 2, उसे वाटर शेड बनाने का काम दिया उक्त काम मार्च 2021 तक पूरा करना था। उक्त काम पेटे करीब 25 लाख रूपये का भुगतान देना था। आरोपी ने विभाग से बिल उठा लिया तथा मुझे करीब 9 लाख 50 हजार रूपये का भुगतान किया। शेष नकदी के लिए कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दे रहा है। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

बीकानेर जिले में 356 कोरोना पॉजिटिव मिले

नोखा में अब हर दूसरा टेस्ट पॉजिटिव आ रहा है

बीकानेर, (कासं.)। जिले में कोरोना पॉजिटिव का आंकड़ा कुछ कम हुआ है लेकिन कोविड का खतरा अब भी कहर बरपा रहा है। बुधवार को बीकानेर में 356 कोरोना पॉजिटिव सामने आए। शहर के साथ अब आसपास के गांवों में कोरोना रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। नोखा में सबसे ज्यादा हालात खराब है जहां हर दूसरा टेस्ट पॉजिटिव आ रहा है। मंगलवार को यहां 68 टेस्ट की रिपोर्ट बुधवार को आई जिसमें 32 पॉजिटिव है, इसमें 14 साल का एक बच्चा भी शामिल है।

बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में भर्ती रोगियों में एक सत्तर वर्षीय वृद्ध की मंगलवार को मौत हो गई। उसे कुछ दिन पहले सांस में तकलीफ के चलते भर्ती किया गया था, जिसकी कोरोना जांच करवाई गई। यह पॉजिटिव आने पर उसे एमसीएच विंग में शिफ्ट कर दिया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। अब तक सात लोगों ने बीकानेर में कोरोना की तीसरी लहर में दम तोड़ दिया है। सुबह की रिपोर्ट में 296 पॉजिटिव आए हैं, जबकि शाम की रिपोर्ट में साठ पॉजिटिव आए हैं।

बीकानेर में जगह जगह हो रही जांच में सबसे ज्यादा पॉजिटिव पीबीएम अस्पताल के कोविड ओपीडी में मिल रहे हैं। बुधवार को मिले करीब तीन सौ पॉजिटिव में दो सौ इसी सेंटर पर लिए गए केस है। इनमें बड़ी संख्या उन रोगियों की है जो अन्य बीमारियों के चलते पीबीएम अस्पताल में इलाज ले रहे हैं लेकिन इलाज के दौरान यहां पॉजिटिव हो गए। बुधवार को यहां 190 पॉजिटिव मिले हैं। कमोबेश हर दूसरा टेस्ट यहां पॉजिटिव आ रहा है। वहीं गंगाशहर में भी हालात खराब है। जहां मंगलवार को 59 टेस्टे किए गए थे, जिसमें पच्चीस पॉजिटिव है। गंगाशहर में भी लगभग हर दूसरा टेस्ट पॉजिटिव मिल रहा है। यहां भी बच्चे कोरोना संक्रमित हो रहे हैं। बुधवार की रिपोर्ट में सोलह व सत्रह साल के दो बच्चे पॉजिटिव आए हैं। जस्सूसर गेट स्थित सेटेलाइट अस्पताल में भी हर दूसरा टेस्ट पॉजिटिव आ रहा है। यहां मंगलवार को 112 रोगियों ने अपनी जांच करवाई थी, जिसमें साठ पॉजिटिव है। शहर के भीतरी क्षेत्र से यहां जांच के लिए आ रहे रोगियों में कोरोना पॉजिटिव मिल रहा है।

छबड़ा में 18 नये पॉजिटिव मिले

छबड़ा, (निसं)। छबड़ा क्षेत्र में कोरोना अपने पैर पसारता नजर आ रहा है, जिसके चलते एक साथ 18 नए पॉजिटिव मामले सामने आए है, जिनको होम क्वारंटाइन किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार छबड़ा क्षेत्र में कोरोना संक्रमण बढ ता ही जा रहा है, एक साथ 18 पॉजिटिव सामने आने से चिकित्सा प्रशासन सतर्क हो गया है। खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. महेश भूटानी ने बताया कि पॉजिटिव पाए गए 18 लोगों को होम क्वारंटाइन किया गया। साथ ही उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि क्षेत्र के सभी लोग कोरोना के बढ़ ते संक्रमण की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा जारी की गई गाइडलाइंस का पालन करें।

राजसमंद जिले में 145 नये संक्रमित मिले

राजसमंद, (निसं)। जिले के कोरोना संक्रमण की तीसरी लहर की बढ ती रफ्तार लगातार कायम है। पिछले करीब दो सप्ताह यानी 13 दिनों में जिले में कुल 886 नये संक्रमित सामने आए है जिनमें से 676 एक्टिव मामले है। बुधवार को जिले में कुल 145 नये कोरोना पोजिटिव सामने आए।

सीएमएचओ डॉ. प्रकाशचन्द्र शर्मा के अनुसार बुधवार को प्राप्त ताजा रिपोर्ट में सामने आए 145 नये पोजिटिव में से आमेट ब्लॉक से 4, भीम ब्लॉक से 2, केलवाडा ब्लॉक 8, खमनोर ब्लॉक से 26, रेलमगरा ब्लॉक से 11, राजसमंद ब्लॉक से 10, नाथद्वारा शहरी ब्लॉक से 15, राजसमंद शहरी ब्लॉक से 69 नये करोनो संक्रमित पाए गए। जबकि रिपोर्ट में 18 से कम उम्र के 24 बच्चे संक्रमित पाए गए। वहीं जिले में अब 676 एक्टिव मामले है।

- कोर्ट परिसर के 13 कर्मचारी 9 पुलिसकर्मी सहित सभापति एवं उनकी पत्नी संक्रमित

इसी के साथ रिपोर्ट में जिले की डीजे कोर्ट परिसर के 13 कर्मचारी, विभिन्न थानों के 9 पुलिसकर्मी एवं उनके परिजन सहित नगर परिषद सभापति अशोक टांक एवं उनकी पत्नी के भी संक्रमित पाए जाने की पुष्टि हुई है। जिले में 7 जनवरी से लेकर 19 जनवरी 13 दिनों में तीसरी लहर में कुल 886 नये संक्रमित सामने आए है। जिसमें 18 वर्ष की कम आयु के 113 बच्चे भी शामिल है। जिले में अब तब 18,333 कोरोना संक्रमित मरीज मिले है, जिसमें से 17 हजार 484 मरीज ठीक हो चुके हैं।

डॉ. किरोड़ी और राकेश टिकैत मृत किसान के परिजनों से मिले

जाने माने किसान नेता राकेश टिकैत जमीन कुर्की के सदमे से दो माह पूर्व आत्महत्या करने वाले किसान कजोड़ के परिजनों से मिलने जामुन वाली ढाणी पहुंचे तथा परिजनों को ढाढ़स बंधाया।

- **रामगढ़ पचवारा की जामुन वाली ढाणी में दो माह पहले कजोड़ नाम के एक किसान ने जमीन कुर्की का आदेश आने के सदमे से आत्महत्या कर ली थी।**
- **किसान आंदोलन के प्रमुख नेता राकेश टिकैत और राज्यसभा सांसद डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने मृतक किसान के परिजनों से अलग-अलग मुलाकात की और हर संभव मदद का आश्वासन दिया।**
- **बताया जाता है कि कजोड़ ने बैंक से 3.87 लाख रू. का कर्ज लिया था जिसे नहीं चुकाने पर बैंक ने जमीन कुर्की के आदेश निकाल दिए और हाल ही में 86 लाख रू. की जमीन मात्र 7 लाख रू. में बेच दी।**
- **डॉ. किरोड़ी ने कहा कि किसान की मृत्यु कांग्रेस सरकार के इस दावे की पोल खोलती है कि किसानों के कर्जे माफ किए गए हैं।**

रामगढ़ पचवारा, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की जामुन वाली ढाणी के रहने वाले किसान कजोड़ ने दो महिने पहले भूमि कुर्की से सदमे से आत्महत्या कर ली थी और मंगलवार 18 जनवरी को उस किसान की 86 लाख रुपए कीमत की जमीन को महज 7 लाख रुपए में नीलाम कर दिया गया। इसी क्रम में मृतक किसान के परिजनों से मिलने के लिए किसान नेता राकेश टिकैत और राज्यसभा सांसद डा. किरोड़ी लाल मीणा जामुन की ढाणी पहुंचे।

नेता राकेश टिकैत भी देर रात 10 बजे मृतक किसान के घर पहुंचे तथा जमीन की नीलामी एवं मृतक किसान के बारे में पूरी जानकारी जुटाई एवं पीड़ित परिवार को ढांढ़स बंधाते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया। राकेश टिकैत ने कहा कि गुरुवार को वे उपखंड कार्यालय पर सक्षम अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। राकेश टिकैत ने गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह किसान की पूरी जमीन नीलाम नहीं की जा सकती। इस मामले को लेकर गुरुवार को विचार-विमर्श किया जाएगा एवं आगे की रणनीति तय की जाएगी। वहीं राकेश टिकैत के पहुंचने की सूचना पाते ही पूरे प्रशासनिक अमले में हड़कंप मच गया एवं राकेश टिकैत के क्षेत्र में घुसने से लेकर उनकी पूरी गतिविधि पर प्रशासन ने नज़र बनाए रखी।

वहीं राज्यसभा सांसद डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने चुनाव में सत्ता में आने के लिए किसानों से पूर्ण कर्ज माफी का वादा किया था। लेकिन आज तक राजस्थान सरकार किसानों के कर्ज माफी के वादे को पूरा नहीं कर पाई है। किसान जमीने नीलाम होने के सदमे में आकर आत्महत्या कर रहे हैं। उन्होंने कहा जामुन वाली ढाणी में किसान कजोड़ की बीते संक्रमण काल के दौरान आर्थिक स्थिति बिगड़ गई थी इसलिए वह कर्जा नहीं चुका पाया और बैंक ने जमीन कुर्क करने के आदेश निकाल दिए। सरकार कर्ज माफी का दावा कर रही है पर उलटे किसानों से कर्ज वसूली की प्रक्रिया तेज कर उनकी जमीनों को कुर्क कर कर्ज को वसूल किया जा रहा है। राज्यसभा सांसद मीणा ने कहा कि किसान द्वारा बैंक से 3 लाख 87 हजार रु. का लोन लिया गया था। किसान की कर्जा चुकाने की स्थिति नहीं होने के कारण कर्ज की रकम करीब 7 लाख रु. हो गई थी। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि किसान की जमीन की वास्तविक कीमत करीब 86 लाख रुपए की है जिसे केवल डीएलसी दर को दरकिनार कर 7 लाख में नीलाम कर दिया गया। इतनी कम राशि में मृतक किसान के पीड़ित परिजनों की भूमि को नीलाम करने में भूमाफिया एवं प्रशासनिक अधिकारियों की संदिग्ध मिलीभगत नज़र आ रही है।

राज्य सभा सांसद ने कहा है कि इस मामले को लेकर मृतक किसान की भूमि को कुर्क होने से रुकवाने के लिए ग्रामीणों भाजपा ने एसडीओ कार्यालय पर धरना प्रदर्शन किया था तथा एस डी ओ ने पीड़ित को न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया। कुर्की को रुकवाने एवं पीड़ित को न्याय दिलाने का भरोसा एसडीएम द्वारा दिया गया था। लेकिन मौखिक समझौते के बाद भी मृतक किसान की भूमि को नीलाम कर दिया गया। राज्य सभा सांसद ने मांग करते हुए कहा कि मृतक किसान को मुआवजा मिलना चाहिए एवं साथ ही कर्ज के तनाव में आत्महत्या करने वाले किसान का कर्जा माफ कर जमीन मुक्त की जाए। उन्होंने कहा कि मृतक किसान के आश्रित पीड़ित परिजनों को न्याय दिलाने के लिए मुख्यमंत्री से समय लेकर पीड़ितो के साथ मुलाकात की जाएगी।

मुलायम सिंह के छोटे बेटे की पत्नी अपर्णा यादव भाजपा में शामिल हुईं

चर्चा है कि, अपर्णा यादव लखनऊ कैंट से टिकट मांग रही थीं, परंतु अखिलेश यादव इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे

- **अपर्णा यादव को उम्मीद है कि, भाजपा उन्हें लखनऊ कैंट से टिकट देकर उम्मीदवार बनायेगी।**

नई दिल्ली, 19 जनवरी (वार्ता)। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के वरिष्ठतम नेता मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव ने भाजपा का दामन थाम लिया है।

बुधवार को अपर्णा यादव यहाँ उत्तर प्रदेश भाजपा इकाई के अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह और राज्य के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की मौजूदगी में भाजपा में शामिल हो गईं। इसके बाद उन्होंने पार्टी के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की।

भाजपा की सदस्यता लेने के बाद अपर्णा यादव ने कहा, मैं हमेशा से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रभावित रही हूँ। मेरे चिंतन में सबसे पहले राष्ट्र है। अब मैं राष्ट्र की आराधना करने निकली हूँ। मैं स्वच्छ भारत मिशन, महिलाओं के लिए स्वावलंबन जीवन समेत भाजपा की अन्य सभी योजनाओं से प्रभावित रही हूँ। मैं भाजपा को धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे पार्टी का हिस्सा बनने का मौका दिया।

इस मौके पर उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने अपर्णा यादव का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि सपा के शासन में गुंडागर्दी को इतना महत्व दिया जाता था कि प्रदेश में कोई बेटी सुरक्षित नहीं थी। अपर्णा यादव को शुरू से लगता था कि आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार में सुशासन है।

मौर्या ने कहा कि अपर्णा यादव की विचार धारा हमेशा से भाजपा से प्रभावित रही है जैसा उनके बयानों से प्रतीत होता था। मोदी और आदित्यनाथ के नेतृत्व में जो विकास हो रहा है, यह देखते हुए बहुत लोग भाजपा में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव अपने परिवार और पार्टी दोनों में ही असफल रहे है। मुख्यमंत्री काल के दौरान भी और अब सांसद के रूप में भी वह असफल रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि मुलायम सिंह यादव की दूसरी पत्नी साधना गुप्ता हैं। इन्हीं के बेटे प्रतीक यादव की शादी श्रीमती अपर्णा यादव से हुई है।

हिमाचल में जहरीली शराब से पांच की मौत

मंडी, 19 जनवरी (वार्ता)। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले के सुंदरनगर में शराब पीने के बाद पांच लोगों की संदिग्ध हालत में मौत हो गई है और दो अन्य की हालत गम्भीर है तथा ये अस्पताल में भर्ती हैं।

जिला पुलिस अधीक्षक शालिनी अग्निहोत्री ने बताया कि घटना सलापड़ क्षेत्र में हुई है। उन्होंने बताया कि

- **पुलिस ने मृतकों के घरों से बरामद कथित जहरीली शराब की बोतलों से नमूने लेकर जांच के लिये भेज दिये हैं।**

मंगलवार रात कुछ लोगों ने एक व्यक्ति से शराब खरीद कर अपने अपने घरों में पी थी लेकिन इसके तत्काल बाद ही तबीयत बिगड़ने लगी। सात लोगों को तुरंत परिजनों ने सुंदरनगर के सिविल अस्पताल भर्ती कराया जहां चार ने दम तोड़ दिया। वहीं तीन लोगों को नेर चौक स्थित राजकीय मेडीकल कॉलेज एवं अस्पताल रैफर किया गया।

अलवर कांड में ज़ोमैटो डिलिवरी बॉय हिरासत में

डिलिवरी बॉय ने भी कबूल किया कि लड़की को उसकी बाइक से टक्कर लगी थी

- **अब पुलिस यह गुत्थी सुलझाने में लगी है कि लड़की के प्राइवेट पार्ट पर चोट कैसे लगी।**

अलवर, 19 जनवरी (निसं)। तिजारा फाटक पुलिया पर लहूलुहान हालत में मिली मूक-बधिर नाबालिग बालिका के केस में नया मोड़ आ गया है। पुलिस ने जोमैटो के एक डिलीवरी बॉय को हिरासत में लिया है। इसी युवक की बाइक से उक्त लड़की को टक्कर लगी थी और डिलीवरी बॉय ने यह बात कबूल भी कर ली है। टक्कर के समय वहां राजस्थान पब्लिक ट्रांसपोर्ट की बस सवारी उतारने रुकी थी, जिसकी आड़ में होने की वजह से बाइक कैमरे में नजर नहीं आई।

पुलिस ने यह तो पहले ही मान लिया था कि नाबालिग से गैंगरेप नहीं हुआ। अब उसके तथ्य भी जुटाए गए हैं। फूड डिलीवरी बॉय ने भी कबूल किया कि टक्कर के बाद वह सीधा निकल गया था। अब पुलिस यह गुत्थी सुलझाने में लगी है कि लड़की के प्राइवेट पार्ट पर चोट कैसे लगी।

पुलिस कैमरे में दिख रही परिहवन निगम की बस को जब्त कर उसके कंडक्टर व ड्राइवर को हिरासत में ले चुकी है। बस के अंदर से सैंपल लिए गए थे। दो-तीन ऑटो निकले उन तक भी पुलिस पहुंच गई है।

फूड डिलीवरी बॉय को कैमरे दिखाए गए। उसके बाद उसने यह कबूला कि जब वह पुलिया से निकला तो रोड के बीच में चल रही बस को ड्राइवर ने लैफ्ट में दबा दिया। लड़की को उसकी बाइक से टक्कर लगी थी तो वह भी गिरते-गिरते बचा था। हादसे के बाद युवक निकल गया। उसके बाद लड़की के साथ क्या हुआ, उसे नहीं पता।

पुलिस मान रही है कि लड़की को बाइक की टक्कर लगी। जगह कम होने के कारण रगड़न जैसी स्थिति बनी। इस बीच लड़की गिरी और उसे चोट लग गई। चोट बाइक के हिस्से से भी लग सकती है या फिर वहां पड़े पत्थर व किसी नुकीली चीज से। पुलिस इन सवालों को सुलझाने में लगी है।

'विधायकों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खानविलकर की अध्यक्षता वाली 3 जजों की बैंच ने कहा था कि इस बात का कोई "अत्यधिक महत्वपूर्ण" कारण होना चाहिये कि संबंधित विधायकों को अगले सत्र में भी उपस्थित रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये। बैंच, जिसमें न्यायमूर्ति दिनेश महेश्वरी तथा सी.टी. रवि कुमार भी शामिल थे, ने यह जानना चाहा कि क्या विपक्षी विधायकों के निलम्बन से सत्तारूढ़ गठबंधन के बहुमत में बने रहने का कोई लेना-देना है।

करोना वायरस,...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में इस वायरस का प्रकोप इतने कम स्तर पर होगा कि उससे सामाजिक, आर्थिक व अन्य सामान्य क्रियाकलाप बाधित नहीं होंगे।"

उन्होंने कहा कि "मैं समझता हूँ कि अधिकांश लोग ऐसा महसूस करते हैं कि जब इसका प्रकोप किसी स्थान विशेष पर होगा तो फ्लू जैसे संक्रमणों की एक सामान्य श्रृंखला ही विद्यमान रहेगी।"

फाउची की टिप्पणी एक ऐसे समय में सामने आयी है, जबकि करोना वायरस का ओमक्रॉन वेरिएन्ट दुनियाभर में संक्रमण के नए केस सामने ला रहा है। ओमक्रॉन के अपने पूर्ववर्ती डेल्टा वायरस की तुलना में कम घातक साबित होने के बावजूद इस वायरस से जो लोग संक्रमित हुए हैं, उनके लिए दुनिया के कई हिस्सों में भरपूर मैडिकल संसाधन उपलब्ध है। जॉन्स हॉपकिन्स युनिवर्सिटी द्वारा गणना किए गए आंकड़ों के अनुसार अकेले अमेरिका में ही पिछले सप्ताह करोना वायरस संक्रमण के करीब 5.4 मिलियन नए केस दर्ज किए गए। इस वैश्विक महामारी की शुरूआत से ही करीब 8 लाख 52 हजार अमेरिकी नागरिक कोविड-19 से मर चुके हैं और यह बीमारी दुनियाभर में 5.5 मिलियन से अधिक जाने ले चुकी है।

डब्ल्यु.एच.ओ. प्रमुख टैड्रॉस ने डॉ. फाउची की चिंताओं से सहमति जताते हुए कहा कि "मैं उन कई देशों को लेकर खासतौर पर चिंतित हूँ जहां वैक्सीनेशन की रेट कम है और यहां जिन लोगों के वैक्सीन नहीं लगी है उनमें गंभीर बीमारी और मौत का खतरा कई गुना ज्यादा है।" उन्होंने मंगलवार को एक मीडिया ब्रीफिंग में कहा कि "कोई गलती ना करें क्योंकि ओमक्रॉन से मौतें हो रही है और यह लोगों को अस्पताल में भर्ती होने के लिए मजबूर कर रहा है और यहां तक कि कम गंभीर प्रकृति के केसों के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं कमतर साबित हो रही हैं।

टैड्रोस ने कहा कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक उपायों के मौजूदा साधनों के इस्तेमाल और स्वास्थ्य उपकरणों को साझा करने व इनके कुशल उपयोग से कोविड-19 की वर्तमान लहर के प्रकोप के अच्छा-खासा कम होने की उम्मीद है।

उन्होंने घोषणा की कि यह समय हिम्मत हारने और सब्र करना का नहीं है।

टैड्रोस ने कहा कि ओमक्रॉन का हस्तांतरण और संक्रमण रोकने में वैक्सीन्स शायद उसकी असरकारी ना रहें जैसे कि करोना के पिछले वेरिएन्ट्स को रोकने में रही थीं, लेकिन वे फिर भी गंभीर रोगों और मौतों को रोकने में अब विशेष रूप से अच्छी हैं। अस्पतालों में मरीजों की भरमार को रोकने में यह अहम है।

एयर इंडिया सहित कई अंतर्राष्ट्रीय विमानन कंपनियों ने अमेरिका के लिए फ्लाइट्स में कटौती की

विमानन कंपनियां इसकी मुख्य वजह अमेरिका में 5जी नैटवर्क का शुरु होना बता रही हैं

- **भारतीय एवं दुनियाभर की अन्य विमानन कंपनियों को आशंका है कि, अमेरिका में इसी सप्ताह से शुरु होने जा रहे 5जी नैटवर्क की वजह से विमानों को लैण्डिंग करते वक्त गम्भीर परेशानियां आयेंगी, जिसकी वजह से दुर्घटना भी हो सकती है।**
- **विमानन कंपनियों का कहना है कि, 5जी नैटवर्क की वजह से विमानों में लगे दूरी एवं ऊंचाई मापने के उपकरण काम करना बंद कर सकते हैं, जिससे पायलट को यह ज्ञात नहीं हो पायेगा की वे जमीन से कितनी दूरी पर विमान उड़ा रहे हैं।**

नई दिल्ली/वाशिंगटन, 19 जनवरी (वार्ता)। एयर इंडिया समेत कई अंतरराष्ट्रीय विमान कंपनियों ने 5जी मोबाइल फोन सेवा और जटिल विमानन प्रौद्योगिकियों के बीच हस्तक्षेप पर अनिश्चितता को लेकर बुधवार से अमेरिका के लिए उड़ानों में कटौती कर दी है।

एयर इंडिया ने कहा कि दिल्ली से अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को, शिकागो और जेएफके तथा मुंबई से नेवार्क के बीच अपनी उड़ानें रद्द कर दी गयी है।

एयर इंडिया ने एक ट्वीट में कहा, अमेरिका में 5 संचार की तैनाती के कारण हम 19 जनवरी से दिल्ली से अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को, शिकागो और जेएफके तथा मुंबई से नेवार्क के बीच अपनी उड़ानें संचालित करने में सक्षम नहीं होंगे।

सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक अमीरात, एयर इंडिया, ऑल निप्पॉन एयरवेज और जापान एयरलाइंस ने अमेरिका के लिए उड़ानों में कटौती की घोषणा की है।अमीरात ने नौ अमेरिकी हवाई अड्डों बोस्टन, शिकागो ओहारे, डलास फोर्ट वर्थ, ह्यूस्टन में जॉर्ज बुश इंटरकांटिनेंटल, मियामी, नेवार्क, ऑरलैंडो, सैन फ्रांसिस्को और सिएटल के लिए अपनी उड़ानें रद्द किये जाने की घोषणा की है। फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन के मुताबिक हवाई अड्डों के पास 5जी सेल्यूलर एंटिना कुछ विमान उपकरणों से रीडिंग को अवरुद्ध कर सकता है जिससे पायलटों को यह पता चलता है कि वे जमीन से कितनी दूर हैं।

गौरतलब है कि, 5जी नेटवर्क को लेकर शुरू से ही विवाद होता रहा है। कभी करोना महामारी के लिए भी 5जी नेटवर्क को जिम्मेदार ठहराया गया तो कभी दावा किया गया कि 5जी नेटवर्क के आने के बाद पक्षियों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा, हालांकि इन सब दावों को विश्व स्वास्थ्य संगठन से लेकर टेलीकॉम कंपनियों और तमाम सरकारों ने बकवास करार दिया है। अब 5जी की शुरुआत होते ही अमेरिका में एयरलाइन कंपनियों की मुसीबत बढ़ गई है।

गौरतलब है कि इसी सप्ताह से अमेरिका की एटीएंडटी और वेरिजोन कंपनियां अपने नए 5जी नेटवर्क शुरू करने वाली थीं। एटीएंडटी और वेरिजोन कंपनियां अपने 5जी वायरलेस सर्विस के लिए अल्टीमीटर में इस्तेमाल होने वाले रेडियो स्पेक्ट्रम के काफी करीब वाले स्पेक्ट्रम का इस्तेमाल करती हैं।

राजस्थान हाई कोर्ट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ही थे। शांतिदेवी की तबीयत ठीक नहीं रहती थी। ऐसे में वह पति के स्थान पर नौकरी करने में असमर्थ थी।

शादीशुदा बेटी शोभा ने अपने पिता के स्थान पर मृतक आश्रित कोटे से नौकरी के लिए आवेदन किया। जोधपुर डिस्कॉम ने उसका आवेदन यह कहते हुए खारिज कर दिया कि शादीशुदा बेटी को नौकरी नहीं दी जा सकती है। इसे लेकर शोभा ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की।

हाईकोर्ट जज पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि कोर्ट का यह मानना है कि शादीशुदा व अविवाहित बेटे-बेटियों में भेदभाव नहीं किया जा सकता है। यह संविधान के अनुच्छेद 14,15 व 16 का उल्लंघन है।

जोधपुर डिस्कॉम की ओर से तर्क दिया गया कि नियमानुसार शादीशुदा बेटी मृतक आश्रित नहीं मानी जा सकती है। ऐसे में उसे नौकरी पर नहीं रखा जा सकता।

न्यायाधीश भाटी ने कहा कि बूढ़े माता-पिता की जिम्मेदारी बेटे व बेटी के लिए एक समान ही होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे शादीशुदा है या नहीं। ऐसे में पिता के स्थान पर मृतक आश्रित की पुत्री नौकरी देने में भी भेदभाव नहीं किया जा सकता है।

अनुकंपा नियुक्ति के आदेश: शोभा देवी की तरफ से कहा गया कि राज्य सरकार के सेवा नियमों के तहत यदि किसी मृतक आश्रित के परिवार में सिर्फ बेटी ही नौकरी के योग्य हो तो उसे नियुक्ति दी जा सकती है। ऐसे में इस मामले में भी यही नियम लागू होता है। जज भाटी ने शोभा से कहा कि वे नए सिरे से आवेदन पेश करें। वहीं जोधपुर डिस्कॉम को आदेश दिया कि शोभा देवी को अपने पिता के स्थान पर तीन महीने में अनुकंपा नियुक्ति प्रदान की जाए।

भाजपा के स्टार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संजीव बाल्यान तथा राज्य के मंत्री दिनेश शर्मा एवं केशव प्रसाद मौर्य शामिल हैं

इस बीच समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव की प्रतिष्ठा पर ग्रहण लगाते हुये, उनके भाई प्रतीक यादव की पत्नी अपर्णा भाजपा मुख्यालय पर विधिवत भाजपा में शामिल हो गईं। उन्हें सम्भवत: यह उम्मीद है कि भाजपा उन्हें लखनऊ छावनी सीट से चुनाव में उतार सकती है, जिसके लिये समाजवादी पार्टी ने उनसे मना कर दिया था।

सूत्रों ने कहा कि उन्हें लखनऊ छावनी से टिकट देने के लिये सपा ने इसलिये मना किया था क्योंकि अखिलेश यह मान रहे थे कि वे उस सीट से नहीं जीत पायेंगी। अपर्णा के भाजपा में शामिल होने पर अखिलेश ने कहा कि उनकी अनुज वधू भाजपा में सपा की विचारधारा साथ ले जायेंगी। उन्होंने कहा, "यह देखकर अच्छा लगा कि भाजपा हमारे द्वारा अस्वीकार्य किये गये लोगों को टिकट दे रही हैं।"

एक संबंधित घटनाक्रम के अन्तर्गत, भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में अपना दल एवं निषाद पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन की अधिकृत घोषणा कर दी। उन्होंने कहा कि इन दलों को सम्माननीय मात्रा में सीट आवंटित की जायेंगी। उन्होंने यह उम्मीद जताई कि ये दोनों पार्टियाँ पूरे राज्य में भाजपा के पक्ष में प्रचार करेंगी।

भाजपा ने उत्तर प्रदेश के चुनावों के दूसरे चरण के लिये दो और उम्मीदवारों के नामों की स्वीकृति दे दी। ये उम्मीदवार हैं- बहेड़ी से छत्रपाल सिंह गंगवार तथा भोजीपुरा सीट से बहोरन लाल मौर्य।

मुख्यमंत्री चन्नी के भाई व अन्य रिश्तेदारों के घर रेड

- **रेड के बाद चन्नी के रिश्तेदारों के यहां से 56 करोड़ रु. बरामद होने की चर्चा है।**
- **आप पार्टी ने कहा कि, मुख्यमंत्री चन्नी के रिश्तेदारों के ठिकानों से बरामद नकदी और सम्पत्ति चन्नी के 111 दिनों के कार्यकाल में की गई लूट और रेत एवं ड्रग माफियाओं से जुटाये गये पैसे हैं।**

चंडीगढ़, 19 जनवरी(वार्ता)। आम आदमी पार्टी(आप) के पंजाब मामलों के सह प्रभारी राघव चड्ढा ने राज्य के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी पर निशाना साधते हुये कहा कि प्रवर्तन निदेशालय(ईडी) के छापे में जब उनके रिश्तेदारों के घर से करोड़ों रुपए बरामद हो रहे हैं तो ऐसे में उन्होंने स्वयं कितने कमाये होंगे। चडढा ने कहा कि बरामद नकदी और सम्पत्ति चन्नी के 111 दिनों के कार्यकाल में की गई लूट और माफिया के पैसे है। उन्होंने हैरानी जताई कि जब रिश्तेदारों ने इतने कमाये तो स्वयं मुख्यमंत्री ने कितने कमाये होंगे। यही नहीं चन्नी अगर पांच साल मुख्यमंत्री रहते तो कितना कमाते! उन्होंने कहा हमने पहले ही कहा था कि चन्नी अपने क्षेत्र में रेत माफिया चला रहे हैं और उसके साथ मिलकर उन्होंने और उनके रिश्तेदारों ने करोड़ों रुपए कमाए हैं। ईडी के छापे में हमारी बात सही साबित हो गई है। मुख्यमंत्री के रिश्तेदारों के पास से अब तक 56 करोड़ रुपए की अवैध सम्पत्ति की जानकारी मिली है। ढेर सारा सोना और कई जमीनों के कागजात बरामद हुए हैं। आम आदमी होने का दिखावा करने वाले चन्नी इसका जवाब दें कि उनके रिश्तेदारों के पास इतने पैसे कहां से आए? उन्होंने कहा कि यही छापा अगर चन्नी के घर पर पड़ा होता तो कितने करोड़ रूपये मिलते यह अंदाजा लगाना मुश्किल है। आप नेता के अनुसार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर पर भी ईडी ने छापा मारा था।

ममता का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सहित अन्य दलों के बागियों एवं असंतुष्टों को अपनी ओर आकर्षित करने की पूरी कोशिश की है।

वस्तुत:, यह समझदारीपूर्ण नीति है क्योंकि भाजपा को भी अन्य पार्टियों के नेताओं को खींचने की नीति के कड़वे नतीजे मिल चुके हैं। बंगाल के चुनावों में तृणमूल को छोड़कर भाजपा में शामिल हुये सभी लोगों को टिकट दे दिये थे। इस सभी दलबदलुओं को आखिरी क्षणों में टिकट दिये गये थे, जिसके फलस्वरुप भाजपा को जमीनी स्तर के सभी कार्यकर्ता हतोत्साहित हो गये थे, उनका मनोबल गिर गया था तथा उनमें से बहुत से लोगों ने तो पार्टी के लिये कोई काम नहीं किया था। परिणाम यह हुआ था कि तृणमूल से भाजपा में आये अधिकांश नेता बुरी तरह चुनाव हार गये थे।

अमेरिका में अब तक 95 लाख बच्चे कोविड संक्रमित हुये

वाशिंग्टन, 19 जनवरी (वार्ता/शिन्हुआ)। अमेरिका में कोविड-19 महामारी की शुरुआत से करीब 95 लाख बच्चे कोरोना संक्रमित हो चुके हैं।

अमेरिकन अकेडमी ऑफ़ पीडियाट्रिक्स (आप) और चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल एसोसियेशन के अनुसार बच्चों में कोरोना संक्रमण के मामलों में नाटकीय उछाल आया है।

मंगलवार को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, 13 जनवरी तक देश भर में कुल 94,52,491 बच्चे कोविड-19 संक्रमित हो चुके थे। दूसरे शब्दों में, कुल कोरोना मामलों में से 17.8 प्रतिशत बच्चे थे।

जनसंख्या में प्रति 1,00,000 बच्चों में 12,559 संक्रमण दर्ज किये गए। आप के अनुसार 13 जनवरी को समाप्त हुए पिछले सप्ताह में लगभग 10 लाख बच्चे कोरोना संक्रमित पाए गए। यह पिछली सर्दियों के कोरोना पीक से चार गुना अधिक मामले हैं। यह अमेरिका में लगातार 23वें सप्ताह है जब बच्चों में कोविड-19 मामले एक लाख से ऊपर हैं। आप के अनुसार, सितंबर के पहले सप्ताह से अब तक 44 लाख से अधिक बच्चे कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। रिपोर्ट में आप ने कहा, नए वेरिएंट की गंभीरता और संभावित दीर्घकालिक प्रभावों का आकलन करने के लिए आयु-विशिष्ट आंकड़े इकट्ठा करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: घूघरा घाटी, जयपुर रोड, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स: 0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600

MARUTI SUZUKI ARENA

ख़ास ऑफ़र्स

सीमित समय के लिए

अपनी पसंदीदा मारुति सुज़ुकी एरीना कार आज ही घर ले आएँ.

बड़ी बचत

WAGONR ₹28 100*
ALTO ₹33 100*
S-PRESSO ₹33 100*
VITARA BREZZA ₹18 000*
DZIRE ₹23 500*
SWIFT ₹28 100*
CELERIO ₹23 000*

ऑफ़र सिर्फ़ स्टॉक रहने तक मान्य है।

WAGONR ALTO S-PRESSO VITARA BREZZA DZIRE SWIFT CELERIO

E-book today at www.marutisuzuki.com or visit your nearest Maruti Suzuki dealership | For bulk orders, mail at: ankit.syal@maruti.co.in

AUTHORISED DEALERS: CHURU: AURIC MOTORS: CALL: 01562-250696, 8875010502. **BIKANER: DUDI AUTOMOBILES:** CALL: 0151-2942222, 0151 -3550418, 7412075151. PADAMPUR**:** CALL: 7412075151. **AURIC MOTORS**: CALL: 0151-2251819, 9529251819, 9636045111. **AJMER: RELAN MOTORS**: CALL: 0145-2610106, 9214444222. **AJMER AUTO**: CALL: 0145-2425200, 9314531845, 9314391004. **JAIPUR: VIPUL MOTORS PVT. LTD.:** DAUSA: CALL: 9887851795. LALSOT: CALL: 9460654936. BANDIKUI: CALL: 9887456970. MAHWA: CALL: 9950780018. MEHANDIPUR BALAJI: CALL: 9782445691. UNIARA: CALL: 9785791929. **KTL AUTOMOBILE PVT. LTD.:** PHULERA: CALL: 7412077062. SAMBHAR: CALL: 7412068410. ACHROL: CALL: 7412077078. **FORTUNE CARS:** KARAULI: CALL: 8875001175/ 8875005132. HINDAUN: CALL: 9214794314 / 8875007758. **PREM MOTORS PVT. LTD.:** BASSI: CALL: 8058794167 / 8058794137. SAWAI MADHOPUR: CALL: 07462-220029 / 8058799005 / 8058794181. GANGAPUR CITY: CALL: 8058794021. BAGRU**:** CALL: 8058794032. KOTPUTLI**:** CALL: 8058794121. JOBNER: CALL: 8058796065. RENWAL**:** CALL: 8058600117. RENWAL-MANJHI: CALL: 8058794042. DUDU: CALL: 8058794168. PHAGI: CALL: 8058403338. KANOTA: CALL: 8058794341. **K.P. AUTOMOTIVES PVT. LTD.:** TONK: CALL: 9549651924. CHAKSU: CALL: 9549651926. SHAHPURA: CALL: 8696925275. DEOLI: CALL: 8696934957. MALPURA: CALL: 9549650513. NIWAI: CALL: 9667777114. PAOTA: CALL: 9549650495. VIRATNAGAR: CALL: 6350612446. JAMWA RAMGARH: CALL: 6350612727. **SANGA AUTOMOBILES PVT. LTD.:** CHOMU: (MORIJA ROAD): CALL: 9772210096 / 9772210906. GOVINDGARH: CALL: 9772210451. **ALWAR: MG MOTORS:** CALL: 9001795515, 9001795517, 8003692651, 8003692652, 8003090466. **SRIGANGANAGAR: AURIC MOTORS**: CALL: 0154-2466225, 8955559963. **DUDI AUTOMOBILES:** PADAMPUR: CALL: 7412075151. **SIKAR: JAMU AUTOMOBILES**: CALL: (01572) 245515 / 246219. **NEEM KA THANA: JAMU AUTOMOBILES**: CALL: 9785644715. **JHUNJHUNU: AURIC MOTORS**: CALL: 8955664400. **KOTA: BHATIA & COMPANY:** CORPORATE OFFICE: 23-24, INDUSTRIAL ESTATE**:** CALL: 0744-2365092, 9829035100. DAKANIYA SHOWROOM: G-11-12, AUTO MOBILE ZONE, NEAR DAKANIYA STATION**:** CALL: 0744-2439000, 9829799009. **SUWALKA MOTORS PVT. LTD.:** KUNHARI: CALL: 0744-2370272, 9116312345, 7300308888. SULTANPUR: CALL: 9116178527. BHAWANIMANDI: CALL: 9116178557. **JODHPUR: AURIC MOTORS PVT LIMITED:** SARASWATI NAGAR, NEW PALI ROAD: CALL: 0291- 2722691, 9015900500. BALESAR: 7412092350. **SHRI KRISHNA AUTO SALES PVT. LTD.:** PRATAP NAGAR: CALL: 0291-2762064/65, 9929244403, 9829144436. BHINMAL**:** CALL: 02969-222438, 9680059999. **L.M.J. SERVICES LTD:** A-11, INDUSTRIAL ESTATE, OPP. UDYOG BHAWAN, NEW POWER HOUSE ROAD: CALL: 0291- 2630478 / 79 / 80, 8094011151. **NAGAUR: MANGALAM MOTORS**: CALL: 9116008626, 9116008630. **PALI: L.M.J. SERVICES LTD.:** CALL: 02932 - 256177, 8094011136. **SIROHI: NAVNEET MOTORS:** CALL: 02972-222917-18, 7665010638. **UDAIPUR: NAVNEET MOTORS**: MADRI: CALL: 0294-2494454, 7230046380. CITY STATION ROAD: CALL: 0294-2415142, 7230046381. **TECHNOY MOTORS**: GOVARDHAN VILLAS: CALL: 0294-2485158, 2485738, 9982666809, 9460402878. **BANSWARA: NAVNEET MOTORS**: CALL: 9414159145, 7665010632, 7412074100. **BHILWARA: LOHIA AUTOMOBILES**: CALL: 01482-264061, 264144, 09799545333, 09950512555. **CHAMPION CARS**: CALL: 01482-267135, 9602892423, 7727863720. **BHARATPUR: TM MOTORS:** CALL: 05644-220970, 226392, 9251423393, 9251423395, 8094000626. **CHITTORGARH: BHATIA & COMPANY**: CALL: 9413316092, 9413316399.

*Offer includes consumer offer, retail support, exchange offer and ISL/Rural offer (wherever applicable) on WagonR (1.2L Petrol & AGS- all variants), Alto (Petrol- all variants except STD), S.Presso (Petrol & AGS- all variants), Vitara Brezza (all variants), Dzire (Petrol & AGS- all variants), Swift (Petrol & AGS- V & Z variants only), Celerio (Petrol- all variants). *Terms & Conditions apply. The terms and conditions are subject to change without any prior notice. All offers are brought to you by Maruti Suzuki dealers only. Offers may vary from variant to variant. All offers shown are valid for limited period & for limited stock only. For more details, please contact your nearest ARENA dealership. Colors shown may vary from actual body colors due to printing on paper. Images used are for illustration purposes only. Maruti Suzuki India Limited reserves the right to discontinue offers without notice. Above offers are valid till 21st January 2022 or till stocks last, whichever is earlier.